मुद्रक :
जी० डी० भरतिया
श्री कृष्ण पब्लिशिंग हाउस प्रेस,
मथुरा।

* श्रीः *

लग्नचन्द्रिकान्तर्गत विषयसूची पत्रम् ।

❀ श्री द्वारकेशो जयतु ❀

संवर्धित चतुर्थ संस्करण की

प्रस्तावना

सर्वतन्त्र स्वतन्त्रान् श्री चतुर्वेदकुलोद्भवान्
विद्यागुरून् गयादत्तान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥
ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाऽशुभम् ।
ज्योतिः शास्त्रं तु यो वेद स त्रिकाल समीक्षते ॥२॥
इति वीरमित्रोदये मिश्रमिश्रः

इस करालकलिकाल मे अदृष्टफल कथन का सच्चा प्रमाणभूत शास्त्र फलित ज्योतिष ही है। फलित ज्योतिष के माहात्म्य को कौन नही जानता, संसार की परिस्थिति इसी के आधार पर है, मनुष्य के शुभाऽशुभ ज्ञान का निर्णय इसी पर निर्भर है, महर्षियो ने इस फलित शास्त्र को बडी घोर कठिन तपस्याओं द्वारा प्राप्त किया है, उन्ही तपस्याओं का सारभूत यह फलित गाढान्धकार में पडी हुई वस्तु को दीपक की भाँति अदृष्ट को सूचित कर समय २ पर मनुष्य को कर्त्तव्याऽकर्तव्य ज्ञानपथ का प्रदर्शन कराता रहता है। इसकी प्रत्यक्षफलदर्शिता ने किसको आश्चर्यान्वित नही किया है. इसका शासन ज्योतिश्चक्रगतिद्वारा ज्योतिर्मय है 'दृष्टे सभवत्यदृष्टकल्पना न न्याय्या, के अनुसार इसका शासन अदृष्टकल्पनामय नही है, जिससे कि नास्तिकवादता को आश्रय मिले। यही तो ज्योतिःशास्त्रकी ज्योतिःशास्त्रता है और इसीलिये इसके शासन ने समस्त भूमंडल मे प्रत्येक के हृदय पर अपना पक्का सिक्का जमा रक्खा है।

फलित के अनेक ग्रन्थ होने पर भी यह लग्नचन्द्रिका ग्रन्थ इतना सरल और उपादेय है कि इस एक के ही कण्ठस्थ

कर लेने से फलित कथन के लिये दूसरे ग्रन्थ की आवश्यकता नही रहती, ग्रन्थकार ने फलित का ऐसा कोई भी विषय बाकी नहीं छोडा है जो कि इसमें न हो। इसी कारण यह सर्व साधारण के लिये बहुत ही उपादेय हो गया है, संज्ञाध्याय षड्वर्गविचार, सौम्यपापग्रहकथन, मित्रशत्रुसमविचार उच्चनीचादिविमर्श, राशिस्वामिकथन, पुरुषराजयोग, स्त्रीराजयोग, अन्यान्यविशेषफल आयुर्विचार, अरिष्टकथन, महादशा, अन्तर, प्रत्यन्तर, आदि २ उत्तमोत्तम उपयोगी विषयों का समावेश बड़ी ही हृदयंगमता से हुआ है जो कि ग्रन्थ के आद्यन्त देखने से ही ज्ञात होगा—

काशिनाथ—

कौन ऐसा सस्कृतज्ञ होगा कि जिसने अमरमूर्ति काशिनाथ का नाम न सुना हो, इनका रचा हुआ एक शीघ्रबोध ही इतना प्रचलित ग्रन्थ है कि प्रत्येक पण्डितों के गले का हार हो रहा है। इनकी सुप्रसिद्धि का अनुमान इसी से लगाया जा सक्ता है कि 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी, आदि पद्य पठितसमुदाय के प्रत्येक मनुष्य से सुना जाता है और कहा जाता है कि यवनराज्यकाल में काशिनाथ ने बाल विवाह की नीति से इस श्लोक को गढकर शीघ्रबोध में रख दिया है, वास्तव में यह श्लोक काशिनाथजी का मनगढन्त नही है यह श्लोक व्यासजी का है। हाँ यह अवश्य माना जा सका है कि उस समय मे दुराचारी यवनलोग अविवाहित हिन्दुबालिकाओ का हठात् अपहरण कर लेते थे, इस कारण शायद काशिनाथजी का उद्धृत किया हुआ यह शीघ्रबोधीय पद्य हिंदुवर्ग का अधिक ध्येय बन गया हो, किन्तु काशिनाथजी का इस पद्य का शीघ्रबोध मे रखना प्रसग वश स्वाभाविक ही था समयानुकूलता से यह उद्देश शनैः २ और भी जोर पकड़ता गया होगा।

हर्ष का विषय है कि अन्य सस्कृत ग्रन्थकारो की भाँति सर्वतन्त्रस्वतन्त्र भटटाचार्य श्री काशिनाथजी मिश्र का जीवनवृत्त

घनान्धकार में छिपा हुआ नही है इन्होने प्रकृत ग्रन्थ के अंत में अपना तथा अपने आश्रय दाता एव ग्रन्थनिर्माणकाल का परिचय दिया है।

यह महानुभाव भक्तवर रणशूर बुन्देलराजमधुकरशाह के आश्रित थे और उन्ही के आश्रय में रहकर इन्होने यह दोनों ग्रन्थ लिखे, इन्ही के पूर्वज भाव (भाऊ) मिश्र ने वैद्यक का अपूर्व ग्रन्थ भावप्रकाश बनाया था, और इन्ही के पूर्वज जयदेव मिश्र ने प्रसन्नराघवनाटक की रचना की थी, वेदांत के प्रसिद्धनाटक 'प्रबोधचन्द्रोदय, के कर्त्ता भी इन्ही के पूर्वज थे, जो चन्देलराज के आश्रित थे। यह कुम्भवार अल्ल के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इन महाशय काशिनाथ ने वै० स० १५६४ में लग्न चन्द्रिका को रचा है इनके पाण्डित्यप्रकर्ष से प्रसन्न होकर बुन्देलराज ने इनको भट्टाचार्य की उपाधि प्रदान की,यह सर्वदेशीय विद्वान् थे, इनके ग्रन्थ प्रामाणिक है। परवर्त्ती आचार्यो ने इनके ग्रन्थो का प्रमाण देकर अपने वाक्यो को प्रमाणित किया है। इनका बनाया हुआ 'शीघ्रबोध' मुहूर्तचिंतामणि से प्राचीन है। होलिकाष्टक के निषेधक पद्य में स्वयं मुहूर्तचिंतामणिकार ने स्वकृत मिताक्षरा में तथा पीयूषधाराकार ने शीघ्रबोधीय, 'शुक्लाष्टमी समारभ्य' पद्य देकर अपने 'विपाशैरावतीतीरे, पद्यको प्रमाणित किया है।

लग्नचन्द्रिका तथा शीघ्रबोध का मङ्गल पद्य एकार्थक है दोनों में भगवान् भास्कर की ही बन्दना की है इसके अतिरिक्त 'मासशुक्रबुधादित्या:' आदि अनेकानेक पद्य दोनों ग्रन्थों में अक्षरश: एकसे हैं। टिप्पणी में हमने यह बात तत्तत्स्थलों पर दिखलाई है। अत:स्पष्ट है कि उक्त दोनों ग्रन्थों के निर्माता एक ही काशिनाथ है भिन्न नही, अन्त में जिन सदयहृदय, महानुभावों ने हस्तलिखित प्राचीन एवं जीवनविषयक पुस्तक तथा पूछने पर पत्र द्वारा उत्तर देकर साहाय्य किया है उनके नाम धन्यवाद पूर्वक प्रकाशित किये जाते है—

१—पं० श्रीनाथजी शर्मा शास्त्री गर्ग, शुद्धाद्वैतालकार,

भू० पू० प्रधानाध्यापक सस्कृत बोधिनी पाठशाला गोकुल ।

२—प्रेमवल्लभ शर्म्मा व्यास आयुर्वेदाचार्य,

अध्यक्ष—'द्वैपायन आयुर्वेदीय औषधालय, मथुरा' ।

३—कवि सार्वभौम साहित्यवागीश स्व० सेठ श्री कन्हैयालालजी

पोद्दार मथुरा ।

४—साहित्यरत्न डा० नारायणदत्तजी शर्मा एम० ए० पी. एच. डी. प्रधानाचार्य—जवाहर इन्टर कालेज मथुरा ।

५—'बुन्देलवैभवग्रन्थमाला कालिपी, के सम्पादक टीकमगढ (झाँसी) निवासी कविरत्न श्री गौरीशकरजी द्विवेदी 'शकर ।

दृष्टिदोष, प्रमाद तथा अक्षर संयोजकों की असावधानी से जो कुछ अशुद्धियाँ रहगई हों विद्वद्वृन्द उन्हे क्षमा करे ।

विदुषां वशवदः—

आचार्य मिश्र परमानन्दशास्त्री, त्रिगुणायक

गौघाट मथुरा ।

॥ श्रीहरिः ॥

* लग्नचन्द्रिका *

मिश्रानन्दिनीनाम भाषा टीका सहिता

॥ ग्रन्थकर्तृमङ्गलाचरणम् ॥

तमिस्रया जगद्ग्रस्तं यो जीवयति भूतले ।
तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ॥१॥

जो भूतल पर अन्धकार से ग्रसे हुए समस्त संसार का पालन करते रहते है। सर्वसाक्षी उन परमानन्द ईश्वर (भगवान भास्कर) को मै प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

॥ टीकाकर्तृमङ्गलाचरणम् ॥

नमन्नृपालावलिमौलियाला—
पतत्परागारुणपादपद्मम् ।
रमासमासादितवामवामम्,
श्रीद्वारकेशं सततन्तमीडे ।१।

चिरञ्जीलालपुत्रेण सान्नाढ्यकुलजन्मना ।
परमानन्दमिश्रेण टीकाऽस्यास्तन्यते मया ।२।
तनुर्धनञ्च भ्राता च सुहृत्पुत्रौ रिपुस्त्रियौ ।
मृत्युश्च धर्मः कर्मायौ व्ययौ भावाःप्रकीर्तिताः

१ तनु, २ धन, ३ भ्राता, ४ सुहृत्, ५ पुत्र, ६ रिपु, ७ स्त्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आयु, १२ व्यय, यह बारह भाव बताये गये हैं ।। २ ।।

❀ विषमोऽथ समः पुंस्त्री क्रूरःसौम्यश्च नामतः
चरःस्थिरो द्विस्वभावो मेषाद्या राशयः क्रमात् ।३।

मेष आदि राशियों की विषम, सम तथा पुरुष, स्त्री, और क्रूर, सौम्य, एवं चर, स्थिर, द्विस्वभाव ये सज्ञायें क्रमशः होती है । ३ ।।

---

१२ राशि और उनके स्वामी

❀मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ।
तुला च वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ।। १ ।।
मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्काधीशस्तु चन्द्रमाः ।। २ ।।
धनुर्मीनाधिपो जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो राश्यधीशा इमे स्मृताः ।। ३ ।।

विषमादिसंज्ञानांस्पष्टज्ञानार्थंचक्रम्

मेष तुला	बृष वृश्चिक	मिथुन धन	कर्क मकर	सिह कुम्भ	कन्या मीन	राशि
विषम	सम	विषम	सम	विश्र म	स्त्री	विषमादि संज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	सम	पुरुष स्त्री सज्ञा
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूरसौम्य संज्ञा
चर	स्थिर	द्वि०	चर	स्थिर	द्वि०	चरादि संज्ञा

❀ दुश्चिक्यं स्यात्तृतीये च चतुर्थे सुखसञ्ज्ञ च।
वन्धुसंज्ञं च पातालं हिबुकं पञ्चमे च धीः ॥४॥

जन्म लग्न से तीसरे स्थान की दुश्चिक्य संज्ञा तथा चतुर्थ स्थान की सुख, वन्धु,पाताल, हिबुक सज्ञा जाननी और पञ्चम स्थान की धी संज्ञा होती है ॥ ४ ॥

टि० ❀लग्नादिद्वादशभावानां सज्ञान्तराण्याह जातकालङ्कारे-
लग्नं मूर्तिस्तथाङ्गं तनुरुदयवपुः कल्पमाद्यं तत.स्वं,
कोशार्थाख्यं कुटुम्ब धनमथ सहज भ्रातृदुश्चिक्यसंज्ञम्।

द्यूनं द्युनमथास्तं च जामित्र सप्तमे स्मृतम् ।
दशमे त्वम्बरं मध्यं छिद्रं स्यादष्टमे गृहे ॥५॥

द्यून, द्युन, अस्त, तथा जामित्र ये चार नाम सप्तम स्थान के है, अम्बर, मध्य यह दो नाम दशम स्थान के है, छिद्र नान अष्टम स्थ न का है ॥ ५ ॥

अम्बा पातालतुर्यं हिबुकगृहसुहृद्वाहन यानसञ्ज्ञम्,
बन्धत्राख्यंत्राम्बुनीरजलमथ तनय बुद्धिविद्यात्मजाख्यम् ॥१॥
वाक्स्थानपञ्चमं स्यात्तनुजमथ रिपुद्वेषिवैरिक्षताख्यम्,
षष्ठ जामित्रमस्तं स्मरमदनमदद्यूनकामाभिधानम् ।
रन्ध्रायुश्छिद्रयाम्यं निधनलयपदचाष्टम मृत्युरन्यद्,
गुर्बाख्य धर्मसञ्ज्ञं नवममिहशुभंस्यात्तपोमार्गसञ्ज्ञम् ॥२॥
तातात्ज्ञामानकर्मास्पदगगननभोव्योममेषूरणाख्यम्,
मध्यं व्यापारमूचुर्दशममथ भव चागम प्राप्तिमायम्
इत्थ प्रान्त्यान्तिमाख्यं मुनय इह ततो द्वादशं रिष्फमाहु-
र्ग्राह्यं बुद्ध्या प्रवीणैर्यदधिकममुतः सञ्ज्ञया तस्य तच्च ॥३॥

लग्नादि द्वादश भावों के नामान्तर बताते हैं—

अर्थ—लग्न,मूर्ति,अङ्ग,तनु,उदय,वपु,कल्प और आद्य ये आठ नाम लग्न के है। स्व,कोश,अर्थ,कुटुम्ब,धन ये पाँच नाम धन भाव के है,सहज, भ्रातृ,दुश्चिक्य ये ३ नाम सहज भावके है। अम्बा,पाताल,तुर्य,हिबुक,गृह सुहृद्,वाहन,यान,बन्धु,अम्बु,नीर,जल ये बारह नाम चतुर्थभाव के हैं। तनय,बुद्धि,विद्या,आत्मज,वाक्, पञ्चम,तनुज ये सात नाम पंचम भाव के है। रिपु,द्वेषी, बैरी,क्षत ये चार नाम षष्ठभाव के है। और जामित्र, अस्त,स्मर,मदन,मद, द्यून,काम ये ७ नाम सप्तम भाव के है। रन्ध्र,आयु, छिद्र,याम्य,निधन,लयपद,अष्टम, मृत्यु ये ८ नाम अष्टमभाव के है। गुरु

एकादशे भवेल्लाभः सर्वतोभद्र एव च ।
द्वादशे च गृहे रिष्फं त्रिकोणं नवपंचमे ॥६॥

एकादश स्थान की सज्ञा लाभ तथा सर्वतोभद्र है, द्वादश भाव की रिप्फ संज्ञा है, तथा नवम पञ्चम स्थान की त्रिकोण सज्ञा है ॥ ६ ॥

त्रिलाभदशमारीणां भवेदुपचयाख्यकम् ।
चतुर्थाष्टमयोः संज्ञा चतुरस्रं स्मृता बुधैः ॥७॥

तृतीय, एकादश, दशम और पष्ठ इन चार स्थानो का नाम उपचय है और चतुर्थ अष्टम स्थान की सज्ञा विद्वानो ने चतुरस्र कही है ॥७।

केन्द्रचतुष्टयकंटकसंज्ञा आद्यचतुर्थसप्तदशमानाम् ।
परतःपणफरमापोक्लिमं च वेद्यं यथाक्रमतः ।८।

प्रथम चतुर्थ, सप्तम, दशम इन चार भवनों की केन्द्र, चतुष्टय तथ. कण्टक सज्ञा है, इनसे पर स्थान द्वितीय, पचम, अष्टम एथा एकादश इन चार भवनो की पणफर संज्ञा है, तथा इनसे आगे के स्थान तीसरे छठे नवे की आपोल्किम संज्ञा जाननी । ८ ॥

धर्म,शुभ,तप,मार्ग ये ५ नाम नवम भाव के है। तात,आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद,गगन,नभस्,व्योम,मेषूरण,मध्य और व्यापार ये ११ नाम दशम भाव के है। तथा आगम,प्राप्ति,आय ये ३ नाम एकादश भावके है। प्रांत्य, अंतिम,रिष्फ ये तीन नाम द्वादश भाव के है। इसके अतिरिक्त इन भावों की संज्ञा और भी अपनी बुद्धिसे विद्वान् लोग विचारले यथा-धन पर्यायवाचक द्रविणआदिसब नाम द्वितीयके जानने,पुत्रबुद्धि विद्यार्थकशब्द पंचम भाव के होंगे, जैसे मति, धिषणा, मनीवा,सूनु, सुत आदि आदि ॥१॥२॥३॥

वर्गोत्तम, नवांश ।

वर्गोत्तमा नवांशा—
श्चरादिषु प्रथममध्यान्त्याः ।
होरा विषमेऽर्केन्द्वोः
समराशौ चन्द्रसूर्ययोः क्रमशः ॥६॥

"स्वस्वो नवांशको भानां स वर्गोत्तम उच्यते" राशियों का अपना अपना जो नवांश होता है वही वर्गोत्तम कहाता है, अर्थात् जो राशि हो उसमें उसी का नवांश वर्गोत्तम होता है, जैसे मेष मे मेष नवांशक, बृष में वृष नवांशक वर्गोत्तम है । इसी प्रकार सब राशियों का अपना अपना नवांश वर्गोत्तम जानना, चर आदि राशियों का क्रमशः पहला, पाँचवां, नवाँ वर्गोत्तम जानना चाहिये अर्थात् चर राशि (मेष, कर्क, तुला मकर) का पहिला, स्थिर राशि (वृष, सिह, वृश्चिक, कुम्भ) का पाँचवाँ तथा द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धन, मीन) का नौमा नवांश वर्गोत्तम होता है । तदुक्तं वराहमिहिरेण "वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्यपर्यन्ततः शुभफला नवभागसंज्ञा." अब नवांशक की गणना किस प्रकार की जाती है वह बतलाया जाता है ।

"नवांशकाश्चरे तस्मात्स्थिरे तन्नवमादितः ।
उभये तत्पंचमादेरिति बोध्यं बिचक्षणैः"

नवांशक को देखना हो तो चर राशि मे उसी राशि से गिने, स्थिर राशि में उससे नवम राशि से गिने, द्विस्वभाव मे उससे

पञ्चम राशि से गिनना चाहिये । सूर्य के ३० अंश होते है। इन्ही तीस अशों को ९ जगह बॉट देने को नवांश कहते हैं अर्थात् राशि के नवे भाग को नवांश कहते है, उसका हिसाब यह है और इस प्रकार बॉटा जाता है कि—तीन । बीस (१) छः । चालीस (२) दश । पूर्ण० (३) तेरह । बीस (४) सोलह । चालीस (५) बीस । पूर्ण० (६) तेईस । बीस (७) छब्बीस । चालीस (८) तीस । पूर्ण० (९) पहिले इष्ट निकाल कर लग्न निकालो [इष्ट तथा लग्न निकालने की विधि आगे बतावेगे] और फिर जिस लग्न मे जिस राशि का नवांशक निकालना हो तो पहिले देखिये कि उस राशि (लग्न) के कितने अश है और ऊपर जो अश बताये है उनमे से लग्न किसके भीतर है फिर जो लग्न जिससे गिनी जाती है उससे उतने ही नवांशक तक गिनने पर नवांशक मालूम पड़ जायगा, जैसे मेष लग्न है और वह मेष राशि ३ अश २० कला के भीतर है तो मेष का ही नवांश होगा क्योंकि मेप मे मेष से ही नवांशक की गणना होती है और अगर वही मेष ६ अश ४० कला के भीतर है तो वृष का नवांशक होगा और जिस राशि का नवाशक है उसी राशि के स्वामी को नवमांशेश कहते है।

उदाहरण।

जैसे वृष के २० अंश हैं तो यह बीस अंश नवांशक के छटे चरण पर पूरे होते है और वृष के नवाशक मे मकर से गिनती की जाती है तो मकर से गिनने पर छटी मिथुन हुई तो समझ लीजिये कि वृप मे मिथुन का नवांशक हुआ और इसका स्वामी बुध है तो वृष लग्न मे नवमांशेश बुध हुआ । दूसरा उदाहरण लीजिये जैसे कि—तुला के २६ अश है और यह

२६ अंश नवांशक के ८ वे चरण पर पूरे होते है और तुला के नवांशक मे तुला के चर राशि होने से तुला से ही गणना होती है तो तुला से गिनने पर ८ वीं वृष हुई तो तुला लग्न मे वृष का नवांशक हुआ और वृष का स्वामी शुक्र है तो तुला मे नवमांशेश शुक्र हुआ इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये ।

॥ नवांशक चक्रम् ॥

मे० सिं० ध०		वृष,क०,मकर		मि० तु० कु०		कर्क,वृ० मी०	
मेष	३।२०	मकर	३।२०	तुला	३।२०	क०	३।२०
वृष	६।४०	कुम्भ	७।४०	वृश्चिक	६।४०	सिंह	६।४०
मिथुन	१०।०	मीन	१०।०	धन	१०।०	कन्या	१०।०
कर्क	१३।२०	मेष	१३।२०	मकर	१३।२०	तुला	१३।२०
सिंह	१६।४०	वृष	१६।४०	कुम्भ	१६।४०	वृ०	१६।६०
कन्या	२०।०	मिथुन	२०।०	मीन	२०।०	धन	२०।०
तुला	२३।२०	कर्क	२३।२०	मेष	२३।२०	मकर	२३।२०
वृ०	२६।४०	सिंह	२६।४०	वृष	२६।४०	कुम्भ	२७।४०
धन	३०।०	कन्या	३०।०	मिथुन	३०।०	मीन	३०।०

॥ होरा ॥

होरा विषमेऽर्केन्द्वोरिति—होरा किसे कहते है यह यो समझना चाहिये कि—

'होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके,
वांछन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् ।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि,
यत्तस्य पक्तिं समभिव्यनक्ति ॥,, व० मि०

अहोरात्र के विकल्प को होरा कहते है, अहोरात्र शब्द मे प्रथमाक्षर अकार और अन्तिम अक्षर त्र का लोप करने से होरा शब्द माना है । पूर्व जन्म मे कर्मार्जित सदसत्फलो से परिपाक को होरा प्रकट करता है, अहोरात्र शब्द से होरा शब्द निष्पन्न करने का भाव यह है कि समस्त शुभाशुभ फल ज्योतिष शास्त्र मे लग्न पर निर्भर है और लग्न समय से पहचानी जाती है और समय अहोरात्र (दिन रात्रि) के मान को कहते है, मेषादि बारह राशि पूर्ण होने पर दिन रात्रि होता है । इसलिये अहोरात्र से होरा शब्द सिद्ध किया है । सदसत्फल के जानने के कारण ज्योतिष शास्त्र मे ग्रह विचार कहा गया है इसी कारण होरा मे तदर्थानुकूलता से सूर्य चन्द्र (दिनकर, रात्रिकर) ग्रह ही प्रधान माने गये है ।

"राशेरर्ध भवेद्धोरा—राशि के अर्धदल को होरा कहते है । प्रत्येक राशि मे दो होरा होते है सम राशि वृष, कर्क कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन—मे प्रथम १५ अश तक चन्द्रमा का होरा होता है, तदनन्तर १६ अश से ३० अश तक सूर्य का होरा होता है और विषम, मेष, मिथुन, सिंह तुला, धन और कुम्भ राशियो मे प्रथम १५ अश तक सूर्य का बाद १६ अंश से ३० अंश तक चन्द्रमा का होता है, प्रत्येक राशि तीस अश की होती ही है ।

"समगृहमध्ये शशिरविहोरा ।
विषमभमध्ये रविशशिनोः सा,, इति ॥

।। होराज्ञानार्थं चक्रम् ।।

अंश.	मे	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु	मी.
१ से १५ तक	सू.	च.	सू.	चं.	सू.	च.	सू.	च	सू.	च.	सू	चं
१६ से ३० तक	च.	सू.	चं.	सू	चं.	सू.	चं.	सू.	च	सू.	चं.	सू.

*स्वगृहाद् द्वादशभावा,

द्रेष्काणाःप्रथमपंचनवपानाम् (१०)

।। द्वादशांश ।।

प्रत्येक राशि ३० अंश की होती ही है । एक राशि के ३ अंश का द्वादशांश (बारहवाँ भाग) २ अंश ३० कला का होता है, द्वादशांश राशि के बारहवे भाग को कहते है, इस तरह प्रत्येक राशियों मे ढाई अंशों के विभाग से बारह द्वादशांश होते है । बारह भाग (हिस्सा) करने पर एक हिस्सा २ अंश ३० कला का होता है जैसे मेष राषि में ढाई अंश (२ अंश ३० कला) तक मेष का, इसके (२ अंश ३० कला के) बाद ५।० अंश तक वृष का, पाँच अंश के बाद ७।। अर्थात् ७ अंश ३० कला तक मिथुन का द्वादशांश होता है इसकी गणना

* ल० चं व्व० पु० स्वगृहाद् द्वादशभागाः इति पाठान्तरमवलोक्यते ।

जिस राशि मे देखना हो उसी से करनी जैसे मेष के द्वादशाश की गणना मेष से ही मीनान्त करनी और वृषद्वादशाशो की गणना वृष से ही क्रमशः करनी जो कि वृष से करने पर वृष के द्वादशांश मेष पर्यन्त समाप्त होगे, इनके अधिपति ग्रह भी जिस जिस राशि के जो अधिपति है वे ही ग्रह द्वादशांश के अधिपति है, यथा मेष द्वादशांश के पहिले द्वादशाश का भौम, मेष के द्वितीय द्वादशाश वृष का अधिपति शुक्र, तथा मेष के तृतीय द्वादशाश मिथुन का अधिपति बुध, इसी प्रकार सर्वत्र द्वादशाशेश जानना तदुक्तमन्यत्र—"द्वादशाशस्य गणनां तत्क्षेत्रात्तु विनिर्दिशेत्" इति।

स्पष्ट-ज्ञानार्थं द्वादशांशचक्रम्।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशीश द्वादशाशेप	भौ	शु	बु	च	सू	बु	शु	भौ	गु	श	श	गु
अंश	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०
कला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

द्रेष्काण।

द्रेष्काण का प्रमाण १० अंश का होता है। इस प्रकार एक राशि मे दश दश अंश के हिसाब से तीन द्रेष्काण होते हैं, इसमे राशि के ३० अंशो के दश दश के हिसाब से ३ भा

किये जाते है। अर्थात् राशि के १ अंश से १० अश तक पहिला ११ से २० अश तक दूसरा, २१ से ३० अश तक तीसरा द्रेष्काण । उसमे पहिले द्रेष्काण अर्थात् १० अंश तक अपनी ही राशि के स्वामी का, दूसरा, द्रेष्काण (२० अश तक) उस राशि से पाँचवी राशि के स्वामी का तथा तीसरा द्रेष्काण (३० अंश तक) उस राशि से नवम राशि के स्वामी का होता है, अर्थात् मेष मे पहिला द्रेष्काण दशांश तक भौम का, दूसरा २० अश तक सूर्य (मेष से पाँचवी राशि सिंहाधिपति) का, तृतीय द्रेष्काण ३० अश तक गुरु (मेष से नवी राशि धनुषपति) का इसी प्रकार वृषादि राशियो का जानना चाहिये। तदुक्तमन्यत्रापि—

"द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्यच।
द्रेष्काणस्त्र तृतीयस्तु, लग्नान्नवमराशिपः ॥

स्पष्टावबोधार्थं द्रेष्काणचक्रम् ।

अश	मे०	वृ०	मि	क	सि.	क	तु०	वृ०	ध	म०	कु	मी
१०	म० मे०	शु वृष	बु मि	च क.	सू सिं	बु क	शु तु	म वृ	गु ध	श म	श कु	गु मी
२०	सू० सि	चु क.	शु तु	म वृ०	गु ध	श म.	श कु	गु मी	मं मेष	शु वृष	बु० मि	चं क
३०	गु ध.	श म.	श कु	गु मी	म मे	शु वृष	बु मि	चं क	सू सिं	बु. क	शु तु	म वृ०

सस्वामिक द्रेष्काणराशि:

मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपावला ज्ञेयाः
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसाऽन्येह्युभयतो मीनः

धन तथा मकर के सहित–मेष, वृष, मिथुन, कर्क यह छ राशि रात्रि वली है, और इनसे अन्य सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन यह छ. राशि दिवावली है, और जो राशि रात्रि वली हैं उनमे से मिथुन को छोडकर बाकी की राशि (मेष, वृप, कर्क, धन, मकर) पृष्ठोदय है अर्थात् इनका उदय पीठ से होता है, तथा अवशिष्ट मिथुन, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, कुम्भ, राशि शीर्षोदय हैं अर्थात् इनका उदय शिर से होता है और मीन शीर्षोदय पृष्ठोदय दोनो है ।। १० ।।

इस लग्नचन्द्रिका नामक ग्रन्थ मे ग्रन्थकर्ता ने नवांश तथा द्वादशांश का नवम तथा दशम पद्य मे सूक्ष्म रीति से वर्णन किया है परन्तु हम छात्रो के ज्ञान के लिये षड्वर्ग का विस्तार पूर्वक विवरण करते हुए त्रिंशांश का भी विवरण आगे लिखते है ।

षड्वर्ग ।

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः
त्रिंशांशश्चेति षड् वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः

गृह (क्षेत्र) होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिशांश यह छः षड्वर्ग कहाते हैं। इस षड्वर्ग के द्वारा ही ग्रहों का बल देखा जाता है अर्थात् कोई ग्रह अपने क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवांश द्वादशांश, त्रिशांश मे होवे या सौम्य (शुभ) ग्रहो के षड्वर्ग मे हो तो बली होता है परन्तु सौम्य ग्रहो मे भी मित्र शत्रु का विचार अवश्य करना उचित है क्योंकि नीच राशि, शत्रुक्षेत्री तथा शत्रु वा पाप ग्रहो के षड्वर्ग मे ग्रह के होने से ग्रह निर्बल हो जाता है, और उच्चराशि, मित्रक्षेत्री, वा मित्र के षड्वर्ग मे होने से ग्रह बली होता है। तथा चोक्त नीलकण्ठेन—

स्वोच्चमित्रशुभैः श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः

त्रिंशांश ।

कुजयमजीवज्ञसिताः पञ्चे ५ न्द्रिय ५ वसु ८ मुनी ७ न्द्रियां ५ शानाम् । विषमेषु समर्क्षेषू त्क्रमेण त्रिंशांशकाः कल्प्याः

मेष आदि विषम, (मे० मि० सिं० तु० ध० कु०) राशियो के ३० अंशो मे से पहले ५ अंश तक भौम का, बाद ५ अंश तक शनि का, तदनन्तर ८ अंश तक गुरु का ततः ७ अंश तक बुध का, तदुपरि ५ अंश तक शुक्र का त्रिंशांश जानना चाहिये और सम राशियो (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) के तीस अंशो मे से प्रथम ५ अंश तक शुक्र का, ततः ७ अंश तक बुध का, फिर ८ अंश तक गुरु का इसके आगे ५ अंश तक शनि का, इसके बाद ५ अंश तक भौम का त्रिंशांश समझना चाहिये ।

॥ स्पष्टज्ञानार्थं त्रिंशांशचक्रम् ॥

विषमराशिषु ।

५	५	८	७	५	एतेषामंशानाम्
म	श	गु	बु	शु	एते स्वामिनः

समराशिषु ।

५	७	८	५	५	एतेषामंशानाम्
शु	बु	गु	श	म	एतेऽधिपतिग्रहा

त्रिंशांश का भाव यह है कि—विषम राशियों में अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ में पहिले ५ अंश तक मङ्गल का (यानी मेष का) फिर ६ अंश से ५ यानी १० तक शनि का तत. ११ से ८ यानी १८ तक गुरु का इसके आगे १९ से ७ यानी २५ अंश तक बुध का, पुनः २६ अंश से ५ यानी ३० तक शुक्र का जानना, इसी तरह सम अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन राशियों में पहिले पांच अंश तक

शुक्र का तत. ६ से ७ अर्थात् बारह अश तक बुध का, तद-नन्तर १३ से ८ यानी २० तक गुरु का, ततः २१ से ५ तक गिनने पर यानी २५ तक शनि का, तदनन्तर २६ से ५ तक गिनने पर अर्थात् ३० अश तक मगल का त्रिशाश होगा। चक्र मे ऊपर सब स्पष्ट है।

त्रिंशांश में विशेष द्रष्टव्य ।

गुरु के त्रिशाश मे जब ग्रह आवेगा तो गुरु की दो राशि होती हैं धन और मीन तो ऐसी स्थिति मे त्रिशाश मे ग्रह को किस राशि मे रक्खा जायगा उसके लिये यह समझना चाहिये कि विषम राशि मे अगर यह ग्रह स्थित हो तो गुरु की विषम धन राशि है उसमे ग्रह स्थापित करो, और अगर सम राशि मे वह ग्रह हो तो गुरु की सम राशि मीन मे ग्रह स्थापित करो। इसी प्रकार राशिद्वयाधिप अन्य ग्रहों की भी सम विषम राशि पर ग्रह स्थापन करने का निश्चय करे।

अब प्रसङ्ग वश इष्ट तथा लग्न निकालना बताते हैं उसके प्रथम समय जानने का प्रकार बतलाते है—

प्रथम समय का ही निश्चय करना हैं जब समय निश्चित हो जाता है तो इष्ट निकालना भी सुगम है। अत· प्रथम समय निकालने का प्रमाण बतलाते है कि जो बालक ६ मास का होय उसके सोते समय की श्वाँसो को गिने, उसकी ६ श्वाँस का एक पल होता है, अर्थात् उसकी ६ श्वाँस जितने समय तक चलें उस समय को एक पल कहते है और ६ पल का एक क्षण होता है। और १० क्षण [६० पल] की एक घड़ी होती है जिसे कला तथा दण्ड भी कहते है और पलो को विकला कहते है।

और दो घडी का एक मुहूर्त होता है 'मुहूर्तो घटिका द्वयम्'। ३० मुहूर्त (६० घडी) का एक अहोरात्र (दिन रात) होता है,यह प्रमाण ज्योतिष शास्त्रानुसार बतलाया गया है जो कि ज्योतिषियो को सर्वथा उपयोगी है इसमे आगे अब अग्रेजी समय बताते है जो कि इस समय सयुक्त प्रान्त मे माना जाता है।

ढाई विपल का एक सेकेण्ड तथा ६० सेकेण्ड का एक मिनट, और ६० मिनट का एक घण्टा और २ घण्टा का एक दिन (दिन रात्रि) होता है। और ढाई पल को एक मिनट ढाई घडी का एक घण्टा, ६० घडी (२४ घण्टा) का एक दिन रात्रि होता है, २४ मिनट की एक घडी होती है और १२ मिनट की आधी घडी होती है।

घण्टा मिनट से घडी पल बनाना—घण्टाओ को ५ से गुणाकर २ का भाग देने से घडी होती है ऐसे ही मिनटो को ५ से गुणाकर २ का भाग देने से पल बन जाते है।

घडी पलो से, घण्टा मिनट बनाना—जैसे घडी को दो से गुणा कर ५ का भाग देने से घण्टा और पलो को २ से गुणा कर ५ का भाग देने से मिनट हो जाते हैं।

घण्टा मिनट पर से इष्टकाल बनाने का प्रकार—एक तो दिनार्द्ध मे इष्ट बनाया जाता है. दूसरा प्रकार रात्र्यर्ध से इष्टकाल बनाने का है सो कहते हैं। दिन मे १२ बजे से अर्थात् मध्यान्ह से पूर्व का जन्म होय तो उसमे जितने घण्टा, मिनट गत हुए हो उनके घडी पल, बनाकर उसमे गतरात्र्यर्ध को घटा कर शेष इष्ट काल हो जाता है, यदि दिन मे १२ बजे के बाद मे लेकर रात्रि के १२ बजे तक किसी भी समय मे जन्म होय तो रात्रि के १२ बजे तक के घण्टा मिनटो के घडी पल बनाकर दिनार्द्ध मे जोड देने से इष्टकाल होता है। और यदि रात्रि मे १२ के उपरान्त जन्म होय तब १२ बजे के बाद सूर्योदय से पहले तक जो घण्टा मिनट होंय उनकी घडी पल

बनाकर मिश्रमान (दिनमान में रात्रि का आधा जोड़ देने से मिश्रमान होता है) मे जोडने से इष्टकाल बनता है ।

उदाहरण–

जैसे मथुरा के प्रसिद्ध सर्राफ सेठ सुनियामलजी गोयल अग्रवाल के यहां पुत्रजन्म माघ शुक्ला ४ शुक्रवार को सुबह के ८ बजकर १० मिनट पर हो तो पूर्वोक्त रीत्यनुसार ८ घण्टा १० मिनट के घडी पल २०–२५ इनमे गतरात्र्यर्द्ध १६–२४ को घटाया तो शेप ४–१ बस यही इष्टकाल हुआ ।

यदि रात्रि मे १२ बजे के उपरान्त ३ बजकर १० मिनट पर किसी का जन्म है तब ३ घण्टा १० मिनट के घड़ी पल ७–५५ हुये इनमे मिश्रमान (दिनमान २७–१२ रात्र्यर्द्ध १६–२४ योग) ४३–३६ को जोड़ दिया जाय तब ५१–३१ बस यह दूसरा इष्टकाल जानना चाहिये । सब इसी प्रकार समझले इसमे इष्ट निकालने के लिये कितने ही प्रकार सुगम रीति से आगे बताये हैं देखिये–

द्वितीय प्रकार से इष्ट निकालने की विधि ।

इसमे पहले जिस दिन का इष्ट निकालना है उसी दिन के पंचाग स्थित दिनमान का आधा करे अर्थात् घड़ी तथा पलो को पृथक् २ आधा करे यह मध्यान्ह (१२ बजे दिन) का इष्ट हुआ, बारह बजे से पूर्व का इष्ट निकालना हो तो जितनी घड़ी पल मध्यान्ह से पूर्व हों उन घड़ियों को मध्यान्ह (दिनार्द्ध) की घड़ी पलो मे से घटाओ । यदि मध्यान्ह पीछे का हो तो जितनी घड़ी पीछे हों उनको मध्यान्ह (दिनार्द्ध) की घड़ी पलों में जोड़ दो बस यह इष्ट निकल आवेगा । जब तक दूसरे दिन सूर्य नही उदय होगा तब तक उसी दिनमान से इष्ट निकालना चाहिये, उदय होने के पश्चात् दूसरे दिन का दिनमान लेना चाहिये ।

उदाहरण–

जैसे कोई दानवीर सज्जन मार्गशीर्ष, कृष्णा ५ सोमवार दिन के १०॥ बजे सस्कृत के किसी छात्र को पुस्तक प्रदान करें तो देखना चाहिये कि इस दिन दिनमान २५ घडी ३० पल है इसको आधा किया तो १२ घडी ४५ पल हुए। यह ठीक बारह बजे का इष्ट है हमारा इष्ट इससे ३ घडी ४५ पल पूर्व है तो १२–४५ मे से ३–४५ को घटाया तब ९–० यह इष्ट निकल आया बस इसी तरह दिन के २॥ बजे का इष्ट निकालना है तो अर्द्ध दिन मास से इष्ट ६–१५ बाद का है तो इसको १२–४२ मे जोड दिया, तब १९–० यह इष्ट निकला। इसी तरह दूसरे दिन सूर्य उदय न होवे तब जोड़ते जाओ, बस वह ही इष्ट होजायगा।

लग्न साधनम्

अब लग्न बनाना कहते हैं पूव कथनानुसार इष्ट निकाल घडियो को स्थापित करे और पचाङ्ग देखे कि उस दिन सूर्य राशि के कितने अश हैं बस सारिणी मे उस राशि के उतने ही अश के नीचे कोष्ठक में जो अक हो उनको और इष्ट को जोड दे फिर उसको सारिणी मे देखे जिस कोष्टक मे वह अक मिलें उसी के सामने वाली राशि होगी और उसके ऊपर अंश होगे।

उदाहरण–

जैसे पूर्वोक्तइष्ट १९–घ० पल, पचाङ्ग मे उस दिन सूय राशि ६ के ६ अश हैं लग्न सारिणी मे ६ राशि के सामने और ६ अंक के नीचे अंश ३५ घ. ४१ पल हैं इनको इष्ट में जोड़ दिया ३५ घ ४१ प १९–०इष्ट घड़ी, योगफल ५४–४१ उसी सारिणी में ये अंक ९ राशि के सामने और २३ अश के नीचे मिला। बस यह ही लग्न है अर्थात् मकर लग्न के २३ अश हैं। इस प्रकार सर्वदा लग्न निकालना चाहिये। यह इष्ट तथा लग्न निकालने का प्रकार स्थूल रीति से कहा है।

सर्वोऽति सुगम तृतीय प्रकार

१—सूर्योदय से लेकर दिन के बारह बजे के भीतर जन्म हो तो उन जन्म समय के घण्टा मिनटो मे से सूर्योदय के घण्टा मिनटो को घटा ले शेष को ढाई गुणा करने से जो घड़ी पल आवें वही जन्म काल का इष्ट है ।

२—दिन के बारह बजे से लेकर रात्रि के १२ बजे तक जन्म हो तो उन्ही जन्म समय के घण्टा मिनटो की घड़ी पलो को दिनार्द्ध की घडी पलो मे जोड़ देने से इष्ट काल होता है ।

यदि रात्रि के १२ बजे के बाद सूर्योदय के भीतर जन्म हो तो उन जन्म समय के घण्टा मिनटो मे १२ घण्टा जोडकर और उन सब घण्टा मिनटो की घडी पल बनाकर उन घडी पलो मे दिनार्द्ध की घडी पलो को जोड़ देने से जो घड़ी पल होती है वही इष्ट काल होता है ।

उदाहरण ।

मान लीजिये कि—जैसे कोई दानवीर सज्जन संस्कृत के किसी के किसी छात्र को छात्र वृत्ति (वजीफा) देने के लिये वैशाख सुदी १५ पूर्णिमा गुरुवार स० २००६ ई० को मध्यान्ह के पूर्व ११ बजकर २३ मिनट पर सकल्प करेगे तो उस समय क्या इष्ट होगा और क्या लग्न होगी । इसके लिये देखना चाहिये कि उस दिन सूर्योदय ५ बजकर २३ मिनट पर है इसको ११—२३ मे से घटाया तो शेष रहा ६—० इनको ढाई गुणा किया छः ढाम १५ मिनट कुछ अवशिष्ट नही रही हैं । अतः इष्ट रहा १५—० इसकी लग्न भी पूर्वोक्त लग्न निकालने की विधि के अनुसार निकाल लो ।

न० २ और ३ के उदाहरण भी उनमें कही हुई क्रिया के अनुसार जानने चाहियें ।

मन्निर्मितंसार्धपद्यम् तथाहि स्थूलमानेन लग्नमाने-

यद्राशिसंक्रान्ति रहस्करस्य,
तदेव भानोरुदये हि लग्नम्।
मध्याह्नकालस्तु ततश्चतुर्थे,
सायं ततोऽस्ते दशमे निशीथः ॥ १ ॥

"यल्लग्नेऽभ्युदयं याति ततोऽस्तं याति सप्तमे"

नामराशि और नामनक्षत्रों के विषय में विशेषज्ञातव्य-

कुछ सयुक्ताक्षर वाले ऐसे नाम होते है जिनकी राशि और नक्षत्र जानना साधारण व्याकरणानभिज्ञ ज्योतिषियो के लिये कठिन हो जाता है अत· इसके ज्ञान के लिए हम इस विषय को यहाँ स्पष्ट करते हैं। जिस नाम के आदि मे सयुक्ताक्षर हो उसका आदि वर्ण ग्रहण करके ही राशि विचार करना चाहिये जैसे- श्रीधर, कृष्णचन्द्र, ज्ञानसागर, क्षेत्रपाल इनमे क्रमशः श, क, ज और क आदि के अक्षर है। प्रेमदत्त नाम मे 'पे' के ग्रहण होने से चित्रा नक्षत्र और प्रियदत्त नाम मे 'पि' के ग्रहण से उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र होगा। द्रुपद मे 'दु' के ग्रहण होने से उत्तरा-भाद्रपद और द्रौपदी मे 'दो' के ग्रहण होने से रेवती नक्षत्र है। नक्षत्र मानने मे ज्योतिष और स्वरशास्त्र मे स्वर सहित आदि अक्षर का ही प्राधान्य माना गया है। जैसे-द्रु-(द् र् उ) पद नाम मे व्यवहित मध्य हल् अक्षर 'र' को छोड दिया गया है। ऋणमोचन नाम के आदि मे ऋकार स्वर होने के कारण आदि 'र' मानना चाहिये। अ, इ, उ, ए, ओ इन पांच स्वरो से ज्योतिष शास्त्र के

नियमानुसार इनके सवर्णी दीर्घ आ, ई, ऊ, ऐ और औ का भी ग्रहण हो जाता है।

इसी तरह—द्रौपदी, प्रियकान्त, प्रेमदत्त, क्षेत्रपाल आदि नामो मे भी व्यवहित मध्य हल् अक्षर को छोड़कर स्वर सहित आद्यक्षर से ही नक्षत्र माननीय होगा।

शान्तिदेवी मे तालव्य श को दन्त्य स मानना चाहिये शसयो. तथा बवयोः सावर्ण्यात्।

द्वारकाप्रसाद मे दकार मानना चाहिये अतः इसकी राशि कुम्भ और नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद होगा।

ग्वालियर रियासत के कुछ अनभिज्ञ दुराग्रही मिसुर लोग 'दुवारिका, शब्द मानकर मूर्खता वश इसकी मीन राशि तथा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र मानते है यह उनकी भारी भूल ही है। यह सब विषय 'मार्तण्डवल्लभा, तथा स्वरशास्त्र मे स्पष्ट है।

कुछ लोग यमुना प्रसाद, युगलकिशोर, नाम मे जमुना० और जुगल० बोलकर जकार मानते है। यह भी भारी भूल ही है यमुना और युगल आदि मे वस्तुत. यकार ही है 'जातिशब्द की तरह जकारादि नाम नही है, य की जगह पर पूर्वीयो की तरह 'ज, तो अपभ्रंश से बोलने मे ही है।

ङ, ञ, ण अक्षरो पर जन्म होने पर जातक के नाम करण का निर्णय।

यह स्पष्ट है कि—ङ, ञ, ण तीन अक्षर आदि मे जिसके हो ऐसा नाम आज तक कही भी किसी का नही सुना गया है। तब फिर शत पद चक्रानुसार यदि ङ, ञ, ण. इन तीन वर्णों मे से ही कोई एक वर्ण जातक के जन्म नक्षत्र का चरण आ पडे तो ऐसी स्थिति मे उस जातक का क्या नाम रखना चाहिये। इसके लिये हम अपने पूज्यपाद प्रात स्मरणीय स्वर्गीय

म. म. वेदवेदान्ताचार्य प० श्रीचिरञ्जीलाल मिश्रत्रिगुणायक का बताया हुआ प्राचीनाचार्य परम्परा प्रचलित एक प्रामाणिक पद्य लिखते हैं—वह यह है कि—

नामादौ नावलोक्यन्ते वर्णास्तु ङ,ञ,णाःक्वचित् ।
तदेतेषु क्रमान्नाम धर्तव्यं घ, झ, ठाक्षरैः ॥१॥

अर्थ तो इसका स्पष्ट ही है । जन्म समय ङ अक्षर जन्मचरण आ पडे तो घ पर नाम रखना चाहिये जैसे—घनश्याम, घनानन्द आदि । ञ जन्म चरण हो तो-झ पर नाम रखना चाहिए, जैसे—झम्मनलाल,झब्बूलाल आदि २ । इसी तरह ण जन्म चरण आ पड़े तो ठ पर नाम रखना चाहिये जैसे—ठाकुरदास, ठाकुरदत्त आदि २ ।

ङ, ञ, ण पर नाम न होने के कारण ही पूर्वाचार्यों ने इन ङ ञ ण अक्षरो के स्थान पर—घ झ ठ अक्षरो का निर्देश कर दिया है । इस प्रकार नाम करण करने से जातक का न तो नक्षत्र ही बदला और न राशि ही बदली अर्थात् नक्षत्र और राशि वही रही, जिन अक्षरो पर कि जातक का जन्म चरण आया था ।

यह पद्य कहाँ का है यह तो कहना कठिन है परन्तु यह निश्चित है कि यह पद्य पूर्व से ही वृद्धजन परम्परा से चलता चला आ रहा है और इस पद्य के अनुसार ही विद्वद्वृन्द नामकरण करते है ।

एक विद्वान् ने अपनी टिप्पणी में-इस विषय मे निम्नलिखित पद्य भी "कस्यचित् पद्यम् लिखते हुए लिखा है,वह यह है-

न प्रोक्ता ङ,ञ,णा,वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि ।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ॥१॥

किन्तु ङ ञ ण पर जन्म चरण होने पर यदि जातक का नाम यथाक्रम ग ज ड पर रक्खा जाता है तो नक्षत्र राशि स्पष्ट ही पृथक् पृथक् हो जाते है। अतः ऊपर लिखित हमारा पद्य ही सर्वथा सर्व सम्मत है क्योकि उसमे जातक की न तो राशि बदलती है और न नक्षत्र ही, इसलिये उसमे शंका के लिये क ई स्थान ही नही रहता।

क्षीणश्चन्द्रो रविर्भौमः पापो राहुः शनिश्शिखी।
बुधोऽपि तैर्युतः पापो होरा राश्यर्द्धमुच्यते।११।

क्षीण चन्द्र, रवि, मङ्गल, राहु, शनि, केतु ये पाप ग्रह होते है तथा इन्ही उक्त पाप (क्रूर) ग्रहो के साथ बुध आ पडे तो वह भी पाप ग्रह हो जाता है, (पाप ग्रहो के सङ्ग से र ित बुध, पूर्ण चन्द्रमा, शुक्र गुरु ये शुभ (सौम्य) ग्रह होते हैं) राशि के अर्ध भाग को होरा कहते हैं॥ ११॥

रवीन्दुभौमगुरवो ज्ञराहुशनि भार्गवाः।
स्वस्मिन्मित्राणिचत्वारि परस्मिञ्छत्रवः स्मृताः १२

सूर्य, चन्द्रमा मङ्गल और गुरु ये चार ग्रह अपनी राशि मे मित्र है तथा बुध, राहु, शनि शुक्र ये चार ग्रह भी स्व राशि मे मित्र होते है, एव—बुध, राहु, शनि, शुक्र, ये चार ग्रह अन्य ग्रहो की राशि मे शत्रु हो जाते है॥ १२॥

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः।
कन्यायां रोहिणी पुत्रो गुरुः कर्के झषे भृगुः।१३।
❀ शनिस्तुलायामुच्चश्च मिथुने सिंहिकासुतः॥
उच्चात्सप्तमगा नीचा राशौ वापि नवांशके।१४।

मेष राशि का सूर्य उच्च का होता है, वृष का चन्द्र, मकर का भौम, कन्या का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन का शुक्र, तुला का शनि, मिथुन का राहु उच्च का होता है और ये सूर्यादि ग्रह अपनी अपनी उच्च राशि से सातवी राशि पर नीच होते हैं। यथा "रविर्मेषे तुले नीच, सूर्य मेष का उच्च का है तो उससे सातवी राशि तुला पर नीच हो जाता है। इसी तरह सब ग्रहो को उच्च नीचता जाननी चाहिये। राशियो की उच्चनीचता की तरह नवाश मे भी उच्चनीचता समझनी चाहिये ॥ १३ ॥ १४ ॥

अर्थी भोगी धनी नेता जायते मण्डलाधिपः ।
नृपतिश्चक्रवर्ती च रव्याद्यैरुच्चकैर्ग्रहैः ॥ १५ ॥

सूर्यादि के उच्चस्थ होने का क्रम से यह फल है कि- जन्माग मे यदि सूर्य उच्च का हो तो पुरुष धनी, चन्द्रमा उच्च राशि का पडा हो तो भोगी, मङ्गल के उच्च होने पर धनी, बुध उच्चस्थ हो तो मडलेश, बृहस्पति हो तो राजा और शुक्र उच्चराशि का हो तो राजा, एव शनि उच्च का हो तो चक्रवर्ती होता है ॥ १५ ॥

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तङ्गतैर्जडः ॥ १६ ॥

जिस पुरुष के जन्माङ्ग मे तीन ग्रह स्वराशि के पडे हो तो वह मनुष्य राजमन्त्री होवे और अगर तीन ग्रह उच्च के आ पडें तो राजा होता है, और अगर तीन ग्रह नीच राशि के

---

* तथा चोक्तमन्यत्रापि"

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक् तिथीन्द्रियाः—शैस्त्रिनवकविंशतिभिश्चतेऽस्तनीचाः ।

हो तो दास होता है, तथा तीन ग्रह अस्त हों तो जड़ बुद्धि वाला होता हैं ॥ १६ ॥

१ उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहे स्थितोऽपि वा।
मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः ।१७।

उदित होकर जो ग्रह स्थित हो या निजराशि स्थित होकर बैठा होवे तथा मित्रग्रही हो वा मित्र के षड्वर्ग में स्थित हो अथवा मित्र ग्रह से देखा जाता हो वह ग्रह सबल (बलवान्) माना जाता है ॥ १७ ॥

* स्वामिना बलिना दृष्टं सबलैश्च शुभग्रहैः।
न दृष्टं न युतं पापैस्तल्लग्नं सबलं स्मृतम् ।१८

जो लग्न अपने बली स्वामी करके देखा जाता हो और जो कि लग्न बलवान् शुभ ग्रहो से दृष्ट हो, तथा उस लग्न को पाप ग्रह देखते न हो और न वह लग्न पाप ग्रहो से युक्त ही हो वह लग्न बलवान् होता है, ॥ १८ ॥

दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ।

लघुजातके भट्टोत्पलोऽपि स्वटीकायावभाण-
रवेर्मेषतुले प्रोक्ते चन्द्रस्ज वृषवृश्चिकौ,
भौमस्य मृगकर्कौच कन्यामीनौ बुधस्य च
जीवस्य कर्कमकरौ मीनकन्ये सितस्य च
तुलामेषौ च मन्दस्य उच्चनीचे उदाहृते ॥

(१) टि० ग्रहो की नैसर्गिकादिमित्राऽमित्रता का सविस्तार विवरण हमारी बनाई हुई भाषा टीका वाली सटिप्पणीक मानसागरी में देखिये। यह पुस्तक गोवर्द्धन पुस्तकालय मथुरा मे मिलती है।

* ग्रहो के बलाबल का प्रतिपादन 'लघुजातक' मे है
"क्षीणेन्द्वर्कमहीसुतार्कतनया पापा बुधस्तैर्युतः–"

राजयोगेऽत्र यो जातःस पुमान्नायको भवेत् ॥ १६

अब यहाँ से राजयोग बतलाया जाता है-जन्म लग्न से दशम गृह मे बुध सूर्य होवे तथा षष्ठ स्थान मे राहु होवे तो राजयोग हो जाता है इस राजयोग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य बहुत से मनुष्यो का नेता होता है ॥ १६ ॥

आदौ जीवः शनिश्चान्ते ग्रहा मध्ये निरन्तरम् ।
राजयोगं विजानीयात् कुटुम्बबलसंयुतम् ॥२०

आदि मे अर्थात् पहले बृहस्पति पडा हो और अन्त मे शनि स्थित हो और इन दोनो ग्रहो के बीच मे 'सू० च,० म० बु० शु० रा० के०–ये सब शेष ग्रह आ पडे तो इसको कुटुम्ब,सेना युक्त राजयोग जानना चाहिये ॥ २० ॥

इस वराहमिहिराचार्योक्त्यानुसार क्षीण, चन्द्र, सूर्य, मङ्गल और शनि ये पाप ग्रह है और पूर्ण चन्द्रमा बुध, बृहस्पति, शुक्र ये शुभ ग्रह है ।

दृष्टिविचार–

पूर्णं पश्यति रविजस्तृतीयदशमे त्रिकोणमपि जीवः
चतुरस्रं भूमिसुत सितार्कबुधहिमकरा. कलत्रञ्च ॥१॥
दशमतृतीये नवपञ्चमे चतुर्थाष्टमे कलत्रञ्च ।
पश्यन्ति पादवृद्धया फलानि चैव प्रयच्छन्ति ॥२॥ व० मि०

शनि ३-१० वे स्थान को सपूर्ण दृष्टि से देखता है,गुरु ६-५ को,मगल ४।८ को,शुक्र सूर्य बुध, चन्द्र सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, १० । ३ ।, ६ । ५ ।, ४ । ८ । ७,को एकैकचरण वृद्धि से देखते हैं और फल भी वैसा ही देते हैं । तथा

त्र्यांशं त्रिकोण चतुरस्रमस्त, पश्यन्ति खेटाश्चरणाऽभिवृद्धया ।
मन्दो गुरुर्भूमिसुत परेच क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने स्थितः सितः ।
निरंतरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ।२१।

जिस पुरुष की जन्मकुण्डली मे बृहस्पति जन्म लग्न से तृतीय स्थान मे स्थित हो, और शुक्र अष्टम स्थान मे पड़ा हो, और बाकी के सब ग्रह इन दोनो ग्रहो के बीच मे पड जाँय तो वह मनुष्य निश्चय ही राजा होता है ।। २१ ।।

जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ।
सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ।२२।
तुलायामसुराचार्यो राजयोगो भवेदयम् ।
अस्मिन् योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ।२३।
अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः ।
सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः २४।

वृष राशि पर बृहस्पति स्थित होवे, मिथुन पर चन्द्रमा, मकर पर मङ्गल बैठा हो, सिंह राशि पर शनि आ बैठे, बुध और सूर्य कन्या पर स्थित हो जांय, शुक्र तुला राशि पर हो तो यह राजयोग होता है। इस योग मे उत्पन्न पुरुष महाराजा होता है,किन्तु इस मनुष्य को अष्टम और द्वादश वर्ष बडी अनिष्टकारक है इन वर्षों मे यदि कालकवलित न होवे तो वह विश्वपालक सार्वभौम राजा होता है ।।२२।।२३।।२४।।

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः ।
दीर्घजीवी महाप्राज्ञो जातको नायको भवेत् ।२५।

जबकि जन्म लग्न मे केवल वृहस्पति ही बलवान होकर आपडे तो समस्त योग शुभ ही होते हैं ऐसे योग मे पैदा होने वाला पुरुष दीर्घ जीवी तथा महा विद्वान् होता है ।। २५ ।।

धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।
नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजयोगोऽभिधीयते २६
अस्मिन् योगे च जाते च स राजा धनवर्जितः ।
दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मण्डलनायकः ।

जिस जातक के जन्माङ्ग मे शुक्र भौम धन राशि पर हो वहस्पति मीन राशि का होवे, बुध तुला राशि पर स्थित हो, शनि तथा चन्द्रमा नीच राशिस्थ (मेष वृश्चिक पर) हो तो राजयोग होता है इस योग मे उत्पन्न मनुष्य का धन दीनजनो के पालन पोषण मे तथा अपने भोग मे खूब खर्च होता है अत. वह धनहीन होता हुआ भी दानी और भोगी होने के कारण ससार मे विख्यात् तथा मान्य और जन मण्डल का नायक होता है ।। २६ ।। २७ ।।

मीने शुक्रो बुधश्चान्ते धने राहुस्तनौ रविः ।
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते २८

जिसके जन्माङ्ग मे शुक्र मीन राशि का होवे, बुध बारहवे स्थान मे हो, राहु धन भाव मे हो सूर्य लग्न मे, भौम तृतीय स्थान मे हो तो राजयोग होता है ।। २८ ।।

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः ।
स राजा गृहमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः २९

जबकि गुरु तीसरे स्थान में हो और चन्द्रमा ११ वें घर में हो तो इस जन्माङ्गवाला पुरुष अपने घर के बीच मे विख्यात् तथा कुलदीपक होता है ॥ २६ ॥

शुभग्रहाः शुभक्षेत्रे भवन्ति यदि केन्द्रगाः ।
तदा शुभानि कर्माणि करोत्येव हि जातकः ३०

अगर शुभग्रह शुभस्थान वा केन्द्र (१।४।७।१०) गत हों तो इस योग मे उत्पन्न जातक शुभकर्मकारी होता है ॥ ३० ॥

उच्चस्थानगताः सौम्याः केन्द्रेषु च भवन्ति चेत् ।
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य वंश्यानां चैव पोषकः ३१

जिस मनुष्य की जन्मकुण्डली मे शुभ ग्रह उच्च स्थान स्थित होते हुए केन्द्र मे आपडे तो नि सन्देह वह पुरुष वश वालों का पोषण करने वाला होता है ॥ ३१ ॥

धने व्यये तथा लग्ने सप्तमे च यदा ग्रहाः ।
छत्रयोगस्तदा ज्ञेयः स्ववंशे नायको भवेत् ३२

धन २, व्यय १२, लग्न तथा सप्तम भाव मे समस्त ग्रह आपडे तो छत्र योग होता हैं इस योग मे उत्पन्न जातक अपने कुटुम्ब मे नायक होता है ॥ ३२ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिःस्वराशिगः
अत्र जातस्य दीर्घायुःसम्पदश्च भवन्ति हि ३३

जिस जातक के जन्माङ्ग मे वृहस्पति स्वक्षेत्री हो तथा बुध शनि भी स्वराशिस्थ हो तो उस पुरुष की आयु तथा सम्पत्ति बहुत बढ़ी चढ़ी होती हैं ॥ ३३ ॥

मीने वृहस्पतिः शुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् ।
अत्र जातस्य राज्यं स्यात् पत्नी च बहुपुत्रिणी ।

जिसकी जन्मकुण्डली मे मीन राशि पर वृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा होवे तो उसको राज्य मिले और उसकी स्त्री बहुपुत्रवती होती है ॥ ३४ ॥

पंचमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ।
स पूज्यश्च महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ३५

पञ्चम भाव मे जिसके गुरुदेव (वृहस्पति) हो और चन्द्रमा दशम भाव मे स्थित हो वह नर पूज्य महाबुद्धिमान् तपस्वी तथा जितेन्द्रिय होता है ॥ ३५ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदण्डमकरेषु च ।
ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ३६

वृहस्पति जिसके सिह राशि पर होवे और शेष ग्रह तुला, कर्क, धन, मकर राशि पर होवे तो वह मनुष्य देश-भोगी (समस्त देश का भोगने वाला) राजा होता है ॥ ३६ ॥

तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नगः स्याच्छनैश्चरः ।
करोति भूपतेर्जन्म त्वन्यराशौ यदा ग्रहाः ।३७।

जिसके शनि तुला, धन एव मीन राशिस्थ होता हुआ लग्न मे आ सड़े और अन्य शेष ग्रह अन्य राशियों पर स्थित होवे तो वह राजा होता है ॥ ३७ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने यदा सौम्यो राजयोगस्तदुच्यते ३८

अगर कोई एक सौम्य ग्रह विद्या स्थान अर्थात् पञ्चम भाव मे होवे और कर्म स्थान मे अर्थात् दशम स्थान मे चन्द्रमा बैठा हो, और धर्म (नवम) भाव मे कोई एक और सौम्य ग्रह हो तो यह राजयोग होता है इस राजयोग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य राजा होता है ॥ ३८ ॥

मकरे च घटे मीने वृषे मिथुनमेषयोः ।
ग्रहास्तदात्र विख्यातो राजा भवति मानवः ३६

जिस पुरुष के मकर, कुम्भ, मीन, वृष, मिथुन और मेष मे ही समस्त ग्रह आ बैठे तो वह पुरुष ससार प्रसिद्ध राजा होता है ॥ ३६ ॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ।
कुरुते श्रियमारोग्यं पुत्रं मानाधिकं फलम् । ४०

जिसकी जन्म कुण्डली मे बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन चार ग्रहों के सङ्ग राहु केन्द्रस्थ हो जाय तो वहजातक धन सम्पत्ति आरोग्य पुत्र तथा अधिक सम्मान पाने वाला होता है ॥ ४० ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो गुरुश्चन्द्रो धरासुतः ।
रविसौरियुताः सन्ति राजा भवति निश्चितम् ।

जिस मनुष्यके जन्माङ्ग मे चतुर्थस्थान पर सूर्य और शनि के सहित शुक्र, गुरु चन्द्रमा तथा मङ्गल आ पड़ तो वह जातक निश्चित राजा होता है ॥ ४१ ॥

अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्यगौ क्रूरसौम्यकौ ।
राजयोगेऽत्र यो जातश्चत्वारिंशत्स जीवति । ४२

अगर क्रूर (पाप) ग्रह अष्टम तथा द्वादश भाव मे स्थित हो और इन दोनो स्थानो के बीच मे ही क्रूर तथा सौम्य (शुभ) दोनो प्रकार के ग्रह आ पडे तो यह राजयोग होता है, तथा इन योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य चालीस ४० वर्ष तक जीता है ।। ४२ ।।

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ४३

जब कि शनि और चन्द्रमा लग्न मे आ पडे, और सूर्य त्रिकोण (नवम पचम) मे होजाय एव मगल दशम स्थान मे होवे तो ऐसा योग राजयोग कहलाता है ।। ४३ ।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदा ।
तस्य जीवति न भ्राता स्यादेकोऽपिनृपैःसमः ४४

जिसके जन्माग मे नवम स्थान पर स्वगृही (सिंह राशि का) होता हुआ सूर्य आ बैठे तो उस पुरुष का कोई भाई नही जीवित रहता है और वह अकेला ही कई राजाओ के समान होता है ।। ४४ ।।

द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ।
राजयोगं विजानीयाज्जातस्तत्र नृपो भवेत् ४५

दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवे, छठे, और दशवें स्थान में ही समस्त ग्रह आ पडे तो ऐसा योग राजयोग जानना चाहिये और इस योग मे जन्म लेने वाला जातक पुरुष राजा होता है ॥ ४५ ॥

लग्नै क्रूरो व्यये सौम्यो धनै क्रूरश्च जायते ।
राजयोगो न राजा च दाता दारिद्र्यभाक्सदा ४६

जिसकी कि जन्म कुंडली मे लग्न तथा द्वितीय भाव मे क्रूर (पाप) ग्रह हो, और बारहवे भाव मे शुभ ग्रह होवे तो वह राजयोग नही समझना अपितु इस योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य राजगृह मे जन्म लेता हुआ भी अपव्यय के कारण तथा अत्यन्त दानी होने के कारण वह थोडे ही काल मे सदा को कंगाल (दरिद्री) होजाता है ॥ ४६ ॥

लग्ने क्रूरो धनै सौम्यो यदा वै जातको भवेत् ।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयंकर ॥ ४७ ॥

लग्न मे और सप्तक मे क्रूर (पाप) ग्रह होवें, तथा धन भाव मे शुभ ग्रह हो तो वह जातक अपने कुटुम्ब का नाश करने वाला होता है ॥ ४७ ॥

धनै चन्द्रश्च सौम्यश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगोऽभिधीयते ।४८।

जिसकी जन्मकुण्डलिका मे द्वितीय भवन मे चन्द्रमा तथा बुध हो और मेष राशि पर बृहस्पति होवे, दशम भवन मे राहु तथा शुक्र होवें तो वह पुरुष राजयोग वाला होता है ॥ ४८ ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिवुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ४९

जिसके जन्माग मे सिह राशि पर बृहस्पति होवें, शुक्र कन्या राशि पर स्थित हो, शनि मिथुन राशि पर होवे एवम्

मगल स्वेक्षेत्री। (मेष वृश्चिक का) होता हुआ चतुर्थ (हिबुक) स्थान स्थित हो तो वह जातक नायक (जनता का सिर मौहोर) होता है ॥ ४६ ॥

शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः।
मकरे च कुजस्तत्र जातः स्याद्विश्वपालकः ।५०

जिसके जन्माङ्ग चक्र मे शनि और चन्द्रमा कन्या राशि पर होवे, वृहस्पति सिह पर स्थित हो, और कुम्भ पर राहु बैठा हो (तमस्तु राहु स्वर्भानु सैंहिकेयो विधुन्तुद) और मकर राशि पर मगल बैठा हो तो ऐसे योग मे पैदा हुआ मनुष्य विश्व भर का पालक राजा होता है ॥ ५० ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुम्भयोः।
मीने च वत्सरे त्रिंशे जातः स्यात्सर्वकर्मकृत् ५१

जिसके जन्माङ्ग मे शुक्र धन राशि पर, वृहस्पति मकर पर, सूर्य कुम्भ पर, मगल मीन मे होवे तो ऐसा मनुष्य तीस वर्ष की उम्र मे ही सब कार्य करने वाला होजाता है ॥ ५१ ॥

चतुर्षु केन्द्रस्थानेषु सौम्यपापग्रहस्थितिः।
चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ।५२

जिसके कि चारो केन्द्रो (१।४।७।१०) मे शुभ और पाप दोनो ही ग्रह आ बैठे तो वह चतु· सागर योग जानना चाहिये, यह योग राज्य (रियासत) अर्थात् तगड़ी जमीदारी एवम् धन देने वाला होता है ॥ ५२ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चन्द्रज्ञभार्गवाः।
मेषे भानौ च यो जातः स राजा विश्वपालकः ५३

जिस मनुष्य की जन्म लग्न मे कर्क होवे और उसी कर्क-लग्न मे बृहस्पति आ पड़े और ग्यारहवे भवन मे चद्र, बुध, शुक्र होवें तथा मेष राशि मे सूर्य होवे तो वह मनुष्य ससार भर का पालन करने वाला राजा होता है ॥ ५३ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ।
सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ५४

जब कि दशम स्थान मे वृहस्पति, बुध, शुक्र, तथा चन्द्रमा आ बैठे तो उस पुरुष के समस्त कार्य सिद्ध होते रहते है और वह पुरुष राज मान्य होता है ।। ५४ ।।

षष्ठेऽष्टमे पंचमे च नवमे द्वादशे तथा ।
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यः सकष्टकः ।।५५।।

जिसके जन्माङ्ग मे षष्ठ स्थान पर तथा पचम, नवम, द्वादश स्थाना पर ही शुभ और पाप दोनो ग्रह आ पड़े तो वह मनुष्य कष्ट भोगने वाला होते हुए भी राजाओ का मान्य होता है ।। ५५ ।।

पंचमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ।
भौमराहुसितार्काः स्युर्जातोऽत्र कुलदीपकः ५६

जिस पुरुष की जन्मकुण्डली में पञ्चम स्थान पर मङ्गल, षष्ठ स्थान पर राहु, और आठवे शुक्र, तथा नवे स्थान पर सूर्य हो तो, इस योग मे उत्पन्न जातक कुल दीपक होता है ।।५६ ।।

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।

जायते च तदा राजा मानी पत्नीरतः सदा ५७

जिसके जन्माँग मे जन्म लग्न पर शनि और चन्द्र स्थित हो और आठवे शुक्र पडा हो तो इस योग मे उत्पन्न हुआ जातक राजा और मानी तथा अपनी स्त्री मे आसक्त रहता है ॥ ५७ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः ।
अत्रजातः पितुर्द्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ५८

जब कि मिथुन राशि पर राहु हो और सिंह पर भौम होवे, तो ऐसे योग मे पैदा हुआ जातक पिता के समस्त धन को प्राप्त करता है और राजा होता है ॥ ५८ ॥

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ।
सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोःसुते ५९

अपनी उच्चराशि (कन्या) का होता हुआ लग्न मे बुध आ पड़े, और दशम मे शुक्र, सप्तम मे वृहस्पति तथा चन्द्रमा होवे और शनि मङ्गल पञ्चम स्थान में हो तो ऐसे योग मे उत्पन्न हुआ जातक राजा होता है ॥ ५९ ॥

लग्ने च सवलो मंदो मकरे च कुजो भवेत् ।
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ।
दूरादेव नमन्त्यस्य प्रतापैश्चरणं नृपाः ॥६०॥

यदि लग्न मे बली होकर शनि पडा हो और मकर पर भौम होवे तो इस योग मे उत्पन्न हुआ जातक महाराजा होता

है तथा उसके प्रवल प्रताप के कारण अन्य राजा दूरसे ही चरणों में प्रणाम करते है ॥ ६० ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ।
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ६१

जब कि सूर्य उच्च राशि का होता हुआ त्रिकोण (नवम, पञ्चम) मे बैठा हो तो वह जातक नीच कुल मे पैदा हुआ हो तो भी धन से परिपूर्ण राजा होता है ॥ ६१ ॥

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाःस्युर्दशमेऽपि वा ।
बिलग्नै सम्मुखे वापि कारकाः परिकीर्त्तिताः ६२
उत्पन्नःकारके योगे नीचोऽपि नृपतां ब्रजेत् ।
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ।६३

जिसके जन्माग में सब ग्रह ग्यारहवें अथवा दशमें या लग्न मे ही स्थित हो तो यह सब ग्रह कारक माने गये हैं, इस कारक योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य नीच घर मे भी क्यो न पैदा हुआ हो तो भी राजा होता है और अगर राजघराने में पैदा हुआ हो तो उसके राजा होने में सन्देह ही क्या है ॥ ६२-६३ ॥

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ।६४

लग्न से वा किसी और स्थान से सब ग्रह क्रम से ही पड जॉय तो यह एकावली योग कहा गया है। इस योग मे उत्पन्न जातक महाराजा होता है ॥ ५४ ॥

स्वत्रिकोणोच्चगो हेतुरन्योन्यं यदि कर्म्मगः ।
सुहृत्तद्गुणसम्पन्नःकारकश्चाऽपि स स्मृतः ६५

स्वराशि, मूलत्रिकोण तथा उच्चराशिगत ग्रहकारक होता है अगर वह कर्म (दशम भवन केन्द्र) मे हो, तो अन्योन्य के फल मे कारक का हेतु होता है क्योकि दशम स्थान मे स्थित होने पर ही एक ग्रह दूसरे ग्रह का तत्काल मित्र वा तद् गुण सम्पन्न हो जाता है ।। ६५ ।।

चतुर्ग्रहा एकगताःपापाः सौम्या भवन्ति चेत् ।
भ्रातृधीधर्मलग्नार्थे राजयोगो भवेदयम् ।६६।

जिसके जन्मांग मे एक स्थान मे ही दो पापग्रह और दो सौम्य ग्रह इस प्रकार मिलाकर चार ग्रह एक ही स्थान मे हों किन्तु वह स्थान तृतीय, पञ्चम, नवम, लग्न, द्वितीय, इन्ही पाँच स्थानो मे से कोई एक स्थान हो तभी राजयोग होता है ।। ६६ ।।

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवन्ति च यदा ग्रहाः ।
हंसयोगं विजानीयात् स्ववंशस्यात्र पालकः ६७

जब कि समस्त ग्रह त्रिकोण (९—५) मे या सप्तम, वा लग्न इन तीन भावो मे ही तो हम योग होता है। इस योग मे उत्पन्न जातक अपने वश का पालक होता है ।। ६७ ।।

सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनालिं च निरीक्षितः ।
षष्ठेऽष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्धरापतिः ।६८।

वृश्चिक राशि को छोडकर अन्य राशिगत होता हुआ चन्द्रमा यदि छठे, आठवे या सातवें स्थान में स्थित हो, और

इन स्थानो मे से किसी एक स्थान पर बैठा हुआ अन्य सब ग्रहों करके देखा जाता हो तो ऐसे जन्माग वाला मनुष्य दीर्घायु वाला राजा होता है ॥ ६८ ॥

***षष्ठेऽष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः ।**
सिंहासनाख्ययोगेऽस्मिन्राजासिंहासनैवसेत् ६९

जिसके समस्त ग्रह अगर छठे, आठवें, बारहवें तथा दूसरे स्थान मे ही स्थित होजांय तो सिहासन योग होता है इस योग मे उत्पन्न जातक सिंहासन पर आसीन होता ॥ ६९ ॥

लग्नै शुक्रबुधौ न स्तःकेन्द्रे नास्ति बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातःकिं करिष्यति७०

जिसके जन्माँग मे शुक्र, बुध, लग्न मे न होवे और बृहस्पति केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) मे न होवे, और दशम स्थान मे मगल न हो तो ऐसा मनुष्य पैदा होकर ससार मे क्या कर सकेगा अर्थात् कुछ नही कर सकता है, कहने का तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त ग्रह उपर्युक्त स्थान मे पड जॉय तो अच्छा फल देते है ॥ ७० ॥

अष्टमस्था यदा क्रूराःसौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः
ध्वजयोगेऽत्र यो जातःस पुमान्नायको भवेत् ७१

---

* एतत्पद्यात्पूर्वं क्वचित्पुस्तके—

'धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पति· ।
षष्ठे च सिंहिकापुत्रो राजा भवति विक्रमी ॥"

इति पद्य लिखित दृश्यते, इसका अर्थं स्पष्ट ही है।

जब कि क्रूर (पाप) ग्रह अष्टम स्थान मे स्थित हो और सौम्य (शुभ) ग्रह लग्न मे हो तो ध्वज योग हो जाता है इस ध्वज योग मे पैदा हुआ मनुष्य नायक (मुखिया) होता है ॥७१॥

अष्टमेऽस्य यदा पापाः केन्द्रस्थाने शुभग्रहाः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य राजसम्मानमेव च ॥७२॥

जिस मनुष्य के जन्माग मे अष्टम् स्थान मे पाप ग्रह बैठे हो और केन्द्र मे शुभ ग्रह आपडे तो उसको सर्वसिद्धि प्राप्त होती हैं और उसका राजाओ से मान होता है ॥७२॥

मेषलग्ने यदा भानुश्चतुर्थे च बृहस्पतिः ।
दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ७३

जन्म लग्न मेष हो और उस पर सूर्य हो और चतुर्थ स्थान पर बृहस्पति बैठा हो, तथा दशम भवन मे मङ्गल पडा हो तो ऐसे योग मे उत्पन्न जातक विश्वभर का राजा होता है ॥७३॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगो विधीयते ।७४।

अगर लग्न मे शनि तथा चन्द्रमा बैठा हो बृहस्पति तथा सूर्य त्रिकोण (नवम पञ्चम) मे और मङ्गल दशम स्थान में पडा हो तो इसे राजयोग कहते है ॥७४॥

केन्द्रे स्वोच्चस्थिते सौम्ये - राजलक्ष्मीपतिर्भवेत् ।
केन्द्रे पापेस्वोच्चसंस्थे राजास्याद्दुहितुगृ हे ।७५।

अगर सौम्य (शुभ) ग्रह अपनी उच्च राशि का होता हुआ केन्द्र (१।४।७१०) मे आपडे तो वह राजलक्ष्मी का मालिक

होता है एक योग । और किसी की जन्म कुण्डली में अगर पाप-ग्रह अपनी उच्च राशि का होता हुआ केन्द्र में आपडे तो वह अपनी बेटी के घर में राजा होता है यह दूसरा योग हुआ ॥७५॥

बली सौम्यग्रहो लग्नं केन्द्रस्थो यदि वीक्षति।
तदा निहन्त्यरिष्टानि तमः सूर्योदये यथा ।७६।

यदि सौम्य (शुभ) ग्रह बलवान् हो और वह केन्द्र से स्थित होकर लग्न को देखता हो तो वह ग्रह सब अरिष्टो का इस प्रकार नाश करता है जैसे सूर्योदय होने से अन्धकार नष्ट होता है ॥७६॥

चतुष्केन्द्रगताः सौम्याः पापा द्वादशषष्ठगाः ।
सराजा विश्वविख्यातो ध्वजच्छत्रविभूषितः ।७७

अगर समस्त सौम्य (शुभ) ग्रह चारों केन्द्रों मे बैठे हों, और पाप ग्रह बारहवे तथा छठे स्थान मे हों तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ जातक पुरुष ध्वजा और छत्र से विभूषित विश्व विख्यात राजा होता है ।।७७ ।

लग्नादष्टमगो भौमस्त्रिकोणे जीवगो रविः ।
धार्मिको जायते राजा धनवानपि जायते ।७८।

जिस पुरुष के जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मङ्गल होवे, और त्रिकोण (५–९) मे वृहस्पति तथा सूर्य स्थित होवे तो वह मनुष्य धर्मात्मा और बलवान् राजा होता है ।।७८।।

लग्नात्तु पंचमस्थाने यदा सूर्यवृहस्पती ।
तदा विद्याधनैःपूर्णो जायते जातकोत्तमः॥७९॥

जब कि लग्न से पांचवे स्थान में सूर्य और वृहस्पति बैठे

हो तो वह पुरुष विद्या और धन से परिपूर्ण और पुरुष श्रेष्ठ होता है ॥७६॥

एकोऽपि यदि केन्द्रस्थःशुक्रो जीवोऽथवा बुधः ।
जायते च तदा बालो धनाढ्यो वेदपारगः ।८०।

जिसके जन्माङ्ग मे शुक्र, बृहस्पति तथा बुध इन तीनों ग्रहो में से एक भी ग्रह बलवान् होकर केन्द्र मे आपडे तो वह धन से युक्त तथा वेदो का विद्वान् होवे ॥८०॥

द्वित्रिसौम्याः खगा नीचा व्ययभावेऽथवा पुनः ।
भवन्ति धनिनःषष्ठे निधनेऽन्ते च भिक्षुकाः८१

जिस पुरुष की जन्मकुण्डली शुभ ग्रह दूसरे तथा तीसरे भवन मे स्थित हो, और पाप ग्रह बारहवे स्थान मे हो तो वह पुरुष धनवान् होता है और अगर समस्त ग्रह छठे आठवे या बारहवें स्थान में ही हो तो वह मनुष्य भिखारी होता है ॥८१॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्
तद्राशिनाथश्च तदुच्चनाथः ॥
भवेत्त्रिकोणे यदि केन्द्रवर्ती ।
राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥८२॥

जिसके जन्माङ्ग मे जन्म लग्न पर नीच राशि का ग्रह बैठा हो और उस नीच राशि का ही स्वामी अगर त्रिकोण (९ । ५) या केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) गत हो तो वह धार्मिक और चक्रवर्ती राजा होता है ॥८२॥

षष्ठे क्रूरे नरो जातः पापशत्रुविमर्दकः ।

षष्ठे सौम्ये सदा रोगी षष्ठे चन्द्रस्तु मृत्युदः।८३।

जिस मनुष्य के छठे स्थान पर पापग्रह बैठा होवे तो वह जातक पाप तथा शत्रुओ का मर्दन करने वाला होता है और अगर कोई सौम्य शुभ ग्रह छठे स्थान पर पडजाय तो वह जातक हमेशा रोगी होता है और चन्द्रमा अगर छठे स्थान पर होवे तो उसको मृत्यु होती है ॥८३॥

लग्नात्तृतीयभवने यदि सोमसुतो भवेत् ।
द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायन्ते नात्र संशयः ८४

जिस पुरुष के लग्न स्थान से तृतीय भवन मे बुध बैठा हो तो उस पुरुष के दो पुत्र तथा तीन कन्या होवें इसमे कुछ सन्देह नही समझना ॥८४॥

लग्नात्तृतीयभवने बली वाचस्पतिर्यदा ।
पंच पुत्रास्तदा तस्य जायन्ते मानवस्य वै ॥८५॥

अगर जिसके जन्माङ्ग मे लग्न से तृतीय भवन में बृहस्पति आपडे तो उस पुरुष के पाँच पुत्र उत्पन्न होते हैं निश्चय करके ।८५।

लग्नात्तृतीयभवने बली शुक्रो यदा भवेत् ।
कन्याद्वयं त्रयःपुत्रा जायन्ते तस्य निश्चितम्।८६

जिस मनुष्य के लग्न से तृतीय भवन में शुक्र बली होकर आ बैठें तो उस पुरुष के निस्सन्देह दो कन्या और तीन पुत्र हो ॥८६॥

लग्नात्तृतीयभवने शनिचन्द्रौ यदा स्थितौ ।
श्यामवर्णास्तदा बालो भ्रातृहीनस्तु जायते ।८७

लग्न से तृतीय स्थान मे यदि शनि और चन्द्रमा हो तो वह वालक श्यामवर्ण (काले रङ्ग का) हो और सहोदर भाइयों से रहित होवे ।। ८७ ।।

लग्नात्तृतीयभवने राहुयुक्तो यदा शशी।
भ्रातृहीनो भवेद्वालो लक्ष्मीवानपि जायते।८८

अगर लग्न से तृतीय भवन मे राहु युक्त चन्द्रमा हो तो वह जातक भाइयो से हीन होता हुआ लक्ष्मीवाला (धनिक) होवे ।। ८८ ।।

लग्नात्तृतीयभवने पंचमे वा धरासुतः।
म्रियते पुत्रदुःखेन नारी वा पुरुषोऽपि वा।८९।

जन्मलग्न मे तृतीय स्थान पर वा पचम स्थान पर जिसके मगल पडा होवे तो ऐसी जन्म कुण्डली वाला स्त्री हो या पुरुष हो वह पुत्र के दु ख से मृत्यु को प्राप्त होवे ।। ८९ ।।

लग्नात्सप्तमगेहस्थो यदि शुक्रो बली भवेत्।
कन्याद्वयं त्रयःपुत्रा धनवन्तो भवन्ति हि।९०।

जिसके जन्माङ्ग मे जन्म लग्न से सप्तम स्थान पर वलवान् होकर शुक्र आपडे तो उस जातक के दो कन्या और तीन पुत्र हो तथा वे पुत्र सदा धन से परिपूर्ण रहे ।। ९० ।।

सिंहलग्ने यदा शुक्रः शनिर्वापि व्यवस्थितः।
तत्रजातस्य वालस्य नेत्रनाशो हि जायते।९१।

जो किसी मनुष्य की सिंह लग्न मे उत्पत्ति होवे और उसी सिंह लग्न मे शुक्र एव शनि स्थित हो तो ऐसे जातक के नेत्रो का नाश हो जाता है अर्थात् वह अन्धा होजाता है ।। ९१ ।।

सूर्योऽष्टमे रिपौ चन्द्रो धने भौमो व्यये शनिः ।
ग्रहदोषेण नेत्राणामन्धतां जनयन्त्यमी ॥६२॥

जिसके जन्माङ्ग मे अष्टम सूर्य हो, छठे चन्द्रमा पडा हो, भौम द्वितीय भवन मे स्थित हो, शनि बारहवे पड़ा हो तो इस ग्रह दोष से ये सब ग्रह जातक के नेत्रो का नाश करते है ॥६२॥

शुभवर्गोत्तमे जन्म व्ययस्थाने च सद्ग्रहे ।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥६३॥
सूर्य्ये केन्द्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिर्निशाकरे ।
शस्त्रवृत्तिःकुजेशूरो बुधे चाध्यापको भवेत् ।६४
स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्नरो गुरौ ।
शुक्रे विद्यार्थसम्पन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ।६५।

जिस मनुष्य का जन्म शुभवर्गोत्तम मे होवे तथा द्वादश भाव मे सौम्य (शुभ) ग्रह होवे, एवम् केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थान ग्रहो से रहित न हो अर्थात् केन्द्र मे शुभग्रह बैठे हो तथा कारक ग्रह भी केन्द्रो मे स्थित हों तो यह बडा ही उत्तम योग माना गया है, अब क्रम से फल बताया जाता है कि अगर सूर्य केन्द्र मे हो तो राजकर्मचारी हो और चन्द्रमा क्रेन्द्र मे हो तो वैश्यवृत्ति करने वाला होवे, भौम केन्द्र में हो तो शस्त्रवृत्ति वाला तथा शूरवीर होवे, और बुध अगर केन्द्र में होवे तो अध्यापक हो, बृहस्पति अगर केन्द्र मे हो तो सदा अपने कर्म मे तत्पर एव दिव्य-बुद्धि वाला हो, अगर शुक्र केन्द्र गत हो तो विद्या और धन दोनों

से ही सम्पन्न रहे, और यदि शनि केन्द्र मे हो तो नीचो की सेवा करने वाला होवे ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

इति पुरुषराजयोगप्रकरण समाप्तम्

अथ स्त्रीराजयोगाः कथ्यन्ते

केन्द्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः
पापाः कलत्रे च मनुष्यराशौ ।
राज्ञी भवेत् स्त्री वहुकोशयुक्ता,
नित्यं प्रशान्ता च सुपुत्रिणी च ।६६।

जिस किसी स्त्री की जन्म कुण्डली मे यदि सम्पूर्ण सौम्य (शुभ) ग्रह केन्द्र स्थान गत होते हुए पृष्ठोदय राशि वाले हो एवम् पापग्रह मनुष्य राशि के होते हुए सप्तम स्थान मे वैठ जांय तो वह स्त्री वहुत से खजाने से युक्त रानी होवे तथा उसका स्वभाव शान्त हो और वह वहुत से पुत्रो से युक्त होवे ॥ ६६ ॥

वुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे
लाभस्थितो देवपुरोहितश्च ।
नरेन्द्रपत्नी वनिता प्रसंगे
तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥६७॥

जिस स्त्री के जन्माग मे उच्च राशि (कन्या) गत होता हुआ वुध लग्न मे होवे, वृहस्पति एकादशस्थ हो तो वह स्त्री स्त्रियो मे अग्रगण्या समस्त पृथ्वी पर विख्यात, एव राजरानी होती है ॥ ६७ ॥

एकोऽपि जीवो रसवर्गशुद्धः
केन्द्रे यदा चन्द्रनिरीक्षितश्च ।

राज्ञी भवेत् स्त्री सधना सपुत्रा
रूपान्विता पीननितम्बबिम्वा ॥९८॥

षड्वर्ग शुद्ध होता हुआ अकेला बृहस्पति ही अगर केन्द्र मे जिस स्त्री के जन्माग मे बैठा हो और वह चन्द्रमो करके देखा जाता हो तो वह पुत्र तथा धन से परिपूर्ण रूपवती रानी हो और उसका नितम्ब भाग बडा मोटा होवे ॥ ९८ ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतंगे,
जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा ।
विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना,
राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥९९॥

जिस स्त्री का जन्म लग्न तो कर्क हो और सूर्य सप्तम में बैठा हो और वह बृहस्पति करके देखा जाता हो तो वह स्त्री प्रधान रानी होवे और उसका शरीर सर्वांग परिपूर्ण होवे तथा विधाधरी के तुल्य स्वरूपवती एव शत्रुरहित पुत्र पौत्रवती हो ॥ ९९ ॥

षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव राज्ञी,
चतुर्भिरंशैश्च तथैकपत्नी ।
पंचादि भिर्देव विमान भाज,
स्त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ।१००।

जन्म समय के षड्वर्गों मे से तीन वर्ग जिस स्त्री के शुद्ध हों तो वह राजरानी हों और अगर चार वर्ग शुद्ध हों

त्रैलोक्य भर्तुः प्रमदा, इति पाठः पठ्येत चेच्छुद्धं स्यात् ।

तो ससार मे एक एक अद्वितीय प्रसिद्ध रानी हो, तथा पाच वर्ग यदि शुद्ध हो तो देव विमान पर आरोहण करने वाले त्रिलोकाधिपति की भार्या होवे ॥१००॥

लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च,
कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः ।
जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी,
ख्याता धरण्यां सकलैःस्तुता च ।१०१।

जिस स्त्री के एकादश भवन मे चन्द्रमा वैठा हो, तथा बुध के सहित शुक्र सप्तम भाव मे पडा हो और वह वृहस्पति से दृष्ट हो तो समस्त पृथ्वी पर सब लोगो से प्रशसित प्रसिद्ध रानी होवे ॥१०१॥

स्त्रीपुंसोर्जन्मफलं तुल्यं,
किन्त्वत्र जन्मलग्नस्थम् ।
तद्बलयोगाद्वपुराकृतिश्च,
सौभाग्यमस्तमये ॥१०२॥

स्त्री पुरुष सम्बन्धी भावो का फल जातक मे तुल्य ही कहा गया है, परन्तु फिर भी स्त्री के सौभाग्य (सुहाग, पति के दीर्घजीविता) का फल सप्तम भाव से और शरीर की सुन्दरता आदि आकृति का फल चन्द्र तथा लग्न से विचार करना चाहिये, अर्थात् चन्द्र तथा लग्न सौम्य ग्रहो से युक्त हो तो

अचतुरविचतुरे, यादिसूत्रेणाच प्रत्ययविधानात् स्त्री पुसयोरिन्येन शुद्धम् "स्त्री पु सोरितित्व शुद्धमेव" ।

सर्वदा सौभाग्यवती रहे अर्थात् विधवा न हो, तथा पाप ग्रहों से युक्त हो तो दुर्भगा होवे ॥१०२॥

*युग्मर्क्षेलग्नेन्द्वोःप्रकृतिस्था रूपशीलगुणयुक्ता
ओजे पुरुषाकारा दुःशीला दुःखिता चैव १०३

जन्म लग्न, तथा चन्द्रमा दोनो सम राशि के हो तो तो उस स्त्री के स्वभाव, शील, रूप गुण सब स्त्री के समान ही हो पुरुष के तुल्य न होवें और अगर लग्न तथा चन्द्रमा विषम राशि के होवे तो उस स्त्री के आकार स्वभाव, गुण, रूप आदि सव पुरुष के से हो हो और वह स्त्री दुश्चरित्र एव दुखित होवे १०३॥

+बाल्ये विधवा भौमे
पतिसन्त्यक्ता दिवाकरेऽस्तसंस्थे ।
सौरौ पापैर्दृष्टे,
कन्यैव जारं समुपयाति ॥१०४॥

अब वैधव्य योग बतलाया जाता है कि जिस स्त्री के जन्म लग्न से वा चन्द्रमा से मङ्गल सप्तम में पड़ा हो और पाप दृष्ट हो तो बालकपन मे ही विधवा होजाय, और लग्न वा

---

* किसी किसी पुस्तक मे "युग्मर्क्षे" इस पद्य से पहले 'स्त्रीपुंसोर्जन्मफल' पद्य की जगह पर—

"फलस्त्रीपुन्सयोस्तुल्य जातके किन्तु सप्तमे ।
सौभाग्य चन्द्रलग्नाच्च वपुराकृतिरुच्यते ॥

लिखा देखा जाता है ।

स्त्री जातकाध्याय वराहमिहिर कृत वृहज्जातक मे विस्तार से दिया गया है

+ किसी किसी लग्नचन्द्रिका की हस्तलिखित प्राचीन पुस्तको मे

चन्द्र से सप्तम में अगर सूर्य पडा हो तो पति करके छोड दी जाय, तथा जिसके जन्म लग्न वा चन्द्र से शनैश्चर सप्तम पडा हो और वह शनि पापग्रहो. से दृष्ट हो तो वह क्वारेपन मे ही अर्थात् अविवाहितदशा मे ही पर पुरुष के साथ व्यभिचार करने वाली होवे ॥१०४॥ इति स्त्रीजातकप्रकरण समाप्तम् ।

❀ इदानीमन्यविशेषफलान्युच्यन्ते ❀

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे भौमशुक्रबुधैर्युतः ।
यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥१०५॥

जिस पुरुष के जन्माङ्ग मे भौम, शुक्र, बुध इन तीन ग्रहों के साथ राहु स्वराशि का होता हुआ कर्म स्थान (दशम) मे स्थित हो, तो उसकी क्षणमे वृद्धि और क्षण मे नाश होता रहे ॥१०५॥

होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः ।
करोति दक्षिणं काणं वामनेत्रं च चन्द्रमाः १०६

जिसके सूर्य अपनी होरा मे बारहवी राशि मे स्थित हों तो उस पुरुष की दाँई आँख कानी हो जायगी, और अगर चन्द्रमा इसी तरह हो, तो बाँया नेत्र काना हो जायगा ॥१०६॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशय ॥१०७॥

अगर मङ्गल के क्षेत्र (राशि) मे बृहस्पति हो और बृहस्पति के क्षेत्र मे मङ्गल हो, तो वह उत्पन्न हुआ बालक बारह वर्ष की उम्र मे मर जाता है इसमे सन्देह नही ॥१०७॥

"कन्यैव जार समुपयाति" की जगह "कन्यैव जरा समुपयाति" ऐसा पाठान्तर भी देखने मे आया है ।

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ।।१०८

जिसके शनि के सहित भौम द्वितीय स्थान मे स्थित हो और तृतीय स्थान में राहु हो तो उस जातक का कोई भाई जीवित नही रहता ।।१०८।।

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ।।१०६

जब कि चतुर्थ गृह में राहु वैठा हो और चन्द्रमा षष्ठ या अष्टम स्थान मे स्थित हो तो वह जातक शिवजी से रक्षित हुआ भी शीघ्र मृत्यु ग्रस्त होता है ।।१०६।।

अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रः पापेन संयुतः ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ।।११०।।

जिस जातक के चन्द्रमा अष्टम हो और केन्द्र स्थान सब पाप ग्रहो से आक्रात हो तथा राहु चतुर्थ भवनस्थ हो तो वह एक वर्ष भर ही जीता है ।।११०।।

*पाताले चाम्वरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः
पितरं मातरं हंति देशाद्देशान्तरं व्रजेत् १११

अगर पाप ग्रह चतुर्थ, दशम तथा ग्यारहवे स्थान पर हों तो वह बालक अपने माता पिता का नाशक होता है और आप भी जगह जगह मारा देश देश में घूमता फिरे ।।१११।।

पंचमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः ।

---

* इह चतुर्थ चरणे—"देहाद्देहान्तर व्रजेत्" इति पाठान्तरमुल्लिखितं प्राप्यते, तदर्थस्तु-स्वयमपि प्राणैर्वियुक्तः स्यादिति ।

दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति ११२

अगर चन्दमा पचम मे स्थित हो और वृहस्पति त्रिकोण (नवम, पचम) मे होवे और मङ्गल दशम स्थान मे हो तो वह जातक पूर्णायु वाला होता है ॥११२॥

धनस्थाने यदा क्रूरः सहजे सप्तमे तथा ।
पञ्चमे भवने जीवो नीचजातस्तदा भवेत् ११३

यदि धन (द्वितीय) स्थान मे क्रूर (पाप) ग्रह होवे, और वृहस्पति तृतीय, सप्तम, या पञ्चम गृह मे स्थित हो तो वह जातक नीच से उत्पन्न हुआ जानना चाहिये ॥११३॥

लग्ने धने व्यये क्रूरो यदा मृत्यौ च जायते ।
विष्ठया मार्गवंधोऽस्य द्वादशाष्टमवासरे । ११४

जिसके कि क्रूर (पाप) ग्रह लग्न, दूसरे, बारहवे, आठवें स्थान मे आ पडे तो उस बालक की मृत्यु विष्ठा से गुदा मार्ग के रुक जाने के कारण आठवें या बारहवे दिन मे , होवे ॥११४॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः ।
अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति११५

जिसके जन्माङ्ग मे भौम छठे पड़ा हो, और राहु सप्तम स्थान मे होवे तथा शनि अष्टम भवन में बैठा हो तो उस पुरुष की स्त्री जीवित नही रहती ॥११५॥

तिथ्यन्ते च दिनान्ते च लग्नस्यान्ते तथैव च ।
चरराशौ यदा जातः सोऽन्यजातः शिशुर्भवेत्

जिस पुरुष का जन्म तिथि के अन्त मे हो, या दिन के अन्त मे, अथवा लग्नात मे होवे वह पुरुष पिता से उत्पन्न नही हुआ समझना, वल्कि अन्य पुरुष के वीर्य से उत्पन्न समझना ॥११६॥

रिपुस्थाने यदा चन्द्रो लग्नस्थाने शनैश्चरः ।
कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ११७

जिसके षष्ठ घर मे चन्द्रमा हो, और शनि लग्न मे होवे तथा भौम सप्तम भवन मे स्थित होवे तो उस बालक का पिता जीवित नही रहता ॥११७॥

बालस्य जन्मकाले चेदष्टमस्थः शनैश्चरः ।
पापदृष्टो नाशकःस्यादन्यथा क्लेशदायकः ११८

जिसके जन्मांग में जन्म लग्न से अष्टम स्थानस्थित शनिदेव हो और वह पाप ग्रहो से देखा जाता हो तो उस जातक बालक की मृत्यु हो और अगर अष्टमस्थशनि पापग्रहो से दृष्ट न हो तो उसको क्लेश होता है सद्यो मृत्यु नही होती ॥११८॥

क्रूरेदृष्टो जन्मलग्नात् षष्ठे वाप्यष्टमे बुधः ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युःशंकरो यदि रक्षति ॥११९॥

अगर जन्म लग्न से बुध षष्ठ या अष्टम स्थान मे स्थित हो तथा वह बुध पाप ग्रहों से देखा जा रहा हो तो ऐसीस्थिति में यदि उस बालक की शिवजी भी रक्षा करें तो भी वह चौथी वर्ष में मृत्यु को प्राप्त हो ॥११९॥

क्रूराश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ।
दारिद्र्ययोगं जानीया स्ववंशस्य क्षयंकरः१२०

जिसके चारो केन्द्रो में तथा द्वितीय स्थान मे भी क्रूर (पाप) ग्रह ही होवे तो वह जातक दरिद्री होगा और अपने वश का नाशक होगा ॥१२०॥

अथ आयुषो विचारः प्रस्तूयते—

लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्चरः ।
राहुश्च सहजस्थाने माता तस्य न जीवति १२१

जन्म लग्न मे वृहस्पति हो शनि दूसरे घर मे हो तथा राहु तृतीय स्थान में हो तो उस वालक की माता नही जीती है ॥१२१॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
नवमे भवने सूर्यःस्वल्पायु स्तस्य जायते ।१२२।

जन्म लग्न से सप्तम भवन मे भौम होवे,और अष्टम स्थान मे शुक्र होवे और नवम भवन में सूर्य होवे तो उस जातक की वहुत ही थोडी उम्र होती है ॥१२२॥

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।
स्मरे लग्नपतिः पापयुक्तो नश्येत्तदा शिशुः१२३

जिसके जन्माङ्ग मे जन्म लग्न मे क्षीण होता हुआ चन्द्रमा वैठा हो, तथा पाप ग्रह अष्टम तथा केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) गत हो एव पापग्रह के साथ लग्नाधिपत्ति सप्तम स्थान मे स्थित हो तो वह वालक मृत्यु को प्राप्त होवे ॥१२३॥

क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थः पापा लग्ने स्मरेऽष्टमे ।
शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति जातकः १२४

क्षीण चन्द्रमा वारहवें स्थान मे पडा हो, और पापग्रह जन्म लग्न में या सप्तम अष्टम में वैठे होवे तथा केन्द्र स्थान

मे कोई भी शुभ ग्रह न पडा हो तो वह बालक शीघ्र ही मृत्यु ग्रस्त हो ।।१२४।।

दशमस्थो दिवानाथः पापैर्बहुभिरीक्षितः ।
मेषबृश्चिककर्कस्य सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ।१२५।

जिसके जन्मांग मे सूर्य मेष, बृश्चिक या कर्क राशि का होता हुआ दशमस्थान मे आपडे तथा वह सूर्य बहुत से पापग्रहों से देखा जाता हो तो वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होवे ।।१२५।।

राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाथ चतुर्थगौ ।
त्रयोविंशे तदावर्षे पुत्रस्तातं विनाशयेत् ।

जिसके राहु और बृहस्पति षष्ठ स्थान में या लग्न मे वा चतुर्थ स्थान मे आ पडे तो उस बालक की जब तेईस वर्ष की अवस्था हो उस समय उसके पिता का देहान्त होवे ।।१२६।।

अष्टमस्थो यदा भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः ।
स शीघ्रमेव जातः स्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः

जब कि मगल अष्टम स्थान में होवे और सूर्य अपनी नीच राशि (तुला) का होकर त्रिकोण (नवम, पञ्चम) में बैठा हो तो वह जातक शीघ्र ही दुःखी होकर भीख माग कर अपनी जीविका का निर्वाह करे ।।१२७।।

सिंहे भौमस्तुले सौरिः कन्यायां च यदा सितः
मिथुने च यदा राहुर्जननी तस्य नश्यति १२८

जिसके जन्मांग मे सिंह राशि पर मगल बैठा हो, और शनि तुला राशि पर स्थित हो तथा कन्या राशि पर शुक्र हो, और मिथुन राशि पर राहु बैठा होवे तो उस जातक की माता नहीं जीती है अर्थात् उस बालक को मैया की मृत्यु हो ।।१२८।।

लग्ने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदि ।
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः १२९

जिसके क्रूर (पाप) ग्रह स्वराशि का होता हुआ लग्न तथा चतुर्थ वा दशम मे बैठा हो तो वह बालक बडे दुःख से जीवित रहता है ।। १२९ ।।

सप्तमे भवने भानुः कर्मस्थो भूमिनन्दनः ।
राहुर्व्यये च तस्यैव पिता कष्टेन जीवति १३०

जिसके जन्मांग मे सूर्य सप्तम मे, भौम दशम मे तथा राहु द्वादश स्थान मे पड जाय तो उस जातक (बालक) का पिता वडे कष्ट से जीवे अर्थात् उसके पिता को बडी भारी बीमारी होवे और वह जैसे तैसे बचे ।। १३० ।।

त्रिकोणकेन्द्रगाःपापाः शुभा रंध्रव्ययारिगाः ।
सूर्योदये प्रसूतस्य हरन्ति खलु जीवनम् १३१

जिसके पाप ग्रह तो त्रिकोण तथा केन्द्र मे होवे,और शुभ ग्रह अष्टम द्वादश तथा चतुर्थ स्थान मे स्थित हो और जन्म भी उसका सूर्योदय समय होवे अर्थात सूर्य लग्न मे बैठा हो तो ऐसी स्थिति मे स्थित ये सब ग्रह उस जातक के प्राणघाती होते हैं ।। १३१ ।।

स्मरे व्यये च सहजे मध्ये क्रूरा यदा ग्रहाः ।
तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत् १३२

जिसके क्रूर (पाप) ग्रह सप्तम,द्वादश,तृतीय और दशम स्थान मे बैठे हो तो उस बालक को कष्ट होवे ।। १३२ ।।

कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा

तत्रजातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम् ।१३३।

जिसके जन्माग मे राहु, शुक्र, मगल तथा शनि कन्या राशि मे हो तो इस योग मे उत्पन्न हुए जातक के कुवेर से भी अधिक धन होता है ॥ १३३ ॥

क्रूरलग्ने यदा जातस्तत्स्वामी क्रूरवेष्टितः ।
आमवातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ।१३४

जब कि क्रूर (पाप) ह जिसके जन्म लग्न मे पडा हो तथा लग्नेश क्रूर ग्रहो के साथ बैठा होवे तो उसको आमवात का रोग और उसके शरीर मे कष्ट रहे ॥ १३४ ॥

सहजे सहजाधीशो लग्ने पुत्रे धनेऽपि वा ।
जायते च तदा बालो यदि जातो न जीवति१३५

तृतीय भवन का अधिपति तृतीय स्थान मे या लग्न वा पचम मे तथा द्वितीय स्थान मे पडा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न हुआ बालक जीवित नही रहता ।

कन्यामिथुनगो राहुः केन्द्रे षष्ठे व्यये यदा ।
त्रिकोणे च यदा जातो दाता भोक्ता निरामयः

अगर राहु कन्या या मिथुन राशि का होता हुआ केन्द्र (१ । ७ । १०) मे या षठ, अष्टम, द्वादश, वा त्रिकोण (नवम पञ्चम) स्थित हो तो जातक पुरुष दाता, भोग भोगने वाला. एव नीरोग होवे ॥ १३६ ॥

एकः पापोऽष्टमस्थोऽपि शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् १३७

अगर एक ही पापग्रह शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम घरमे स्थित

होजाय और पाप ग्रहो से ही दृष्ट हो तो एक ही वर्ष मे बालक को मृत्यु देने वाला होता है ॥ १३७ ॥

भौमभास्करमंदाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा।
यमेन रक्षितोऽप्येवं वर्षमात्रं न जीवति १३८

जिसके जन्माग मे मङ्गल, सूर्य, शनि शत्रुक्षेत्री होते हुए अष्टम स्थान मे स्थित होवे तो ऐसे जातक की यम के रक्षा करने पर भी एक वर्ष मे ही मृत्यु हो जाती है ॥ १३८ ॥

वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् १३९

जिसकी जन्मकुण्डलिका मे शनि वक्री होता हुआ मगल की राशि (मेष, वृश्चिक) का होकर केन्द्र (१।४।७।१०) गत होवे या षष्ठ वा अष्टम स्थान मे स्थित हो और उस शनि को मगल बली होकर देखता हो तो वह शनि दो वर्ष मे ही बालक को मार देता है ॥ १३९ ॥

राहौ वृषे त्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये।
दृष्टे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं स जीवति १४०

जिसके जन्मांगमे वृष राशिमें बैठा हुआ राहु तीनग्रहो से देखा जाता हो और चौथे केतु से देखा जाता हो एव बृहस्पति शुक्र से भी देखा जाता हो तो वह बालक बहुत वर्ष तक जीवे ॥

चन्द्रेण मंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मी नैव विमुञ्चति १४१

जिसके जन्म समय मे चन्द्रमा के सहित मगल पडा हो तो उस बालक के घर को लक्ष्मी नही छोड़ती ॥ १४१ ॥

षष्ठाष्टमेऽपि चंद्रः सद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ।
अष्टाभिःशुभसंदृष्टैर्वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥१४२॥

जिस जातक के जन्म लग्न से छठे या आठवें घर चन्द्रमा होवे और वह पाप ग्रहो से देखा जाता हो तो उस बालक की शीघ्र मृत्यु होती है, और षष्ठ या अष्टम स्थान पर स्थित हुआ चन्द्रमा पाप ग्रहो से न देखा जाता हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो बालक की आठवी वर्ष में मृत्यु होगी, तथा षष्ठाष्टम स्थानस्थित चन्द्रमा शुभ तथा पाप दोनो ही ग्रहो से देखा जाता हो तो चार वर्ष मे बालक की मृत्यु होवेगी, अगर षष्ठाष्टमगत चन्द्रमा किसी से न देखा जाता हो तो यह योग ही नही होता ॥१४२॥

***शुक्लपक्षे निशायां च कृष्णजातो दिवा यदा ।**
षष्ठाष्टमगतश्चंद्रो न शिशुं हन्ति तातवत्१४३

शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म होवे और कृष्णपक्ष मे दिन का जन्म हो और चन्द्रमा लग्न मे षष्ठ या अष्टम स्थान मे पडा हो तो ऐसा योग युक्त चन्द्रमा बालक की मृत्यु नही करता, अपितु पिता की तरह उस बालक की रक्षा करता है ॥ १४३ ॥

() लग्ने त्रिकोणे द्यूने चव्यये पापयुतःशशी ।

---

* एतत्समानार्थक पद्य वराहमिहिरेणाप्युक्तम् तथाहि—
पक्षेसिते भवति जन्म यदि क्षपायाम् ॥
कृष्णे तथाऽहनि शुभाशुभदृश्यमान. ॥
त चन्द्रमा रिपुविनाशगतोऽपि यत्ना—
न्मृत्यो स रक्षति पितेव शिशु न हन्ति ॥ ल. जा. ॥

() सप्ताष्टान्त्यो दयगे शशिनि सपापे शुभेक्षणवियुक्ते ।
न च कण्टकेऽस्ति कश्चिच्छुभस्तदा मृत्युरादेश्यः ॥ १ ॥

शिशुं हन्ति न दृष्टश्चेद्बलवाद्भिःशुभैर्ग्रहै १४४

अगर पाप ग्रह से युक्त होता हुआ चन्द्रमा लग्न मे त्रिकोण ५ । ६ मे तथा सप्तम द्वादश स्थानो मे से किसी भी स्थान मे स्थित हो, तथा किसी वलवान् शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो वालक की मृत्यु करता है ॥१४४॥

+सप्तमे चतुरस्रे च पापयुग्मान्तरे ,स्थितः ।
करोतिचन्द्रमा नाशं वालकस्य न संशयः १४५

जिस वालक के दो पाप ग्रहो के वीच मे होता हुआ चन्द्रमा लग्न से सप्तम चतुर्थ या अष्टम स्थान मे स्थित हो तो नि सन्देह उस वालक की मृत्यु होती है ॥१४५॥

*क्षीणचन्द्रो यदालग्ने पापाःकेन्द्रेषु संस्थिताः।
अष्टमे भवने वापि तदा मृत्युःशिशोर्भवेत् १४६

+ चतुरस्रे सप्तमग पापान्तस्थ शशी मरणदाता ।
उदयगतो वा चन्द्रः सप्तमराशिस्थितैं पापै. ॥२॥

प्रथमपद्यार्थ —"सप्तमाष्टद्वादशानामेकतमेऽपि स्थाने लग्ने वा चद्रः पापग्रहयुतो भवति शुभग्रहेण वुधगुरुशुक्राणामेकतमेनाऽपि च न दृश्येत, न च युक्त न च केन्द्रे पु शुभग्रह कश्चिदेवविधे योगे जातस्य मरणमादेश्यम्' इति भट्टोत्पल. ॥

द्वितीयस्यार्थ.—स्पष्ट एव, अस्त्रे अष्टमे पापान्त स्थ —पापा— नामन्तर्मध्ये तिष्ठतीति पापान्त , स्थ , उदयगत —लग्नगत' इति ।

*क्षीणेन्दौ द्वादशगे लग्नाष्टमराशिसस्थितै' पापै ।
सौम्यरहितैश्च केन्द्रैं सद्यो मृत्युर्विनिर्देश्य ॥

यस्य जन्मलग्नाद् द्वादशस्थाने क्षीणचन्द्रो भवति, लग्नेऽष्टमगृहे वा पापग्रहा. स्यु. केन्द्राणि शुभग्रहरहितानि भवेयुस्तदा शिशोर्मरणं सद्यो ज्ञेयम् इत्यर्थः ॥

जिसके जन्म लग्न मे चन्द्रमा क्षीण होकर पडा हो, और पापग्रह केन्द्र स्थानो (१ । ४ । ७ । १०) मे पडे हो अथवा अष्टम स्थान मे हो तो उस बालक की मृत्यु होती है ।।१४६।।

शनि राहुकुजैर्युक्तः सप्तमे भवने शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् १४७

शनि राहु और मगल से युक्त चन्द्रमा अगर सप्तम स्थान मे बैठा हो तो सात दिन वा सात मास मे बालक की मृत्यु होवे ।।१४७।।

*** न पश्यति शशी लग्नं मध्ये वा सौम्यशुक्रयोः**
ताते परोक्षे जन्मास्य भौमेऽस्ते वा यमेतनौ।१४८

अगर चन्द्रमा जन्म लग्न को न देखता हो अथवा बुध और शुक्र के मध्य में ही बैठा हुआ हो, या मगल ही सातवे स्थान मे बैठा हो, अथवा जन्म लग्न मे शनि बैठा हो तो उस बालक का जन्म पिता के परोक्ष मे हुआ समझना ।।१४८।।

लग्नस्थश्च यदा भानुः पञ्चमस्थो निशाकरः ।
अष्टमस्था यदा पापा स्तदा जातो न जीवति

(*) चन्द्रे लग्नमपश्यति मध्ये वा शुक्रसौम्ययोश्चन्द्रे ।
जन्म परोक्षस्य पितुर्यमोदये वा कुजेवाऽस्ते ।।
यमः शनि—
"यमोऽन्यलिङ्गो यमजे ना काके शमने शनौ ।
शरीरसाधनापेक्षनित्यकर्मणि सयमे" इति—
मेदिनीप्रमाणत् ।

ग्रहाणा नामान्तराणि तु बृहज्जातकादिग्रन्थेभ्यो ज्ञेयानि ज्ञात्रा विस्तरभिया लिख्यन्ते ।। इति ।।

जिस जातक के जन्माङ्ग मे सूर्य लग्न मे हो, और चन्द्रमा पंचम मे पडा हो और पाप ग्रह अष्टम स्थान मे स्थित हो तो वह वालक नही जीता है ॥१४९॥

त्रिकोणकेन्द्रगाः पापाः सौम्याःषष्ठव्ययाष्टगाः ।
सूर्योदये संप्रसूतःप्राणांस्त्यजति बालकः ।१५०

त्रिकोण (९ । ५) या केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) मे तो पाप ग्रह हो और षष्ठ, द्वादश तथा अष्टम स्थान मे सौम्य (शुभ) ग्रह होवे और सूर्योदय के समय जन्म हुआ हो तो बालक प्राण त्याग देता है अर्थात् जीवित नही रहता ॥१५०॥

लग्ने षष्ठेऽष्टमे द्यूने शनियुक्तो यदा कुजः ।
शुभग्रहैरदृष्टश्च शिशुं हन्ति न संशयः।१५१।

शनि से युक्त मगल यदि लग्न मे या छठे आठवे तथा सप्तम मे स्थित हो और शुभ ग्रहो से देखा जाता न हो तो नि.सन्देह उस वालक की मृत्यु होती है ॥१५१॥

षष्ठाष्टमे कर्कराशौ चन्द्रदृष्टो भवेद्बुधः।
चतुर्भिर्वत्सरैर्बालं मारयत्येव निश्चितम् ।१५२।

जिसके जन्माग मे या चन्द्रमा से देखा जाता हुआ बुध कर्क राशि का होकर षष्ठ या अष्टम स्थान मे वैठा होवे तो निश्चय ही उस जातक की चार वर्ष मे मृत्यु हो जाती है ॥१५२॥

दृष्टोसूर्येन्दुमन्दारैर्न दृष्टो भृगुणा गुरुः ।
वर्षैस्त्रिभिःशिशुं हंति भौमगेहेऽष्टमे स्थितः।१५३

वृहस्पति मंगल की राशि (मेष. वृश्चिक) का होकर अष्टम स्थान में स्थित हो और वह वृहस्पति सूर्य, चन्द्र, शनि तथा

मंगल से देखा जाता हो तथा शुक्र से देखा जाता न हो तो, तीन वर्षों मे ही बालक को मृत्यु हो जाती है ।।१५३।।

कर्के सिंहेऽष्टमे षष्ठे व्यये च भृगुनन्दनः ।
सर्वैर्दृष्टोशुभैर्बालं षड्भिर्वर्षैं विनाशयेत् ।१५४।

कर्क या सिह राशी का होकर शुक्र छठे आठवे, बारहवे इन तीनो स्थानो मे से किसी भी स्थान मे बैठा हो और समस्त शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो छ वर्ष मे उस बालक की मृत्यु हो जाती है ।।१५४।।

लग्ने शनिः पापदृष्टो हन्ति षोडशवासरैः ।
पापयुक्तश्च मासेन शुद्धो वर्षेण बालकम् १५५

लग्न मे स्थित होता हुआ शनि यदि पापग्रहो से देखा जाता हो तो बालक की सोलह दिन में ही मृत्यु हो जाती है, और अगर वही शनि उक्त स्थान में स्थित होता हुआ पाप ग्रहो मे युक्त हो तो १ मास मे बालक की मृत्यु होवे, और यदि शुद्ध (शुभ) ग्रहों से युक्त हो तो एक वर्ष मे मृत्यु हो ।।१५५।।

स्वगेहे गुरुगेहे वा तुलालग्ने शनिः स्थितः ।
सूर्ये मङ्गलमध्ये वा नायुर्हन्ति कदाचन ।१५६।

अगर शनि स्वराशि (१०।११) वा गुरु राशि (६।१२) या तुला लग्न मे स्थित हो अथवा सूर्य मंगल के बीच में पड़ा हो तो आयु का नाश नही करता है ।।१५६।।

केन्द्रे राहु पापदृष्टो दशभिर्हन्ति वत्सरैः ।
बालं द्वादशभिःकश्चित् कश्चित् षोडशभिर्वदेत्

अगर राहु केन्द्र मे स्थित होता हुआ पाप ग्रहो से देखा जाता हो तो दश वर्ष मे बालक की मृत्यु हो'-ऐसा कोई आचार्य कहते हैं और कोई आचार्य कहते है कि-१२ वर्ष मे तथा दूसरे आचार्य कहते हैं कि १६ वर्ष मे मृत्यु होवे ।।१५७।।

जन्मलग्नपतिः षष्ठे व्यये मृत्यौ च तिष्ठति ।
अस्तंगतो मृत्युकरो राशितुल्यैश्च वत्सरैः १५८

जिसके जन्म लग्नाधिपतिग्रह छठे, बारहवें या आठवे स्थान मे स्थित हो तो राशि की सख्या तुल्य वर्षो मे मृत्यु होवे ।।१५८।।

सौम्याः षष्ठेऽष्टमे पापैर्वक्रीभूतैर्विलोकिताः ।
शुभैरदृष्टा मासेन मारयन्त्येव बालकम् ।१५९।

शुभ ग्रह षठ या अष्टम स्थान मे स्थित हो और वक्र हुए पाप ग्रहो से देखे जाते हो और शुभ ग्रह कोई उनको देखता न हो तो एक मास मे ही बालक की मृत्यु होजाती है ।।१५९।।

उदितो यत्र नक्षत्रे केतुर्यस्तत्र जायते ।
रौद्रे मुहूर्ते सोऽप्येव स च प्राणैर्वियुज्यते १६०

जिस नक्षत्र पर केतु उदय हो वह मुहूर्त रौद्र कहाता है । उस मुहूर्त मे जिसका जन्म होय वह शीघ्र मरण को प्राप्त होता है ।।१६०।।

मेषे वृषे च कर्के च सर्वापद्भयो हि रक्षितः ।
सिंहिकातनयो बालं प्रियं पुत्रं यथा पिता १६१

जब कि राहु मेष, वृष, कर्क राशियो पर बैठा हो तो उस बालक को सब बाधाओ से बचाता रहता है । जिस

तरह कि बालक की सब आपत्तियो से पिता रक्षा करता रहता है ॥१६१॥

षष्ठे तृतीये लाभे च स्थितः सम्पत्तिकारकः ।
राहुः सर्वापदां हन्ता स्वगृहे च विशेषतः १६२

छठे, तीसरे वा ग्यारहवे स्थान मे राहु बैठा हो तो सब सपत्ति का देने वाला होता है तथा सब बाधाओ से बचाता रहता है, और अगर वही राहु स्वराशि का होता हुआ उक्त स्थानो मे बैठ जाय तो विशेष फल देने वाला होता है ॥१६२॥

चन्द्रः पापग्रहैर्युक्तश्चन्द्रो वापापमध्यगः ।
चन्द्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् १६३

अगर चन्द्रमा पाप [क्रूर] ग्रहो से युक्त होवे, या पाप ग्रहो के बीच मे पडा हुआ हो या चन्द्रमा से सप्तम स्थान पर पाप ग्रह पडजाय तो वह जातक की माता का नाश करने वाला होता है ॥१६३॥

सूर्यः पापेन संयुक्तस्तदा पितृवधो भवेत् ।
लग्नं पापेन संयुक्तं लग्नं वा पापमध्यगम् १६४

सूर्य अगर पाप ग्रहों से युक्त हो या लग्न पाप ग्रहो से आक्रान्त या पाप ग्रहों के मध्य मे होवे तो जातक के पिता का मरण होता है ॥१६४॥

लग्नात्सप्तमगाः पापास्तदा चात्मवधो भवेत् ।
अपकर्मा तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति १६५

जिसके लग्न से सप्तम स्थान पर पाप ग्रह हो तो उस बालक की मृत्यु होती है और वह कुकर्मी होता है, तथा सात

वर्ष ही केवल जीता है और अपने आप अपनी आत्म हत्या करके मरता है ॥१६५॥

अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः।
मन्दाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते १६६

जिसके जन्माग मे आठवे शनि पडा हो, तथा जन्मस्थान पर चन्द्रमा बैठा हो तो वह जातक मन्दाग्नि से युक्त हो एव उदर रोगी तथा देह से विकल (अङ्गहीन) हो ॥१६६॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः।
द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते १६७

जिस जातक के शनि के क्षेत्र मे तो सूर्य हो, और सूर्य के क्षेत्र मे शनि होवे तो उस बालक की मृत्यु बारहवी वर्ष मे होती है ॥१६७।

बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठे वा यदि तिष्ठतः।
तस्करो घोर कर्मा च हस्तपादौ विनश्यतः१६८

बुध और मगल लग्न मे या छठे स्थान मे पडे हो तो ऐसे जन्माग वाला जातक बुरे कर्म करने वाला तथा चोर होता है और उसके हाथ पैर नष्ट हो जाते हैं ॥१६८॥

षष्ठेऽष्टमे च मूर्तौ च शनिक्षेत्रे यदा बुधः।
पापाक्रान्तश्चतुर्वर्षैर्मारयत्येव बालकम् ।१६९।

शनि की राशि का होता हुआ बुध अगर षष्ठ अष्टम, व लग्न मे आ पडे, अथवा पापग्रहो से युक्त हो तो बालक की चार वर्ष मे ही मृत्यु होती है ॥१६९॥

अष्टमस्थो यदा राहुःकेन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः।

सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ।१७०।

जिसके जन्माग मे आठवें राहु बैठा हो और केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) मे चन्द्रमा पडा हो तो उस बालक की शीघ्र मृत्यु होती है ॥१७०॥

सप्तमे भवनै राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः। १७१।

जिसके शत्रु क्षेत्री होकर राहु सप्तम स्थान मे बैठा हो, तो इसमे सन्देह नही कि उस बालक की मृत्यु सोलहवी वर्ष मे अवश्य होती है ॥१७१॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः
पापः स्यादष्टमे गृहे
एकमासे भवेन्मृत्यु--
स्तस्य बालस्य निश्चितम् ॥१७२॥

बारहवें चन्द्रमा बैठा हो और पाप ग्रह अष्टम में पड़ा हो तो उस जातक की मृत्यु एक मास के ही अन्दर हो जाती है ॥१७२॥

जन्मस्थाने यदा राहुः
षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः ।
अपस्मारी तदा बालो
जायते नात्र संशयः ॥१७३॥

जिसके जन्म स्थान मे राहु हो और छठे स्थान में चन्द्रमा पड़ा होवे तो उस बालक के अपस्मार (मृगी) रोग

निश्चय होता है ।

भार्गवेण युतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमगतो भवेत् ।
मन्दाग्निकुक्षिरोगी च हीनांगोऽपि च बालकः

जिसके शुक्र से युक्त होता हुआ चन्द्रमा छठे या आठवे स्थान मे आपडे तो वह बालक उदर मे मन्दाग्नि वाला, कूखि का रोगी तथा अ ग भ ंग होवे ।। २७४ ।।

षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तस्तु तिष्ठति ।
विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते १७५

बुध से युक्त होता हुआ चन्द्रमा अगर षष्ठाष्टमस्थान स्थित हो, तो उस वालक की मृत्यु विष (जहर) के दोष से होती है ।। १७५ ।।

भानुना संयुतश्चन्द्रः षष्ठाष्टमगतो यदा ।
राजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ।१७६।

जिसके सूर्य से युक्त होता हुआ चन्द्रमा षष्ठाष्टम स्थान पर बैठ जाय तो उस जातक की मृत्यु राजा से वा सिंह से होती है ।। १७६ ।।

एकोऽपि यदि मूर्तौ स्याज्जन्मकाले दिवाकरः ।
स्थानहीनो भवेद्बालः शोकसंतापपीडितः १७७

जिसके जन्माग मे अगर लग्न मे एक सूर्य ही हो तो वह जातक स्थानभ्रष्ट, एव शोक और सन्ताप से दु.खी हो ।। १७७ ।।

दशमस्थो यदा भौम,
शत्रुक्षेत्रे स्थितस्तदा ।

म्रियते तस्य बालस्य,
पिता शीघ्रं न संशयः ॥१७८॥

जिसके शत्रु क्षेत्री होता हुआ भौम दशम भाव मे बैठा हो तो उस बालक के पिता की मृत्यु निःसन्देह शीघ्र ही होती है ॥ १७८ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रयुक्तो हि तिष्ठति ।
दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् १७९

जिसकी जन्म कुण्डली मे चन्द्रमा से युक्त होता हुआ राहु लग्न या अष्टम स्थान में स्थित हो तो उस बालक की दश-दिन में नि सन्देह मृत्यु होती है ॥ १७९ ॥

शनैश्चरस्तुलाकुम्भे मकरे यदि जायते ।
लग्नेष्टमे तृतीये वा तदारिष्टं न जायते १८०

जिसके शनि तुला, कुम्भ, मकर, राशि मे होवे या लग्न, अष्टम वा तृतीय स्थान मे होय तो उस जातक को अरिष्ट नही होता ॥ १८० ॥

लग्नाच्च नवमे सूर्ये सूर्यपुत्रे तथाष्टमे ।
एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति १८१

जिसकी जन्मपत्रिका मे लग्न से नवम स्थान मे सूर्य पड़ा हो, तथा अष्टम मे शनि पडा हो, एव एकादश मे शुक्र बैठा हो तो उस बालक की आयु एक महीना की भी नही होती ॥ १८१ ॥

धने गुरुः सैंहिकेयो,

भौमः शुक्रश्च सप्तमे
अष्टमे रविचंद्रौ च-
म्लेच्छः स्याद्यौवने ध्रुवं ।१८२।

जिसके दूसरे स्थान मे तो गुरु और राहु पडे हो तथा भौम, शुक्र सप्तम मे पडे हो, और अष्टम मे सूर्य और चन्द्रमा होवे तो वह निश्चय ही युवावस्था मे मुसलमान होजाता है ॥ १८२ ॥

नवमे दशमे चन्द्रःसप्तमे च यदा सितः ।
पापे पातालसंस्थे च वंशक्षयकरोनरः ॥१८३॥

जिसके चन्द्रमा नवम या दशम स्थान पर होवे, और शुक्र सप्तम स्थान मे पडा हो तथा पाप ग्रह चतुर्थ स्थान मे बैठा हो तो वह बालक वंश का नाश करने वाला होता है १८३

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शनिः ।
सलोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ।१८४।

जिसके बृहस्पति भ्रातृ (तृतीय) स्थान मे हो, और शनि लाभ (११) मे स्थित हो तो वह बालक ससार मे घर मे बैठा हुआ कुलदीपक होता है ॥ १८४ ॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पंचमे च निशाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुःस जातःकुलदीपकः १८५

जिस जातक के भौम, सिंह लग्न मे होवे, तथा चन्द्रमा पचम मे होवे और राहु बारहवे पडा हो तो वह कुलदीपक पुरुष होता है ॥ १८५ ॥

एकः पापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले ।

जायते चद्विनालाभ्यां सजातःकुलदीपकः१८६

जिसके एक पापग्रह लग्न में पडा होवे और एक ही पाप-ग्रह चतुर्थ स्थान में बैठा होवे तो वह बालक दो नाल से पैदा होवे और कुल मे श्रेष्ठ होवे ॥ १८६ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमःपंचमे च दिवाकरः ।
जीवेदरण्यमध्येऽपि विख्यातःस न संशयः१८७

जिसके जन्माग में लग्न वा सप्तम में मगल हो और पचम मे सूर्य पडा हो तो वह बालक घोर जंगल (डांग) मे क्यो न पैदा हो तो भी जीवित रहे और वडा प्रसिद्ध होवे ॥ १८७ ॥

अथ गण्डयोगः—

१-आदौमूलमघाश्विन्यां तिस्रःस्युर्गण्डनाडिकाः
ज्येष्ठाऽऽश्लेषारेवतीनामन्तेपंच चनाडिकाः१८८

मूल, मघा, और अश्विनी इन तीन नक्षत्रो की आदि की तीन २ घडी गण्डान्त मानी जाती है। तथा ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती इनतीन नक्षत्रो की अन्त की पाच २ घडी गण्डान्तहोती है ।१८८।

(१) एतन्नक्षत्रगण्डान्त मुहुर्तचिन्तामणौ त्वेवमुक्तम् तथाहि-
"ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्म च मूलाश्विनी–पित्र्यादौ घटिकात्रय निगदित तद्भस्य गण्डान्तकम्" इत्यादि । पीयूषधारा-यान्तु—नक्षत्रगण्डान्तमन्यैर्मुनिभिरेवमुक्तमित्युपक्रम्य—
"अश्विनीमघमूलादौ त्रिषट्कनवनाडिका ।
रेवतीसार्पशाक्रान्ते मासाश्च ऋतुसायका ।
अश्विनीमघमूलादौ नाडिकाद्वितय तथा ॥
रेवतीसार्पशाक्रान्ते नाडिकाद्वितय तथा" ॥

इति पद्यद्वयं प्रदर्शितम्

अथ गण्डान्तफलम्—

॥सन्ध्यारात्रिदिवाभागे गण्डयोगे ध्रुवं शिशुः।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम्॥१८९

सन्ध्या [साय] काल के गण्ड योग मे अगर बालक उत्पन्न हुआ हो तो अपने को ही नष्ट करता है, और अगर रात्रि मे पैदा हो तो माता को, तथा दिन मे उत्पन्न हो तो पिता का नाश करता है ॥१८९॥

यात्रायां स्याच्चौरभयं विवाहे मृत्युरेव च ।
जननीपितरौ हन्ति वदत्येवं बृहस्पतिः ॥१९०॥

अस्मत्पितृचरणा वेदवेदान्ताचार्य म म श्री चिरजीलाल-शर्म्मिमिश्रमहोदयास्तु—

"अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिका ।
रेवतीसार्पशाक्रान्ते मासरुद्ररसास्तथा ॥

इति तल्लक्षण वदन्त श्रुता ।

वर्तमानपूज्यवृद्धविद्वज्जनमुखेभ्योऽपीदमेव पद्य विशेषत श्रूयते ।

इत्येवमत्र मतभेद.

॥ दिवाजातस्तु पितर रात्रौ तु जननी तथा—
आत्मान सन्ध्ययोर्हन्ति ततो गण्ड विवर्जयेत् ॥ इति नारदसहिता च ।

एतत्फल रत्नमालायामप्युक्त तथाहि—

"पौष्णाश्विन्यो. सार्पपित्र्यर्क्षयोश्च
यच्च ज्येष्ठामूलयोरन्तरालम् ।
तद्गण्डान्त स्याच्चतुर्नाडिकहि
यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥"

नारदोऽप्याह—उग्र सन्धित्रितयज गण्डान्तत्रितयं महत् ।
मृत्युद जन्मयात्रादिविवाहस्थापनादिषु । इति ।

यदि इस गण्डान्त योग मे यात्रा की जाय तो चोरो का भय होवे और विवाह मे मृत्यु, बालक की उत्पत्ति हो तो उस जातक के माता पिता की मृत्यु हो जाती है ऐसा वृहस्पतिजी कहते हैं ॥१९०॥

अथ गण्डान्तशान्ति —

गण्डेऽरिष्टं चंदनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा ।
घृतेन मिश्रितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्ततः १९१
सहस्रशीर्षमन्त्रेण बालकं स्नापयेद्बुधः ।
पितृयुक्तं दिवाजातंमातृयुक्तं च रात्रिकम् १९२
स्नापयेत्पितृमातृभ्यां सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
कांस्यपात्रं घृतैःपूर्णं दद्याद्गण्डोपशान्तये१९३।
कृष्णां धेनुं सुवर्णं च ग्रहजाप्यं च कारयेत् ।
आश्लेषायां च मूलेऽपि*शांतिरेवं विधीयते१९४

* तदुक्त रामाचार्येण—

गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे ।
सक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ॥
वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ ।
विष्टौ सोदरभे जनिर्न पितृभे शस्ता शुभा शान्तितः ।
सर्वोऽपि नक्षत्रगण्डान्तादिशान्तिविधिस्तु विस्तरत.
गण्डशान्ति प्रवक्ष्यामि सोममन्त्रेण भक्तिमान् ।
कास्यपात्र प्रकुर्वीत पलै षोडशभिर्नवम्"
इत्यादिपद्योक्तदिशा तद्विधि. ओडछाऽधिपतिवुन्देलराजश्रीवीरसिंह-
देवसमर्चितपादपद्म—यवनसम्राडकब्बरसमकालिकासान्नाढयकुल—

अब गण्डान्त के दोष की निवृत्ति के लिये शान्ति बताते है कि अरिष्ट (नीम) "अरिष्टो लशुने निम्बे फेनिले काक कङ्कयो' इति मेदिनी। चन्दन कुष्ठ, गोरोचन इन चारो चीजो को घी में मिलाकर चार कलशो मे भरले फिर उस कलश मे रक्खे हुए सामान से आचार्य "सहस्रशीर्षा" इत्यादि वैदिक मन्त्रो से बालक को स्नान करावे अगर बच्चा दिन मे पैदा हुआ हो तो पिता सहित बालक को स्नान करावे, और अगर रात्रि मे उत्पन्न हो तो माता के सहित स्नान करावे, तथा दोनो सन्ध्या (प्रातःकाल सायकाल) मे हुआ हो तो माता पिता दोनो के सहित स्नान करावे और उसी दिन गण्डान्त की शान्ति के निमित्त घी से भरे हुए कास्यपात्र का दान करे, कृष्ण धेनु, सोना दान करे, तथा किसी ब्राह्मण के द्वारा ग्रह का जाप करावे। इसी तरह आश्लेषा तथा मूल नक्षत्र मे पैदा हुए बालक की भी शांति करानी चाहिये ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

कमलदिवाकरमहामहोपाध्यायश्रीमित्रमिश्रमहोदयैर्धर्मशास्त्रनिबन्ध-मूर्धन्यलक्षद्वयमितवीरमित्रोदयस्य शातिप्रकाशे प्रदर्शितस्तद्दिदृक्षुभि-स्तत्रैवावलोकनीय, नात्र विस्तरभिया प्रतन्यते।

"मार्गफाल्गुनवैशाखज्येष्ठे मूल रसातले ॥
माघाश्विननभस्येषु शुचौ मूल सुरालये।
पौषश्रावणचैत्रेषु कार्तिके भूमिसंस्थितम् ॥
भूमिष्ठ दोषबहुलस्वल्पमन्यत्र सश्रितम्"।

इति ज्योतिषार्णववाक्यात्

"वृषालिसिंहेषु घटे च मूल दिविस्थित युग्मतुलागनान्त्ये।
पातालगं मेषधनु कुलीरनक्रेषु मृत्याविति सस्मरन्ति,,
"स्वर्गं मूल भवेद्राज्य पाताले च धनागम।
मृत्युलोके यदा मूल तदा शून्य समादिशेत्"

इति ज्योतिषरत्नवचनाच।

स्वर्गपातालनिवासित्वेन मूलदोषस्याऽभावाच्छान्त्यभाव एव तथापि तत्रापि यथाशक्ति शातिक विधेयमेव।

अथ शुभाशुभयोगाः—

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते ।
न वा शशांकं रविणा समन्वितम् ।।
सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी
परेण जातं प्रवदन्ति निश्चितम् ।१६५

जार से उत्पन्न हुए मनुष्य को जन्मांग द्वारा कैसे जाना जाता है इसको बतलाते है कि अगर बृहस्पति जन्म लग्न और चन्द्र राशि को न देखे तो उस जन्म कुण्डली वाले बालक को जार से उत्पन्न हुआ समझना। तथा सूर्य और चन्द्रमा एक राशि पर ही बैठे हो और उन्हे बृहस्पति जी देखते न हो तो जारोत्पन्न समझना, या सूर्य के सहित चन्द्रमा एक ही राशि पर बैठे हो और उसी राशि पर शनि मगल पाप ग्रह भी बैठे हो तो भी उस जातक को जारजात समझना चाहिये ।। १६५ ।।

गुरुक्षेत्रे गते चंद्रे तद्युक्ते वाऽन्यवेश्मनि ।
न द्रेष्काणे नवांशे वा जायते च परेण सः१६६

जिस जन्म कुडली मे गुरु के क्षेत्र (राशि) मे चन्द्रमा बैठा हो, अथवा चन्द्रमा बृहस्पति के साथ किसी अन्य स्थान में बैठा हो और वह चन्द्रमा द्रेष्काण या नवांश मे न हो तो उस बालक को जारजात समझना चाहिये ।। १६६ ।।

भौमक्षेत्रे यदा जीवे मूर्तौ क्रूरग्रहो भवेत् ।
वर्षमध्ये भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ।१६७।

अगर मगल के क्षेत्र (मेष, वृश्चिक) मे बृहस्पति बैठा हो

तथा क्रूर ग्रह लग्न मे वैठे हो तो निश्चय ही उस वालक की मृत्यु वर्ष भीतर ही हो जाती है ॥ १९७ ॥

क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थो दुःखदःपापवीक्षितः ।
करोति विपुलं क्लेशमष्टमस्थो यदा शनिः१९८

जवकि चन्द्रमा क्षीण होता हुआ वारहवे पडा हो और उसे पाप ग्रह देखते हो तो वह दुःख दायक होता है तथा अष्टम में स्थित हुआ शनि भी विपुल क्लेश देता है ॥ १९८ ॥

द्वादशे च यदा चन्द्रः षष्ठे पापग्रहो भवेत् ।
अल्पायुश्च सदा रोगी जायते जातको ध्रुवम्१९९

जिसके जन्माग म वारहवे चद्रमा होवे, और छठे पाप ग्रह होवे तो वह वालक निस्सदेह हमेशा रोगी रहे और अल्पायु वाला होवे ॥ १९९ ॥

दशमे भवने राहुः पितृमात्रोः प्रपीडकः ।
द्वादशे वत्सरे तस्य जातस्य मरणं ध्रुवम् ।२००।

जिसके दशम भवन मे राहु पडा होवे तो वह वालक माता पिता को कष्ट देने वाला होता है । और वारहवे वर्ष मे उस वालक की भी मृत्यु निश्चय होजाती है ॥ २०० ॥

रिपुस्थाने यदा पापो व्ययस्थाने च चन्द्रमाः ।
चतुर्थे मंगलो यस्य माता तस्य नजीवति २०१

जिसके छठे स्थान मे पाप ग्रह हो, और चन्द्रमा वारहवे पडा हो, और चौथे मङ्गल पड़ा हो तो उसकी माता नही जीती ॥ २०१ ॥

लग्नस्थाने यदा सौरिःशत्रुस्थाने च चन्द्रमाः ।

कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति २०२

जिस के लग्न मे शनि बैठा हो, स्थान मे चन्द्रमा पड़ा हो और सप्तम मे मगल होवे तो उसका पिता नही जीता है ॥२०२॥

चतुर्थे मातृहा पापो दशमे पितृहा भवेत् ।
सप्तमे भवने पापः पितृमात्रोर्विनाशकः २०३

अगर पाप ग्रह चौथे घर मे पड़ा हो तो माता का नाश करता है, और अगर दशम स्थान मे पड़ा हो तो पिता को मारता है, और जब कि सप्तम मैं पाप ग्रह बैठा हो तो माता पिता दोनो का नाश करे ॥ २०३ ॥

द्वादशे रिपुभावे च यदा क्रूरो व्यवस्थितः ।
तदा मातुर्भयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः । २०४

जिसके बारहवे या षष्ठ स्थान मे क्रूर ग्रह होय तो उस जातक के माता पिता को क्रमश· चौथे दशवे वर्ष में भय होवे ॥ २०४ ॥

उच्चो वा यदि वा नीचःसप्तमस्थो यदा रविः ।
तदाजातो निहन्त्याशु मातरं नात्र संशयः ॥

जिसके सूर्य उच्च राशि का या नीच राशि का होता हुआ सातवे स्थान मे पड़ा हो तो उस बालक की माता की मृत्यु शीघ्र ही होवे इसमे सन्देह नही ॥ २०५ ॥

नाग-८ गो-६ सिद्ध-२४ जाती-२२ षु-५
क्षमा-१ ब्ध्य-४ द्वि-२ नखा-२० धृतिः३८ ।
क्ष्माश्वि-२१ दिक्-१० चेब्वजाद्यंशै

स्तुल्याब्दैश्च विधौ व्ययः ॥२०६॥

जब कि चन्द्रमा मेषादि के नवांश मे होवे तो क्रमश. आठ नौ, चौबीस, बाईस, पांच, एक चार, दो, बीस अडतीस, इक्कीस, दस वर्षों मे अर्थात् मेष के नवांश मे चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष मे, वृष के नवांशक मे नौवे वर्ष मे इत्यादि क्रमसे उस जातक की मृत्यु होवे ॥२०६॥

लग्ने शनिर्यदा भौमो राहुः सूर्यश्च संस्थितः ।
संतापो रक्तदोषस्य सर्वसौम्येष्वरोगकृत् ।२०७

जिसके शनि, राहू, भौम, सूर्य लग्न मे पडे होवे तो रक्त-दोष की बीमारी होवे और अगर लग्न मे सब शुभ ग्रह ही पडे होवें तो आरोग्य करने वाले होते है ॥२०७॥

केन्द्रे शुभोदये कोऽपि बली विश्वप्रकाशकः ।
सर्वे दोषाः क्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥

जिसके जन्माङ्ग चक्र मे विश्व प्रकाशक बलवान् होता हुआ एक भी सौम्यग्रह अगर केन्द्र मे पडजाय तो उस जातक के सब दोष नष्ट हो जाते है, और वह दीर्घायु होता है ॥२०८॥

अर्के केन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुणेक्षितः ।
वित्तवान् ज्ञानसम्पन्नो जायते च तदा नरः ॥

जिसके सूर्य केन्द्र मे होवे तथा चन्द्रमा मित्र के नवांश मे बैठा हुआ बृहस्पति से देखा जाता हो तो वह जातक धनी ज्ञानी तथा योग्य होता है ॥२०९॥

बुधो वा भार्गवो वापि केन्द्रे च यदि संस्थितः ।
बलवानुदितोऽरिष्टं सर्वं नाशयति ध्रुवम् ।२१०

जिसके केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) में बुध व शुक्र बलवान् होकर बैठा हो तो अवश्य ही उस जातक के सब अरिष्टो का नाश करता है ॥२१०॥ इति, शुभाशुभयोग. ।

अथ वारायुः ।

विपदः प्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे ।
षष्ठेऽपि च यदा सूर्ये जातो जीवति षष्ठिकम् ॥

जिसका सूर्य वार को जन्म हो तो उसको पहिले मास मे तथा ३२ । १३ । ६ वर्षो मे पीडा होती है, और वह साठि वर्ष तक जीवित रहता है ॥२११॥

एकादशेऽष्टमे मासे चन्द्रे पीडा च षोडशे ।
सप्तविंशतिमे वर्षे चतुर्युक्ताशितो ८४मृतिः ॥

जिसका जन्म चन्द्रवार को हो तो उसको ११ । ८ । १६ । २७ वर्षो में पीडा होवे और वह चौरासी वर्ष तक जीता रहे ।२१२।

द्वात्रिंशे च द्वितीये च वर्षे पीड़ा च मंगले ।
चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी स जीवति२१३

जिसका कि भौमवार को जन्म होवे उस पुरुष को ३२ । २ वर्षों मे बीमारी हो तथा वह ७४ वर्ष तक जीता रहे परन्तु सर्वदा वह रोगी रहे ॥२१३॥

बुधवारेऽष्टमे मासे पीड़ा वर्षे तथाष्टमे ।
पूर्णे चतुः षष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति २१४

जिसका जन्म बुधवार को होवे तो उस जातक को ८ वे मास तथा ८ वे वर्ष मे पीड़ा होवे और उसकी मृत्यु पूरी ६४ वर्ष मे होती है ॥२१४॥

गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च तथाष्टमे।
पीड़ा ततश्चतुर्युक्ताशीति८४वर्षाणि जीवति॥

जिसका जन्म गुरुवार को होवे तो उसको सातवे, सोलहवें तथा आठवे मास मे पीड़ा होती है और ८४ वर्ष पर्यन्त जीता रहता है ॥२१५॥

शुक्रवारे च जातस्य देहो रोगविवर्जितः।
षष्टि६०वर्षे च सम्पूर्णे म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥

जिसका जन्म शुक्रवार को हो उसकी देह रोगरहित रहे और साठि वर्ष पूरी होने पर निश्चय ही उसकी मृत्यु होती है ॥२१६॥

शनौ प्रथममासे च पोड़ाष्टादशवत्सरे।
दृढदेहस्तदा जातःशतं१००वर्षाणि जीवति ॥

शनिवार को जिसका जन्म होवे उसको पहले मास मे तथा अठारहवें वर्ष मे पीड़ा होती है और वह दृढ देह होता हुआ सौ वर्ष तक जीता है ॥२१७।

अथ वार–फलम्–

मिष्टान्नभोगी मानी च क्रोधी च रतिलालसः।
पित्ताधिको रवेर्वारे धनकामी भवेन्नरः ।२१८

सूर्य वार को जिसका जन्म होवे वह मिष्टान्न खाने वाला मानी, क्रोधी रतिप्रेमी अधिकपित्तवान्, धनाभिलाषी होता है।।२१८॥

भोगी कामी शास्त्रवेत्ता गुणी मानी जितेन्द्रियः

विद्याधिकः शीलयुक्तो जायते सोमवासरे २१६

चन्द्रवार को जिसका जन्म हो वह पुरुष कामी, भोगी शास्त्रज्ञ, गुणी, मानी, जितेन्द्रिय अधिक विद्वान्, तथा शीलवान् होवे ॥२१६॥

मूर्खप्रियो धनी क्रूरः श्रुतिस्मृतिविनिन्दकः ।
नास्तिको वेदहीनश्च भौमे रोगी नरो भवेत् ॥

जिसका जन्म भौमवार को होवे वह पुरुष क्रूर मूर्ख-प्रिय, धनी, वेद और स्मृतियों की निन्दा करने वाला, नास्तिक, वेदो से हीन तथा रोगी होवे ॥२२०॥

वेदशास्त्रक्रियायुक्तो दयालुश्च बहुश्रुतः ।
भयानको शीलयुक्तो जायते बुधवासरे ।२२१।

जिसका जन्म बुधवार को हो वह पुरुष वेद और शास्त्रों में कही हुई क्रियाओ से युक्त, दयालु, वहुत से शास्त्रो की वातों को सुनने वाला, भयानक शीलवान् होवे ॥२२१॥

वेदविज्ञोऽग्निहोत्री च पुत्रपौत्रधनान्वितः ।
पूर्णवेत्ता गुरोर्वारे सर्वलक्षणसंयुतः ॥२२२॥

जिसका जन्म बृहस्पतिवार को होवे वह जातक वेदवेत्ता, अग्निहोत्र करने वाला, पुत्रपौत्र तथा धन से युक्त, समस्त कार्य का वेत्ता तथा समस्त लक्षणों से युक्त होवे ॥२२२॥

पुत्री भोगी धनी शूरः कृपालुर्बहुसेवकः ।
दैवज्ञोऽपि जनःशुक्रे दिने यदि च जायते२२३

जिसका शुक्रवार को जन्म होय वह मनुष्य पुत्रवान् भग-

वान्, धनवान्, शूरवीर, दयावान्, बहुत से नौकरो वाला एव ज्योति शास्त्र का वेत्ता होवे ॥२२३॥

नीचसक्तः कृतघ्नश्च कुटिलो बन्धुपीडकः ।
कृतकार्यहरो रोषो जायते शनिवासरे ॥२२४॥

शनिवार को अगर जिसका जन्म होवे वह नीच कार्य मे आसक्त, कृतघ्नी, कुटिल, अपने बन्धुओ को पीडा देने वाला, किये हुए कार्य को नष्ट करने वाला एव क्रोधी होवे ॥२२४॥

अथ मेषादिराशिफलम् ।

नेत्रलोलः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः ।
पृथुजंघःकृतज्ञश्च विक्रान्तो राजपूजितः २२५
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
चराडकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः २२६

जिसका जन्म मेषराशि मे हो वह पुरुष चचल नेत्र वाला सदा रोगी, धन और धर्म के कमाने मे निश्चय करने वाला, स्थूल जाँघो वाला, कृतज्ञ, पराक्रमी, राजमान्य तथा कामिनियो के चित्त को आनन्द देने वाला, दानी जल से डरपोक, भयकर कर्म करने वाला, अन्त मे कोमल स्वभाव वाला होवे ॥२२५॥२२६॥

भोगी दाता शुचिर्दक्षो महागर्वो महाबलः ।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥

वृष राशि मे जिसका जन्म होवे वह भोगी, दानी, पवित्र, चतुर, बड़ा घमडी, महापराक्रमी, धनवान्, विलासी तेजस्वी

और सन्मित्रों वाला होवे ॥२२७॥

मिष्टवाक्यो दृष्टिलोलो दयालुर्मैथुनप्रियः ।
गान्धर्ववित् कंठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः ।
समर्थो ह्यतिवादी च जायते मिथुने नरः २२६

मिथुन राशि मे जिसका जन्म हो वह मधुर वाक्य बोलने वाला, चंचल नेत्र वाला, दयावान्, मैथुन मे प्रेम करने वाला-गन्धर्व (गान) विद्या का वेत्ता, गले का रोगी, कीर्ति प्राप्त करने वाला, धनी, गुणी, गौरवर्ण वाला, लम्बे कदवाला, चतुर, वाग्मी, बुद्धिमान्, दृढ प्रतिज्ञावान्, प्रत्येक कार्य मे समर्थ तथा अत्यन्त विवाद करने वाला होता है ॥२२८॥२२९॥

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गःकृतवित्तमः २३०
प्रवासशीलःकोपान्धो बाले दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे वक्ता कर्कराशौ भवेन्नरः ।२३१

कर्क राशि में जिसका जन्म हो वह काम करने वाला, धनी शूरवीर, धर्मात्मा, गुरुओं का प्यारा, शिर का रोगी, महा बुद्धिमान्, कृश शरीर वाला, अच्छा ज्ञाता, परदेश मे रहने वाला, गुस्सा में अन्धा हो जाने वाला, बचपन मे दुःखी, श्रेष्ठ मित्रों वाला, घर गृहस्थ के कार्य मे न फँसने वाला, तथा अत्यन्त वक्ता होता है ॥२३०॥२३१॥

क्षमायुक्तस्त्रपायुक्तो मद्यमांसरतः सदा ।

देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः २३२

विनयी शीघ्रकोपश्च जननीजनवल्लभः ।

व्यसनी प्रकटो लोके सिंहराशौ नरोभवेत् २३३

जिसका जन्म सिहराशि मे होवे वह मनुष्य क्षमाशील, शर्मिन्दा, मदिरा और मास मे प्रेम करने वाला, देश देश मे भ्रमण करने वाला, जाडे से डरपोक, श्रेष्ठ मित्रो वाला, विनयवान्, जल्दी क्रोध करने वाला, माता का तथा अन्यजनों का प्यारा, शौकीन, ससार मे प्रसिद्ध होवे ॥२३२॥२३३॥

विलासी सुजनाह्लादो शुभलक्षणपूरितः ।

दाता दक्षःकविर्वृद्धो वेदमार्गपरायणः ।२३४

सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्वव्यसने रतः ।

प्रवासशीलःस्त्रीदुःखी कन्याजातो भवेन्नरः ॥

जिसका जन्म कन्याराशि मे हो वह मनुष्य विलासी सज्जनों को प्रसन्न करने वाला, सल्लक्षणो से युक्त, दानी, चतुर, कवि, वृद्ध, वेदमार्ग परायण, सब लोगो का प्रिय, नाच गान मे प्रेम करने वाला, परदेश मे प्रीति रखने वाला, तथा स्त्री की तरफ से दु खी होता है ॥२३४॥२३५॥

अस्थानरोपणो दुःखी पटुभाषी कृपान्वितः ।

चञ्चलश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमी ॥

वाणिज्यदक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।

प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुले जातो भवेन्नरः ।२३७

जिस पुरुष का तुला राशि का जन्म होवे वह वेकाम

गुस्सा खोर, दुखी, बात बनाने मे चतुर, दयावान्, चञ्चल, लक्ष्मीवान्, घर के वीच मे अति पराक्रमी, व्यापार में चतुर, देवताओं का पूजक, मित्रों पर प्रेम करने वाला, परदेश मे प्रेम करने वाला, तथा मित्रो का प्यारा होवे ।।२३६।।२३७।।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगललोचनः ।
परदाररतो मानी निष्ठुरःस्वधने जने ।।२३८।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ।
धूर्तश्चौरः कलारम्भी वृश्चिकेजायते नरः२३९

वृश्चिक राशि मे जिसका जन्म हो वह पुरुष बाल्यावस्था में ही परदेश में जाने वाला, क्रूरात्मा, शूरवीर, पीले नेत्रों वाला, दूसरे की स्त्रियों पर आसक्त, मानी, अपने धन तथा जनों में निठुर, अपनी हिम्मत से लक्ष्मी प्राप्त करने वाला, माता पर भी दुष्ट बुद्धि रखने वाला, धूर्त, चोर, कलाओ का आरम्भ करने वाला होता है ।।२३८।।२३९।।

शूरः समधिया युक्तः सात्विको जननन्दनः ।
शिल्पविज्ञानसम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ।।
मानी चारित्रसंपन्नो ललिताक्षरभाषकः ।
तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलान्तक २४१

धन राशि मे जिसकी उत्पत्ति हो वह जातक बलवान्, सम बुद्धि वाला, सात्विक प्रकृति वाला मनुष्यो को आनन्द देने वाला, कारीगरी का जानने वाला, धनी, सुन्दर स्वभाव की स्त्री वाला, मानी, अच्चरित्रता से सम्पन्न, ललित और मनोहर अक्षरों का भाषण करने वाला, तेजस्वी, मोटी देह वाला होता हुआ भी कुल का अन्त करने वाला होता है ।।२४०।।२४१।।

कुले श्रेष्ठो वशः स्त्रीणां पण्डितः पारिवारिकः।
गीतज्ञो लालसी गुह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः॥
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परिचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।२४३

मकर राशि मे जिसका जन्म होवे वह अपने कुल (खान दान) मे श्रेष्ठ स्त्रियो के वशीभूत होकर रहने वाला, विद्वान्, कुटुम्ब वाला, गाने मे होशियार, लालसा रखने वाला, गुप्तारम्भी, पुत्रो से युक्त, माता मे भक्ति रखने वाला, धनी, दाता, अच्छे नोकरो वाला, दयावान्, वहुत से वान्धवो वाला, सुख की चिन्ता करने वाला होता है ॥२४२॥२४३॥

दाताऽलसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः।
शुभदृष्टिः सदा सौम्यो मानी विद्याकृतोद्यमः।
धनाढ्यः स्नेहहीनश्च धनी भोगी स्वशक्तितः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः २४५

जिसका कि कुम्भ राशि मे जन्म हो वह पुरुष दाता आलसी, कृतज्ञ, हाथी घोडा और धन का मालिक, सुन्दर दृष्टि वाला, सदा भलेपन से रहने वाला, मानी विद्या मे उद्योग करने वाला, धनी प्रेम से रहित, अपनी शक्ति के अनुसार भोग भोगने वाला शालूर नामक पक्षी के समान पेट वाला तथा भय रहित होता है ॥२४४॥२४५॥

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुर्वाग्मी नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी कुलश्रेष्ठः कुलप्रियः॥

नित्यसेवी शीघ्रगामी गान्धर्वकुशलः शुभः ।
मीनराशौ समुत्पन्नो जायते बन्धुवत्सलः २४७

मीन राशि मे उत्पन्न होने वाला मनुष्य गम्भीर चेष्टा वाला, क्रूर, चतुर, वाग्मी, पुरुषो मे श्रेष्ठ, क्रोधी, कजूस, ज्ञानी, कुल मे श्रेष्ठ, कुल मे प्रिय, नित्य सेवा करने वाला. शीघ्रगामी गाने मे चतुर, सुन्दर स्वभाव वाला तथा अपने भाई वन्धुओ को प्यारा होवे ॥२४६ ।२४७॥

अथ संक्षेपण मेषादिजन्मफलम् ।

मेषे दीनो वृषे मानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे ।
क्रूरःकर्के धृति सिंहे कन्यायां बहुमायिता ॥
जूके स्त्रीत्वमलौ मानी चापे पापाशयो नरः ।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे ।२४९।

मेष राशि मे जिसका जन्म होवे यह दीन, वृष मे मानी, मिथुन मे चतुर बुद्धि, कर्क मे क्रूर, सिंह मे धैर्यशाली, कन्या में अत्यन्त मायावी, तुला मे स्त्री की सी प्रकृति वाला, वृश्चिक मे मानी, धन मे पापी, मकर मे वाचाल, कुम्भ में चतुर मीन मे स्थिर बुद्धि वाला होवे ॥२४८॥२४९॥

अथ मेषादिलग्नजन्मफलम् ।

मेषे लग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः ।
सुधीः स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः २५०

मेष लग्न मे जिसका जन्म होवे वह उग्रस्वभाव वाला हो, अभिमानी, गुस्साखोर, सुबुद्धिमान्, अपने वान्धवो का नाश करने वाला पराक्रमी तथा दूसरो का प्यारा होवे ॥२५०॥

वृषलग्नभवो लोकेगुणभक्तःप्रियंवदः ।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः ॥

वृष लग्न मे जिसका जन्म हो वह पुरुष लोक मे गुणो से प्रेम करने वाला, प्यारा बोलने वाला, गुणी, समस्त कार्य करने वाला, धनी, लोभी, वीर तथा समस्त लोगो का प्यारा होवे ॥२५१॥

मिथुनोदयसञ्जातो मानी स्वजनवत्सलः ।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्र्यरिमर्दकः ॥

जिसका जन्म मिथुन लग्न मे हो वह पुरुष मानी, स्वजनो का प्यारा, त्यागी, भोगी, धनाढ्य, कामी, दीर्घ सूत्री–चिरक्रिय (बडी देरी से काम करने वाला) वैरियो का मर्दन करने वाला हो ॥२५२॥

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः ।
मिष्टान्नपानभोगी च सुभाग्यः स्वजनप्रियः ॥

जिसका जन्म कर्क लग्न मे हो वह पुरुष भोगी धर्मात्मा लोगो का प्यारा, मिष्टान्न पान का भोगी, सुन्दर भाग्य वाला तथा अपने जनो का प्यारा हो ॥२५३॥

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः ॥

जिसकी उत्पत्ति सिह लग्न मे होवे वह पुरुष भोगी शत्रुओ का मर्दन करने वाला, कृशोदर, थोडे पुत्र वाला, उत्साही सग्राम मे पराक्रम दिखाने वाला होवे ॥२५४॥

कन्यालग्नभवो वालो नानाशास्त्रविशारदः ।

सौभाग्यगुणसंपन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः ।२५५।

जिसका कि जन्म कन्या लग्न मे होवे वह बालक अनेक शास्त्रो मे चतुर सौभाग्य गुणो से सम्पन्न, मैथुन मे प्रेम करने वाला होता है ।।२५५।।

तुलालग्नोदये जातः सुधीःसत्कर्मजीवनः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो नरपूजितः ॥

तुला लग्न में जिसका जन्म होवे वह सुबुद्धिमान्, सत्कर्म से जीवन निर्वाह करने वाला, विद्वान् सब कलाओ को जानने वाला, धनी लोगों से पूजित होता है ।।२५६।।

वृश्चिकोदयसंजातः शौर्यवानतिदुष्टधीः ।
विज्ञानज्ञानसम्पन्नः सुखी सद्विग्रहःसुधीः ।२५७

जिसकी उत्पत्ति वृश्चिक लग्न मे होवे वह पराक्रमी, अत्यन्त दुष्ट बुद्धि वाला, ज्ञान विज्ञान से सम्पन्न, सुखी, दिव्य-देह वाला तथा सुबुद्धिमान् होवे ।।२५७।।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः २५८

धन लग्न मे जिसकी उत्पत्ति होवे वह नीतिवान्, धर्मवान्, तीव्र बुद्धिवाला, अपने कुल मे श्रेष्ठ, विद्वान्, सबका पोषण करने वाला होता है ।।२५८।।

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः ।
लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः ।

जिसका मकर लग्न मे जन्म हुआ हो वह पुरुष नीचकर्म करने वाला, बहुत संतान वाला, लोभी, आलसी, नष्ट और

अपने कार्यों में उद्योग करने वाला होता है ।।२५९।।

कुम्भलग्नोदये जातश्चलचित्तोऽतिसौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी ।।२६०।।

जिसका जन्म कुम्भ लग्न मे होवे वह मनुष्य चञ्चल चित्त वाला, बहुत मित्रो वाला सर्वदा पर स्त्रियो मे आसक्त रहने वाला, कोमल देह वाला, तथा महा सुखी रहे ।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्चनपूरितः ।
अल्पकामोऽतिदौर्बल्यः दीर्घकालविचिन्तकः ।।

जिसका कि जन्म मीन लग्न मे हुआ हो, वह पुरुष रत्न और काचन से परिपूर्ण रहे, थोडा कामी, अत्यन्त कृश, (दुबला पतला, बहुत समय तक चिन्ता करने वाला होता है ।।२६१।।

इति मेषादिलग्न जन्मफलम् ।

अथ प्रतिपदादितिथिजन्मफलम् ।

क्रूरसंगी धनैर्हीनः कुलसंतापकारकः ।
व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथि जोनरः २६२

प्रतिपदा तिथि मे जिसका जन्म हो वह पुरुष क्रूर पुरुषों की सगति करने वाला, धन से रहित, कुल को सताप करने वाला, और बुरी बुरी शौको मे मन लगाने वाला होवे ।।२६२।।

परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ।
तस्करःस्नेहहीनश्च द्वितीयासम्भवो नरः २६३

जिस मनुष्य का जन्म द्वितीया तिथि मे होवे वह सदा पराई स्त्री मे आसक्त रहे, सत्य तथा शुद्धता से रहित, चोर, और प्रेम से हीन होता है ।।२६३।।

अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यो दुर्बलः सदा ।
परद्वेषरतो नित्यं तृतीयायां भवेन्नरः ॥२६४॥

तृतीया तिथि मे जिसका जन्म होवे वह अचेतन (वेहोश) रहे, अत्यन्त विकल रहे, द्रव्य रहित और सदा दुर्बल रहे, तथा दूसरो से द्वेष करने वाला होवे ॥२६४॥

महाभोगी च दाता च मित्रस्नेहविचक्षणः ।
धनसन्तानयुक्तश्च चतुर्थ्यां यदि जायते ।२६५

जिसका जन्म चौथ को होवे वह पुरुष बडा भारी भोगी, दानी, मित्रो से प्रेम करने मे चतुर, एवम् धन तथा सन्तति से सम्पन्न रहे ॥२६५॥

व्यवहारी गुणग्राही मातृपित्रोश्च रक्षकः ।
दाता भोक्ता तनुप्रीतिः पंचमीसंभवो नरः २६६

जिसका जन्म पञ्चमी तिथि को होवे वह मनुष्य व्यावहारिक कार्यो को करने ताला, गुणो का ग्राहक, माता पिता की रक्षा करने वाला, दाता, भोक्ता, तथा कम प्रीति रखने वाला होवे ॥

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः ।
नित्यं जठरदोषी च षष्ठीजातो भवेन्नरः ।२६७।

षष्ठी तिथि का जन्म जिसका हो वह मनुष्य अनेक देशों मे भ्रमण करने वाला. सदा कलह करने वाला तथा हमेशा उदर रोगी रहे ॥२६७॥

अल्पतोषी च तेजस्वी सौभाग्यगुणसुन्दरः ।
पुत्रवान् धनसम्पन्नः सप्तम्यां जायते नरः २६८

जिस पुरुप का जन्म सप्तमी तिथि मे होवे वह पुरुष थोडे मे ही सन्तुष्ट रहने वाला तेजस्वी, सौभाग्यशाली गुणो से सुन्दर पुत्रवान् तथा धनाढ्य होता है ॥२६८॥

धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता भोक्ता च वत्सलः ।
गुणज्ञः सर्वकार्यज्ञश्चाष्टमीसम्भवोनरः ॥२६६॥

जिसका जन्म अष्टमी को हो वह पुरुष धर्मात्मा, सत्यवादी, दानी, भोगी, सब मनुष्यो का प्यारा, गुणज्ञ तथा सब कार्यो का जानने वाला होता है ॥२६६॥

देवताराधकःपुत्री धनी स्त्रीमग्नमानसः ।
शास्त्राभ्यांसरतो नित्यं नवम्यां यदि जायते ॥

जिसका जन्म नवमी तिथि को हो वह देवताओ को पूजने वाला, पुत्रवान्, धनाढ्य, स्त्री मे चित्त को मग्न रक्खे तथा शास्त्रो के पढने मे तत्पर रहे ॥२७०॥

दशम्यां सर्वधर्मज्ञो देवसेवी च जातकः ।
गुणी धनी वेदविज्ञोवन्धुविप्रप्रियो जनः ।२७१

जिस पुरुप का जन्म दशमी मे होवे वह सब धर्मों का जानने वाला, देवताओ की पूजा करने वाला, गुणी, धनाढ्य, वेदवेत्ता, बान्धव और ब्राह्मणो का प्यारा होवे ॥२७१॥

एकादश्यां नरेन्द्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत् ।
धर्मज्ञश्च विवेकी च गुरुशुश्रूषको गुणी ॥२७२॥

जिस मनुष्य का जन्म एकादशी मे होवे वह पुरुष राजघराने में जाने वाला, पवित्र, धर्मवेत्ता, ज्ञानी, गुरुओ की शुश्रूषा करने वाला होता है ॥२७२॥

चपलश्चंचलज्ञानः सदा क्षीणःस्वरूपतः ।
देशभ्रमणशीलश्च द्वादश्यां जायते नरः ।२७३।

द्वादशी तिथि को जो मनुष्य उत्पन्न होवे वह चञ्चलप्रकृति वाला, चञ्चल ज्ञानी हमेशा रूप से रूखी कान्ति वाला देशो मे भ्रमण करने वाला होता है ॥२७३॥

महासिद्धो महाप्राज्ञःशास्त्राभ्यासी जितेन्द्रियः ।
परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां प्रजायते ।२७४।

जिसकी उत्पत्ति त्रयोदशी तिथि मे हो तो वह मनुष्य महासिद्ध, महाबुद्धिमान, शास्त्रो का अभ्यासी, जितेन्द्रिय, पराये कार्यो के करने मे तत्पर रहे ।।२७४।।

धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरः सद्वाक्यपालकः ।
राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां नरो भवेत् ॥

जिसका जन्मचतुर्दशी में हो वह पुरुष धनी, धर्मात्मा शूरवीर, श्रेष्ठ वचनो का पालन करने वाला, राजमान्य, तथा बडा कीर्तिमान् होवे ॥२७५॥

श्रीयुतो मतियुक्तश्च महाभोजनलालसः ।
उज्वलः परदारेषु रतश्च पूर्णिमाभवः ॥२७६॥

जिसकी उत्पत्ति पूर्णमातिथि मे होवे वह पुरुष लक्ष्मी और बुद्धि से सम्पन्न, बहुत भोजन करने को इच्छा वाला, हमेशा उजले पोश रहे तथा पर स्त्रियो में आसक्त रहे ॥२७६॥

स्थिरारम्भः परद्वेषी वक्रो मूर्खः पराक्रमी ।
गूढमन्त्री च संज्ञानश्चामावास्याभवोनरः २७७

जिसका जन्म अमावस्या मे हो वह जातक कार्य के आरम्भ को स्थिरता से करने वाला, दूसरो से द्वेष करने वाला, कुटिल, मूर्ख, पराक्रमी, छिपी हुई सलाह करने वाला, तथा हमेशा सावधान रहे ॥२७७॥

निर्विद्धायां तिथौ सौम्यविद्धायां च शुभं फलम् ।
अनिष्टं पापविद्धायां तिथौ भवति निश्चितम् ॥

वेध रहित तिथि मे तथा शुभ ग्रह से विद्ध तिथि मे जन्म शुभ होता है और पापग्रह से विद्ध तिथि मे जन्म हो तो दुष्ट फल होताहै

अथ नन्दादिपञ्चतिथिजन्मसामान्यफलम् ।

नंदातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः ।
देवताभक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सल ।२७९

जिस पुरुप का नदा (१ । ६ । ११) तिथि मे जन्म हो वह पुरुप महामानी, विद्वान् देवताओ की भक्ति मे निष्ठा रखने वाला तथा प्रियजनो का प्रिय होवे ॥२७९॥

भद्रातिथौ बन्धुमान्यो राजसेवी धनान्वितः ।
संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः ॥२८०॥

जिस पुरुप का जन्म भद्रासज्ञक तिथियो (२ । ७ । १२) मे होवे तो वह पुरुप वन्धुओ से मान्य, राजकर्मचारी, (हाकिम) धनी, ससार के भय से भीत तथा परमार्थ मे बुद्धि रखने वाला हो ॥२८०॥

जयातिथौ राजपूज्यः पुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
शूरः शान्तश्च दीर्घायुर्महाविज्ञश्च जायते २८१

जिस पुरुप का जन्म पुर्णासज्ञक तिथियो (३ । ८ । १३)

मे हो वह मनुष्य राजपूज्य, बेटा नातियो से युक्त शूर, शांति-स्वभाव वाला. दीर्घायु महाविद्वान् होवे ॥२८१॥

रिक्तातिथौ वित्तहीनःप्रमादी गुरुनिन्दकः ।
शास्त्रज्ञमतहन्ता च कामुकश्च नरोभवेत् ।२८२।

जिस पुरुष का जन्म रिक्ता (४ । ९ । १४) मे हो वह मनुष्य धन हीन, प्रमादी, गुरुनिन्दक, विद्वानो के मत का खण्डन करने वाला, एवम् कामी होवे ॥२८२॥

पूर्णातिथौ धनैःपूर्णो वेदशास्त्रार्थ तत्ववित् ।
सत्यवादी शुद्धचेता जातो भवति मानवः २८३

जिस पुरुष का जन्म पूर्णासंज्ञक तिथियो (५ । १० । १५) में होवे तो वह मनुष्य धनो से परिपूर्ण, वेद और शास्त्रार्थ के तत्व को जानने वाला, सत्यवक्ता, तथा शुद्ध चित्त वाला होवे २८३

अथ विष्कुम्भादियोगजन्मफलम् ।

विष्कुम्भजातो मनुजो रूपवान् भाग्यवान्भवेत् ।
नानालंकारसम्पूर्णो महाबुद्धिर्विशारदः ।२८४।

जिस पुरुष का जन्म विष्कुम्भयोग मे हुआ हो वह पुरुष रूपवान्, भाग्यवान्, नाना अलङ्कारों से परिपूर्ण महा-बुद्धिमान् तथा अत्यन्त चतुर होवे ॥२८४॥

प्रीतियोगे समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत् ।
तत्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थी नित्यं कृतोद्यमः ।

जो मनुष्य प्रीतियोग में उत्पन्न होता है वह स्त्रियो का

प्यारा, तत्ववेत्ता, बडा उत्साही, स्वार्थी, तथा सर्वदा उद्योग करने वाला होवे ॥ २८५ ॥

आयुष्मन्नाम्नियोगेच्च जातो मानी धनी कविः
दीर्घायुःसत्वसम्पन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ।२८६

आयुष्मान् नामक योग मे जो उत्पन्न हो वह मानी, धनी, कवि, दीर्घायुष्यवान्, सात्विक, गुणयुक्त, तथा युद्ध मे पराजय न प्राप्त करने वाला होता है ॥ २८६ ॥

सौभाग्ये यःसमुत्पन्नो राजमन्त्री स जायते ।
निपुणः सर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः २८७

जो पुरुष सौभाग्यनामक योग मे उत्पन्न हुआ हो वह राजमंत्री तथा सव कार्यो मे चतुर एव स्त्रियो का प्यारा होवे ।

शोभने शोभनो बालो बहुपुत्रकलत्रवान् ।
चतुरःसर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ।२८८।

शोभन नामक योग मे जन्म लेने वाला पुरुष सुन्दर, स्वरूपवान्, वहुत से पुत्र और स्त्री वाला, सव कार्यो मे चतुर, तथा युद्ध करने मे सदा उत्सुक रहे ॥ २८८ ॥

अतिगण्डे च यो जातो मातृहन्ता भवेच्च सः ।
गण्डान्तेषु च जातस्तु कुलहन्ता प्रकीर्तितः२८९

अतिगण्ड नामक योग मे उत्पन्न हुआ पुरुष माता का नाश करने वाला, तथा गण्डान्त मे उत्पन्न हुआ मनुष्य कुल का नाश करने वाला होता है ॥ २८९ ॥

सुकर्मनाम्नि योगे च सुकर्मा जायते नरः ।

सर्वैःप्रीतःसुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥

सुकर्म नामक योग मे पैदा हुआ मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करने वाला, सब लोगों से प्रीति रखने वाला, सुशील, रागरङ्ग का आनन्द लेने वाला, भोगी, अधिक गुणी होवे ॥ २९० ॥

धृतिमान् धृतियोगे च कीर्तिपुष्टिधनान्वितः ।
भाग्यवान् रूपसम्पन्नो विद्यावान् गुणवान्भवेत् ॥

धृति योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य धैर्यशाली, कीर्तिमान्, पुष्टियुक्त, धनाढ्य, भाग्यशाली, रूपसम्पन्न, विद्यावान्, तथा गुणवान् होवे ॥ २९१ ॥

शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकः शास्त्रपारगः ।
विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजःसदा ॥२९२

शूल नामक योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य शूल के दर्द से युक्त, धर्मात्मा, शास्त्रो के पार को जानने वाला, विद्या और धन उत्पन्न करने में चतुर एवं यज्ञकर्त्ता होवे ॥ २९२ ॥

गण्डे च गण्डया युक्तो बहुक्लेशो महाशिराः ।
ह्रस्वकायो महास्थूलो बहुभोगी दृढव्रतः २९३

गण्डयोग मे जो मनुष्य उत्पन्न हो वह गण्ड रोग से युक्त, बहुत क्लेश पाने वाला, बडे शिर वाला, ठेगने शरीर वाला अत्यन्त मोटा, बहुभोगी तथा दृढ प्रतिज्ञा वाला होता है ॥२९३॥

वृद्धियोगे च दीर्घायुर्बहुपुत्रकलत्रवान् ।
धनवानतिभोक्ता च सत्ववानपिजायते ॥२९४

वृद्धि योग में उत्पन्न होने वाला मनुष्य दीर्घायुष्यवाला बहुत से पुत्र और स्त्री वाला, धनवान्, अत्यन्त भोगी तथा

सात्त्विक गुण युक्त होवे ।। २९४ ।।

ध्रुवयोगे च दीर्घायुः सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
स्थिरकर्मातिशक्तश्च ध्रुवबुद्धिश्च जायते २९५

ध्रुवयोग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य दीर्घायु, सब लोगों का प्यारा, स्थिरकर्म करने वाला, अत्यन्त समर्थ, स्थिरमति वाला होवे ।। २९५ ।।

व्याघातयोगे जातश्च सर्वज्ञः सर्वपूजितः ।
सर्वकर्मकरो लोके विख्यातःसर्वकर्मसु ।।२९६

व्याघात योग मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष सर्वज्ञ सव लोगो से पूजित, सव कार्यों का करने वाला, सब कार्यों मे लोक मे विख्यात (प्रसिद्ध) होवे ।। २९६ ।।

हर्षणे जायते लोके महाभोगी नृपप्रियः ।
हृष्टः सदा धनैर्युक्तो वेदशास्त्रविशारदः ।२९७

हर्षणनामक योग मे पैदा हुआ पुरुष, महाभोगो के भोगने वाला, राजा का प्रिय, प्रसन्नचित्त, सदा धनो से परिपूर्ण वेद-शास्त्रो मे चतुर होवे ।। २९७ ।।

वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्वविद्यासु पारगः ।
धनधान्यसमायुक्तो मनुजो वज्रविक्रमः । २९८।

वज्र योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य वज्र सरीकी दृढ मुट्ठी वाला, समस्त विद्याओ के पार को जानने वाला, धन और धान्यो से युक्त, वज्र सदृश दृढ पराक्रम वाला होवे ।। २९८ ।।

सिद्धियोगे समुत्पन्नः सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।

दाता भोक्ता सुखी कान्तःशोकी रोगी च मानवः

सिद्धि योग मे उत्पन्न हुआ जातक सर्व सिद्धियों से युक्त दानी, भोगी, सुखी सुन्दर, शोकयुक्त तथा रोगयुक्त होवे ॥२६६॥

व्यतीपाते नरो जातो महाकष्टेन जीवति ।
जीवेच्चेद् भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नृणाम् ॥

व्यतीपात मे उत्पन्न होने वाला पुरुष बड़े भारी कष्ट से जीवे और अगर भाग्य से जी पडे तो मनुष्यो मे श्रेष्ठ होवे ।३००।

वरीयोनाम्नि योगे च वरिष्ठो जायते नरः ।
शिल्पकाव्यकलाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ।

वरीयान् नामक योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य श्रेष्ठ, तथा कारीगरी एव काव्य कलाओ मे निपुण, और गीत नाच आदि को जानने वाला होवे ॥ ३०१ ॥

परिघे च नरो जातः स्वकुलोन्नतिकारकः ।
शास्त्रविज्ञः कविर्वाग्मी दाता भोक्ता प्रियंवदः ।

परिघ योग मे जन्म लेने वाला मनुष्य अपने कुल की उन्नति करने वाला, शास्त्रों का वेत्ता, कवि, वाग्मी, दानी, भोक्ता तथा प्रिय बोलने वाला होता है ॥ ३०२ ॥

शिवयोगे नरो जातः सर्वकल्याणभाजनः ।
महादेवसमो लोके महाबुद्धिर्वरप्रदः ॥३०३

जिस पुरुष का जन्म शिवनामक योग में हुआ हो वह पुरुष सब कल्याणो का भाजन (पात्र) तथा महादेवजी के समान ससार मे बुद्धिमान् और वर का देने वाला हो ॥ ३०३ ॥

सिद्धियोगे सिद्धिदाता मन्त्रसिद्धिप्रवर्तकः ।
दिव्यनारीसमेतश्च सर्वसम्पद्युतो भवेत् ।३०४

जिस मनुष्य का सिद्धि योग मे जन्म होवे वह सिद्धियो का देने वाला, मन्त्र को सिद्धि करने वाला, सुन्दर स्त्री युक्त, तथा समस्त सम्पत्तियो से युक्त होवे । ३०४ ॥

साध्ये मानसिका सिद्धिर्यशोऽशेषसुखागमः ।
दीर्घसूत्री प्रसिद्धश्च जायते सर्वसम्मतः ।३०५

साध्ययोग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य मानसिक सिद्धि से युक्त, कीर्तिमान्, सुख से युक्त, बडी देर से काम करने वाला, प्रसिद्ध तथा सब लोगो का प्रिय होवे ॥ ३०५ ॥

शुभे शुभशतैर्युक्तो धनवानपि जायते ।
विज्ञानशास्त्रसंपन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ।३०६

शुभ योग मे उत्पन्न हुआ जातक शतश: शुभ कार्यो से युक्त, धनाढ्य, विज्ञान शास्त्र से सम्पन्न, दाता एव ब्राह्मणो का पूजन करने वाला होवे ॥ ३०६ ॥

शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान्भवेत् ।
क्वचित्प्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ।३०७

शुक्ल नामक योग मे उत्पन्न हुआ मनुष्य समस्त कलाओं से युक्त, समस्त अर्थं तथा ज्ञान से सम्पन्न, एव कभी-कभी प्रताप तथा वीरता से युक्त, धनाढ्य एव सब जनों का प्यारा होवे ३०७

ब्रह्मयोगे महाविद्वान् वेदशास्त्रपरायणः ।
ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः ।३०८

ब्रह्म योग मे जो मनुष्य उत्पन्न हुआ हो वह महा विद्वान् वेदशास्त्रों मे परायण, सर्वदा ब्रह्मज्ञान मे तत्पर, तथा सब कार्यों मे चतुर होवे ।। ३०८ ।।

ऐन्द्रे भूपकुले जातो राजा भवति विश्रुतः ।
अल्पायुश्च सुखी भोगी गुणवानपि जायते ।।

जिस मनुष्य का जन्म ऐन्द्र योग मे हुआ हो वह राजकुल मे होता हुआ विख्यात राजा होवे, और थोडी आयु वाला सुखी, भोगी एव गुणी होवे ।। ३०९ ।।

वैधृतौ जायमानस्तु निरुत्साहो बुभुक्षितः ।
कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीतिं प्रत्यात्यप्रियतां नरः ।।

वैधृति योग मे जिसका जन्म हो वह निरुत्साही, अधिक भूख वाला, मनुष्यो के साथ प्रेम करता हुआ भी उनका अप्रिय बना रहे ।। ३१० ।।

अथ बवादिकरणजन्मफलम् ।

बवाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतिः सदा ।
शुभमंगलकर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ।३११

बब नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य अभिमानी सदा धर्म मे प्रीति करने वाला, शुभ और मङ्गल कार्यों का करने वाला, स्थिर कर्म करने वाला होवे ।। ३११ ।।

बालवाख्ये नरो जातो तीर्थदेवादिसेवकः ।
विद्यार्थशौर्यसम्पन्नो राजमान्यश्चजायते ३१२

वालव नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य तीर्थ, तथा देवता आदि की सेवा करने वाला, विद्या, धन तथा शूरता से

सम्पन्न, एव राजमान्य होता है ॥ ३१२ ॥

कौलवे च नरो जातः प्रीतिः सर्वजनैः सह ।
संगतिर्मित्रवर्गैश्च मानवैश्च प्रजायते ।३१३

कौलव नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य सब लोगो से प्रीति करने वाला, मित्र गणों के साथ सोहबत करने वाला तथा सब लोगो से मेल रखने वाला होवे ॥ ३१३ ॥

तैतिले करणे जातः सौभाग्यगुणसंयुतः ।
स्नेहः सर्वजनैः सार्द्धं विचित्राणि गृहाणि च ॥

तैतिल नामक करण मे उत्पन्न हुआ जातक सौभाग्यगुणों से युक्त, सब लोगो के साथ स्नेह रखने वाला और विचित्र गृह वाला होवे ॥ ३१४ ॥

गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः ।
यद्वस्तु वाञ्छितं तच्च लभतेऽत्र महोद्यमैः ३१५

गर नामक करण मे उत्पन्न हुआ जातक खेती का कार्य करने वाला, घर के कार्य मे चतुर, तथा जो चीज उसे अभीष्ट हो वह बडे उद्योगो से प्राप्त होवे ॥ ३१५ ॥

वणिजे करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति ।
वाञ्छितं लभते लोके देशान्तरगमागमैः ३१६

वणिजकरण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य वाणिज्य से जीविका करने वाला एव दूसरे देशो मे जाने आने से ससार मे वाछित फल प्राप्त करता रहता है ॥ ३१६ ॥

अशुभारम्भशीलश्च परघातरतः सदा ।

कुशलो विषकार्येषु विष्ट्याख्ये करणे भवेत् ॥

विष्टि नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य अशुभ कार्यों का आरम्भ करने वाला, दूसरे को घात करने मे तत्पर, विष कार्यों मे चतुर होवे ॥ ३१७ ॥

शकुनौ करणे जातः पौष्टिकादिक्रियाकृतिः ।
औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥

शकुनि नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य पौष्टिकादि क्रियाओ मे चतुर, औषधि आदि के बनाने मे कुशल, तथा वैद्यवृत्ति से जीविका निर्वाह करने वाला होवे ॥ ३१८ ॥

करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतः सदा ।
गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पादचिकित्सकः ३१९

चतुष्पाद नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य हमेशा देवता और ब्राह्मणो की सेवा मे तत्पर गौओ का कार्य करने वाला, गौओ का पालक, चौपाये जीवो की चिकित्सा करने वाला होवे ॥ ३१९ ॥

नागे च करणे जातः स्थावरप्रीतिकारकः ।
कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ।३२०

नाग नामक करण मे जो मनुष्य उत्पन्न होवे वह स्थावरों से प्रेम रखने वाला, दारुण कार्य करने वाला, अभाग्यशाली तथा चचल नेत्र वाला होवे ॥ ३२० ॥

किंस्तुघ्ने करणे जातः शुभकर्मरतो नरः ।
तुष्टिं पुष्टिं च माङ्गल्यं सिद्धिं च लभते सदा ३२१

किंस्तुघ्न नामक करण मे उत्पन्न हुआ मनुष्य शुभकार्य

करने मे तत्पर तथा तुष्टि पुष्टि मागल्य और सिद्धि को प्राप्त करने वाला होवे ॥३२१॥ इति ववादिकरणजन्म फलम् ॥

* अथ जन्मराशिनवांशक फलम् *

पिशुनश्चपलो दुष्टः पापकर्मा निराकृतिः ।
परेषां व्यसने सक्तश्चौरश्च प्रथमांशके ३२२

जन्म राशि के प्रथमनवाशक मे जिसका जन्म होवे वह चुगल खोर, चचल, दुष्ट, पापकर्मकारी, कुत्सित स्वरूप वाला दूसरो के शौक मे आसक्त तथा चोर होवे ॥३२२॥

उत्पन्न[1]प्रभवो भोक्ता संग्रामे विगतस्पृहः ।
गन्धर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे च जायते ३२३

जन्म राशि के द्वितीय नवाशक मे जिसकी उत्पत्ति हो वह उत्पन्न हुए भोगो का भोगने वाला, सग्राम मे इच्छा न रखने वाला, गन्धर्व की स्त्रियो मे आसक्त होवे ॥३२३॥

धर्मिष्ठः सततव्याधिः सर्वसारज्ञ एव च ।
सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे च जायते ३२४

तृतीय नवाशक मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष धर्मात्मा, निरन्तर व्याधियो से युक्त समस्त वातो के सार को जानने वाला, सर्वज्ञ, देवताओ का भक्त होता है ॥३२४॥

चतुर्थांशेऽपि जातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ।
यत्किंचिद्ब्रह्मणो वस्तु तत्सर्वं लभते च सः ॥

चतुर्थ नवांशक मे जिसका जन्म हो वह पुरुष मन्त्र दीक्षा प्राप्त करने वाला, गुरु की भक्ति करने वाला, और जो कुछ भी ब्रह्मा की रची हुई चीजे है उन सबको प्राप्त करने

१ उत्पन्न योग (भोक्ताच) इति पाठ साधु ।

वाला होवे ।।३२५।।

सर्वलक्षणसंपन्नो राजा भवति विश्रुतः ।
दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पञ्चमांशके ।३२६।

पचम नवाशक मे जिस मनुष्य की उत्पत्ति होवे वह समस्त लक्षणो से सम्पन्न तथा विख्यात, दीर्घायु वाला, एवं बहुत से पुत्रो वाला होवे ।।३२६।।

स्त्रीनिर्जितः शुभैर्हीनो बहुभाषी नपुंसकः ।
अर्थध्वंसः प्रमादी च षष्ठांशे जायते नरः३२७

षष्ठ नवाशक मे उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्त्रियो से पराजय पाने वाला, शुभ लक्षणो से रहित, बहुत बोलने वाला, नपु सक, कगाल, तथा प्रमादो होता है ।।३२७।।

विक्रान्तो मतिमाञ्छूरः संग्रामेष्वपराजितः ।
महोत्साही च संतोषी जायते सप्तमांशके ३२८

सप्तम नवाशक मे जिसका जन्म हो वह पराक्रमी बुद्धिमान्, शूरवीर, सग्रामो मे न हारने वाला, महान् उत्साही तथा सन्तोषी होवे ।।३२८।।

कृतघ्नो मत्सरी क्रूरःक्लेशभोक्ता बहुप्रजः ।
फलकालपरित्यागी जायते चाष्टमांशके ३२९

जिस पुरुष का जन्म अष्टम नवाँशक मे हुआ हो तो वह मनुष्य कृतघ्नी, मात्सर्य रखने वाला, क्रूर, भोगी, बहुत सी सतान वाला, तथा फल के समय का त्याग करने वाला होवे ।।३२९।।

क्रियासु कुशलो दक्षः सुप्रतापी जितेन्द्रियः ।
भृत्यैश्च वेष्टितो नित्यं जायते नवमेंऽशके ।।

जिस पुरुष का जन्म नवम नवांशक मे हुआ हो वह क्रियाओ मे चतुर, दक्ष, सुन्दर प्रताप वाला, जितेन्द्रिय, सदा नौकरो से युक्त होता है ॥३३०॥ इति जन्मराशिनवांशकफलम् ।

अथ देवादिगणजन्मफलम् ।

सुन्दरो दानशीलश्च मतिमान् सबलः सदा ।
अल्पभोगी महाप्राज्ञो नरो देवगणे भवेत् ३३१

जिस पुरुष का जन्म देवगण मे हुआ हो वह सुन्दर, दानशील, बुद्धिमान्, पराक्रमी, थोडे भोग भोगने वाला तथा महा पण्डित होवे ॥३३१॥

मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्द्धरः ।
गौरःपौरजनाह्लादी जायते मानवे गणे ।३३२

मनुष्यगण मे उत्पन्न होने वाला मनुष्य मानी, धनी, विशाल नेत्र वाला, लक्ष्य (निशाने) को वेधने वाला, धनुष, धारी, गौरवर्ण शहर के मनुष्यो को आनन्द देने वाला हो ॥

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदा कलिवल्लभः ।
पुरुषं दुःसहं ब्रूते प्रमेही राक्षसे गणे ॥३३३॥

राक्षस गण मे पैदा होने वाला पुरुष उन्मादी, भयङ्कराकार, सदा कलहप्रिय, लोगवागो से दु:सह बोलने वाला तथा प्रमेह रोग वाला होता है ॥३३३॥ इति देवादिगणजन्मफलम् ।

अथ ऋतु फलम् ।

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत् ।
नानादेशरतोऽभिज्ञो वसन्ते जायते नरः ॥

बसन्त ऋतु मे उत्पन्न होने वाला मनुष्य सदा उद्योगी मनस्वी, तेजस्वी, बहुत से कार्यों को करने वाला, अनेक देशोमें भ्रमण करने मे तत्पर, और ज्ञानवान् होवे ॥३३४॥

वह्वारम्भो जितक्रोधः क्षुधालुः कामुको नरः ।
दीर्घःशूरो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातःसदा शुचिः॥

गीष्म ऋतु मे जिसका जन्म हो वह मनुष्य बहुत से कार्यो का आरम्भ करने वाला, क्रोध को जीतने वाला, अत्यन्त क्षुधावान्, कामी, लम्बे कद वाला, वोर बुद्धिमान् तथा सर्वदा पवित्र रहे ॥३३५॥

गुणवान् भोगयुक्तश्च राजपूज्यो जितेन्द्रियः ।
कुशलो धातुवादी च वर्षाकाले भवेन्नरः ३३६

जो मनुष्य वर्षा काल मे उत्पन्न होवे वह गुणवान्, भोगवान्, राजमान्य, जितेन्द्रिय, चतुर तथा धातुवादी होवे ३३६

वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ।
तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो भवेन्नरः ।३३७

शरद् ऋतु मे जिसका जन्म हुआ हो वह वाणिज्य तथा खेती क्यारी से जीविका निर्वाह करने वाला, धनधान्यो की समृद्धि से सम्पन्न, तेजस्वी, बहुत से लोग वागो का मान्य होवे ॥

बहुभार्योऽतितेजाश्च ग्रामयुक्तः सदोद्यमी ।
ह्रस्वपादगलो भीरुर्हेमन्ते जायते नरः ॥३३८॥

हेमन्त ऋतु मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष बहुत सी स्त्री वाला, अत्यन्त तेजस्वी, ग्रामाधीश (जमीदार) सदा उद्यमी छोटे छोटे पैर तथा गले वाला, तथा डरपोक होवे ॥३३८॥

रूपयौवनसम्पन्नो दीर्घसूत्री मदोत्कटः ।
क्षुधायुक्तो कामुकश्च शिशिरे जायते नरः ॥

शिशिर ऋतु मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष रूप और यौवन से सम्पन्न, विलम्ब से कार्य करने वाला, मद से मत्त क्षुधालु तथा कामी होवे ॥३३९॥ इति ऋतुफलम् ॥

अथ पक्षफलम् ।

पूर्णचन्द्रनिभः श्रीमान्सोद्यमो बहुशास्त्रवित् ।
कुशलो ज्ञानसंपन्नः शुक्लपक्षभवो नरः ॥३४०॥

जिस मनुष्य का जन्म शुक्ल (शुदी) पक्ष मे हुआ हो वह पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान कान्तिमान्, लक्ष्मीवान्, उद्यमवान्, बहुत से शास्त्रो का जानने वाला, कुशल एव ज्ञानसम्पन्न होवे ॥३४०॥

निष्ठुरो दुर्मुखो मूर्खःस्त्रीद्वेषी च जनोज्झितः
जायते च परप्रेष्यः कृष्णपक्षभवो नरः ३४१

कृष्ण पक्ष मे जिस मनुष्य का जन्म हुआ हो वह पुरुष निठुर, बुरे से मुँह वाला, मूर्ख, स्त्री से द्वेष करने वाला, मनुष्यों से त्यागा हुआ तथा दूसरे का नौकर होवे ॥३४१॥

अथायनजन्मफलम् ।

रूपवान् गुणशीलश्च स प्रतापी जनेश्वरः ।
सर्वसौख्यं समाप्नोति जायते चोत्तरायणे ॥

उत्तरायण मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष रूपवान् गुणशील, प्रतापवान् पुरुषों का स्वामी तथा सब सुखो को प्राप्त करने वाला हो ॥३४२॥

*कृषिकर्मरतो नित्यं गोमहिष्यादिसंयुतः ।
कामीसर्वजनो वादी जायते दक्षिणायनै ३४३

दक्षिणायन मे जिसका जन्म होवे वह पुरुष खेती के काम मे तत्पर, सदा गाय भेस आदि से सम्पन्न, कामी, सब लोगो का प्यारा, तथा बाद विवाद मे चतुर होवे ॥३४३॥

अथ रव्यादीनां स्वोच्चगतफलम् ।

महाधनी महोग्रश्च तुङ्गस्थे भास्करे नर ।
सुभूषणो महाभोगो वृषे चन्द्रे च जायते ३४४

उच्च के सूर्य मे जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष महाधनी, महान् उग्रस्वभाव वाला, अगर उच्च का चन्द्रमा अर्थात् वृष राशि का जिसके हो वह श्रेष्ठ आभूषणो वाला, महा भोगो के भोगने वाला होवे ॥३४४॥

उच्चे भौमे सुपुत्रश्च तेजस्वी गर्वितो नर ।
मेधावी दृढवाक्यश्च बलाढ्यश्च बुधे भवेत् ३४५

जिसके उच्च के मङ्गल देव पड़ें हों, वह पुरुष सुन्दर पुत्र वाला, तेजस्वी, तथा घमडी होवे । और जिसके बुध उच्चका पडा हो वह पुरुष बुद्धिमान्, दृढवाक्य, तथा बली होवे ॥३४५॥

राजपूज्यश्च विख्यातो विद्वानार्यो गुरौ नरः ।
उच्चे शुक्रे बिलासी च हास्यगीतादिसंयुतः ॥

जिसके बृहस्पति उच्च का पड़ा हो, वह पुरुष राजपूज्य,

---

* अत्र तृतीयचरणे 'सर्वजन' इति पदम्—
सर्वजना. (प्रिया.) यस्य स इति बहुव्रीहिणा कथञ्चित्समाधेयम्

विख्यात, विद्वान्, तथा सज्जन होवे । और जिसके कि शुक्र उच्च का हो वह विलासी, हसी, दिल्लगी तथा गीत आदि मे निपुण होवे ।।३४६।।

तुङ्गस्थे भानुपुत्रे च चक्रवर्ती धनी भवेत् ।
राजलब्धनियोगश्च राहुःशनिसमो मतः ३४७

शनि जिसके उच्च का होवे वह पुरुष चक्रवर्ती राजा तथा वडा धनी एव राजा के द्वारा अधिकार पद को प्राप्त करने वाला हो. इसी प्रकार राहु का फल भी जानना चाहिये ।।३४७।।

अथ मूलत्रिकोणफलम् ।

धनी सुखी कार्यविज्ञः त्रिकोणस्थे दिवाकरे ।
चन्द्रे धनी सुभोक्ता च भौमे*शूरोदय खलः।।

जिसका जन्म सूर्य के मूल त्रिकोण मे होवे तो वह पुरुष धनी, सुखी, एव कार्य वेत्ता होवे । और अगर चन्द्रमा के मूल त्रिकोण मे जन्म होवे तो धनाढ्य, तथा श्रेष्ठ भोगो के भोगने वाला होवे । तथा मङ्गल के मूलत्रिकोण मे जन्म हो तो अत्यन्त शूरवीर तथा खल (दुष्ट) होवे ।।३४८।।

बुधे त्रिकोणे विज्ञश्च विनोदी विजयी नरः ।
गुरौ ग्रामपुरादीनां मठस्य च पतिर्भवेत् ३४९।

जिसका जन्म बुध के मूलत्रिकोण मे हो तो विद्वान्, विनोद युक्त, तथा विजय शील होवे । वृहस्पति के मूलत्रिकोण मे होवे तो ग्राम, शहर तथा मठ का मालिक होवे ।।३४९।।

शुक्रे त्रिकोणे सुज्ञश्च सुखयुक्तो महत्तमः ।

---

* 'शूरेषु उदयो यस्य स' इतिवहुव्रीहिर्बोध्यः ।

मन्दे नरो धनैः पूर्णो महाशूरः कुलन्धरः ३५०

जिसका जन्म शुक्र के मूलत्रिकोण मे हो तो विद्वान्, सुखी और बडे लोगो मे माननीय होवे। शनि के मूलत्रिकोण में उत्पन्न हो तो वह मनुष्य धन से परिपूर्ण, महान् वीर पुरुष, एव कुलका पालन करने वाला होवे ॥३५०॥

*सिंहवृषाजप्रमदाकामुकभृत्तौलिकुम्भधराः।
मूलत्रिकोणानिरविरत्नौभौमइज्यशुक्रसौरीगाम्॥

सूर्य का सिह राशि, चन्द्रमा का वृष राशि, भौम का मेष, बुध का कन्या, बृहस्पति का धन, शुक्र का तुला, शनि का कुम्भराशि मूलत्रिकोण होते है ॥इति मूलत्रिकोणफलम् ।

अथ स्वगृहस्थफलम् ।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च सदोद्यमी ।
चन्द्रे धर्मरतस्साधुर्मनस्वी रूपवानपि ॥३५२॥

जिसके जन्माङ्ग में सूर्य स्वराशि मे बैठा हो वह पुरुष ससार मे बडा उग्रस्वभाव वाला तथा सदा उद्यमी होवे। और अगर चन्द्रमा स्वराशि स्थित हो तो धर्म मे तत्पर, सज्जन, उदारचित्त तथा रूपवान् होवे ॥३५२॥

स्वगृहस्थे कुजे वापि चपलो धनवानपि ।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पंडितो धनपूरितः ३५३

* तदुक्त वराहेण—
"सिहो वृषप्रथमषष्ठहयांगतौलि—
कुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात्"...
इति ।

जिसके भौम अपनी राशि का पडा हो तो वह नर चञ्चल तथा धनी होवे और बुध स्वराशिगत हो तो अनेक कलाओ को जानने वाला, विद्वान तथा धन से परिपूर्ण होवे ॥ ३५३ ॥

धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च सुचेष्टः स्वगृहे गुरौ ।
स्फीतः कृषीवलः शुक्रे शनौ मान्यः खलो जनः

गुरुदेव जिसके जन्माग मे स्वराशिगत हो तो वह जातक धनाढ्य, काव्य तथा वेदो का जानने वाला, श्रेष्ठ चेष्टा वाला होवे और अगर शुक्र निजराशिस्थित हो तो समृद्धिमान् तथा खेती का कार्य करने वाला होवे । और यदि शनिदेव जिसके स्वराशिस्थित हो तो सब लोगो से मान्य परन्तु दुष्टस्वभाव वाला होवे । ३५४ । इति स्वगृहस्थफलम् ।

अथ मित्रगृहस्थफलम् ।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्थिरसौहृदः ।
चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि ।३५५

जिसके जन्माग मे सूर्य अपने मित्रभवन का होकर बैठा हो वह विख्यात, शास्त्रवेत्ता, स्थिर मित्रता वाला होवे और यदि चन्द्रमा स्वमित्रगृहगत हो तो वह मनुष्य भाग्यशाली, चतुर, तथा धनाढ्य होवे ॥ ३५५ ॥

भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः ।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यःसतां सत्कर्मसंयुतः॥३५६॥

जिसके मगल स्वमित्र राशिगत होवे तो वह जातक शस्त्रो से जीवन निर्वाह करने वाला होवे और यदि बुध अपने मित्र के गृह मे पडा हो तो रूप तथा धन से परिपूर्ण होवे । और अगर गुरुदेव स्वमित्रराशिस्थित हो तो सज्जनमान्य तथा श्रेष्ठ

कर्म करने वाला होवे ॥ २५६ ॥

शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बन्धुजनप्रियः ।
शनौ परान्नभोगी च कुकर्मनिरतो भवेत् ।३५७

जिसके शुक्र स्वमित्रगृहगत हो तो वह पुरुष ससार में धनाढ्य एव अपने भाई बन्दो का प्यारा हो । और अगर शनि स्वमित्रभवनगत हो तो वह पुरुष परान्नभोजी तथा निन्दितकार्यों के करने मे तत्पर रहे ॥ ३५७ ॥ इति मित्रगृहस्थफलम् ॥

अथ नीचगृहस्थफलम् ।

नीचे सूर्ये भवेत् प्रेष्यो बान्धवैर्वर्जितो नरः ।
चन्द्रे रोगीस्वल्पपुण्यो दुर्भगोऽपि च जायते३५८

जिसके जन्माग मे सूर्य नीचराशिगत हो तो वह दूतपने का कार्य करने वाला तथा बन्धुवर्गों से परित्यक्त होवे । और अगर चन्द्रमा नीच राशि का पडा होवे तो वह मनुष्य रोगी थोड़े पुण्य करने वाला तथा अभागा होवे ॥ ३५८ ॥

नीचे भौमे भवेन्नीचः कुत्सितो व्यसनातुरः ।
बुधे क्षुद्रो बन्धुवैरी गुरौ दीनो मलान्वित ।३५९

जिसके नीच राशि का मंगल पडा हो वह पुरुष नीच, निन्दित, तथा बुरे २ शौकों मे आसक्त रहे । और अगर बुध नीच राशि मे बैठा हो तो तुच्छ प्रकृति वाला, एव अपने बान्धवों से द्वेष करने वाला होवे । और यदि गुरुदेव जिसके नीचे के पड़े हों तो दुखी और पापी होवे ॥ ३५९ ॥

शुक्रे नीचे नष्टदारः स्वतन्त्रः शीलवर्जितः ।
शनौ काणो दरिद्रश्च गताचारोऽतिगर्हितः३६०

जिसके कि शुक्र नीच राशि का आपडे तो उसकी स्त्री मर जाय, और वह स्वतन्त्र होकर अपने शील स्वभाव (सदव्यवहार) से भ्रष्ट होजाय । और अगर शनि नीचराशिस्थित हो तो वह पुरुष काना, कगाल, आचार से भ्रष्ट, अत्यन्त निन्दित होवे ॥ ३६० ॥ इति नीचगृहस्थफलम् ।

अथ रिपुगृहस्थ फलम् ।

सूर्ये रिपुगृहे निःस्वो विषयैः पीडितो नरः ।
चन्द्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः ३६१

सूर्य जिसके जन्माग मे अपने शत्रु के घर मे बैठा हो वह मनुष्य निर्धन तथा विषयो से दुःखी होवे । और अगर चन्द्रमा स्वशत्रुराशिगत हो तो हृदय का रोगी होवे । और यदि मगल स्वशत्रुभवनगत हो तो स्त्री के विषय मे जड तथा निर्धन होवे ।

वुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनी दुःखपीडितः ।
जीवे च जायते क्लीवो नाशवृत्तिर्बुभुक्षितः३६२

अगर वुध शत्रुगृहगत हो तो वह पुरुष मूर्ख, वचन का घनी ('वचने की दरिद्रता'—के अनुसार) और दु खो से पीडित होता है । और अगर वृहस्पति शत्रुक्षेत्री हो तो नपु सक, जीविका से हीन एव भूखा रहे ॥ ३६२ ॥

शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यः कुबुद्धिर्दुःखितो नरः ।
शनौ व्याध्यर्थशोकेन सन्तप्तो मलिनो भवेत्३६३

जिसके शुक्र शत्रुक्षेत्री होकर पडा हो वह मनुष्य नीची-नौकरी करने वाला, कुवुद्धी तथा दुःखी होवे। और अगर शनि शत्रुगृह मे पडा हो तो रोग तथा धन के शोक से दुःखी एव मलिन होवे ॥ ३६३ ॥ इति रिपुगृहस्थफलम् ।

अथ जन्मनक्षत्रफलम् ।

सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूलकायो महाधनी ।
अश्विनीसम्भवोलोके जायते जनवल्लभः ३६४

अश्विनी नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह पुरुष सुरूपवान् सुन्दर भाग्य वाला, कुशल, मोटे शरीर वाला, बड़ा धनाढ्य तथा लोगो का प्यारा होवे ॥ ३६४ ॥

अरोगी सत्यवादी च सप्रणश्च दृढव्रतः ।
भरण्यां जायतेलोके सुखी च मतिमानपि ३६५

जिसका जन्म भरणी नक्षत्र मे हुआ हो वह निरोगी सत्य वक्ता, दृढप्रतिज्ञा वाला, सुखी तथा बुद्धिमान् होवे ॥ ३६५ ॥

कृपणः पापकर्मा च क्षुधातुर्नित्यपीडितः ।
अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकायां भवेन्नरः ।३६६

कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म होवे वह पुरुष कञ्जूस, पाप कर्मकारी, भूख से पीड़ित, नित्य दु.खी तथा नित्य कुकर्म करता रहे ॥ ३६६ ॥

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः ।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः३६७

रोहिणी नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह जातक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान् नाजमान्य, प्रिय बोलने वाला, सत्यवक्ता, सुन्दर रूप वाला होता है ॥ ३६७ ॥

चपलश्चतुरो धीरः क्रूरकर्माप्यकर्मकृत् ।
अहंकारी भवेद् द्वेषी मृगनक्षत्रे च मानवः ॥

मृगशिरा नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह पुरुष चचल, चतुर, धीर, क्रूर कर्म करने वाला, तथा निन्दित कार्य करने वाला, घमण्डी तथा द्वेषी होता है ॥ ३६८ ॥

कृतज्ञो गर्वितो हीनो नरः पापरतः शठः ।
आर्द्रानक्षत्रसंभूतो धनधान्यविवर्जितः ॥३६९

आर्द्रा नक्षत्र मे उत्पन्न हुआ पुरुष कृतज्ञ, घमण्डी, हीन पापकर्म मे तत्पर, मूर्ख, और धन धान्य से रहित होवे ॥३६९॥

शान्तः सुखी च भोगी च सुभगो जनवल्लभः
पुत्रमित्रादिभियुक्तो जायते च पुनर्वसौ ३७०

पुनर्वसु नक्षत्र मे जिसका जन्म होवे वह शान्तस्वभाव वाला, सुखी, भोगी, सुन्दर, लोग बागो का प्रिय, पुत्र और मित्रो से युक्त होता है ॥ ३७० ॥

देवधर्मधनैयुक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः ।
पुष्ये च जायते लोके शांतात्मा सुभगः सुखी ॥

पुष्य नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह देवता, धर्म तथा धन से सम्पन्न, बुद्धिमान् विद्वान्, ससार मे शाति प्रकृति वाला, एव सुन्दर तथा सुखी होवे ॥३७१॥

सर्वभक्षः कृतांतश्च कृतघ्नो वंचकः खलः ।
सर्वदा दुष्टकर्मा चाऽश्लेषायां जायते नरः ॥

आश्लेषा नक्षत्र मे जिसका जन्म होवे वह मनुष्य सर्व भक्षी, दुष्ट अन्त करण वाला, कृतघ्नी, ठग, मूर्ख, सदा कुत्सित-कर्म करने वाला होता है ॥३७२॥

सार्पस्य प्रथमे भद्रं द्वितीये च धनक्षयः ।

मातु पीडा तृतीये च चतुर्थे चरणे पितुः ॥

आश्लेषा के प्रथमपाद में जन्म लेने वाला जातक कल्याण दायक होवे द्वितीयपाद मे जन्म हो तो धन का नाश करने वाला होता है, और तृतीय चरण में जन्म लेने वाला पुरुष माता को कष्टदायक होता है तथा चतुर्थ चरण मे जन्म लेने वाला पिता को कष्टदायक होता है ॥३७३॥

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमः ।
चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥

मघा नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष बहुत से नौकरों वाला, धनाढ्य, भोगी, पिता का सेवक, बड़े उद्यम, करने वाला, सेना का नायक (सेनापति) राजा का सेवक होता है ॥ ३७४ ॥

विद्यागोधनसंयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः ।
पूर्वाफाल्गुनिकाजातः सुखी पण्डितपूजितः ।

पूर्वाफालगुनी नक्षत्र में जिसका जन्म होवे वह पुरुष विद्या, भोग, और धनो से परिपूर्ण, गम्भीर, स्त्रियों का प्यारा सुखी तथा पण्डितों से पूजित होवे ॥ ३७५ ॥

दाता शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः ।
उत्तराफाल्गुनीजातो महायोद्धा जनप्रियः ३७६

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र मे उत्पन्न हुआ जातक दानी शूरवीर, कोमल स्वभाव का वक्ता, धनुर्वेद विद्या मे निपुण, महान् योद्धा तथा सब लोगों का प्रिय होवे ॥ ३७६ ॥

असत्यवचनो धृष्टः सुरापो बन्धुवर्जितः ।

हस्ते जातो नरश्चौरो जायते परदारकः ३७७

हस्त नक्षत्र मे जिसका जन्म होवे वह जातक मिथ्यावादी ढीठ, मदिरा पीने वाला, (शराबी) भाई बन्धुओ से त्यागा हुआ, चोर तथा पराई स्त्रियो से सगम करने वाला होवे ॥ ३७७ ॥

पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः ।
देवब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः ३७८

चित्रा नक्षत्र मे जिसका जन्म हुआ हो वह जातक बेटा और स्त्रियो से परिपूर्ण, सन्तोषी, धन धान्यो से परिपूर्ण, देवता और ब्राह्मणो का भक्त होता है ॥ ३७८ ॥

विदग्धो धार्मिकोऽल्पार्थःकृपणः प्रियवल्लभः ।
सुखी स्वदेवभक्तश्च स्वातीजातो भवेन्नरः ३७९

स्वाति नक्षत्र मे जिसका जन्म होवे वह पुरुष चतुर, धर्मात्मा, थोडे धन वाला, कजूस प्यारी स्त्रियों वाला, सुखी तथा अपने इष्ट देवता का भक्त होवे ॥ ३७९ ॥

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः ।
विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत् ॥

जिसका कि जन्म विशाखा नक्षत्र मे हुआ हो वह जातक अत्यन्त लोभी, अत्यन्त घमण्डी, निठुर, कलह प्रिय, तथा वेश्याजनो मे आसक्त रहे ॥ ३८० ॥

पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्यें सदोद्यमी ।
अनुराधाभवो लोकः सदा हृष्टश्च जायते ३८१

अनुराधा नक्षत्र मे उत्पन्न हुआ जातक बडा पुरुषार्थी प्रदेश में रहनेवाला, भैया बन्दो के कार्य मे सदा उद्यम करने

वाला, तथा सर्वदा प्रसन्न चित्त रहे ।। ३८१ ।।

बहुमित्रः प्रधानश्च कविर्दानी विचक्षणः ।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ।३८२

ज्येष्ठा नक्षत्र मे जिस मनुष्य का जन्म हो वह वहुत से दोस्तो वाला, सब लोगो मे मुखिया, कवि, दानी विद्वान, धर्म मे तत्पर, तथा शूद्र वर्णो द्वारा पूजित होता है ।।३८२।।

स्थिरभोगी च मानी च धनवांश्च सुखी भवेत् ।
तृतीयपादे तुर्ये च मूलाज्जातं परित्यजेत ।३८३

जिसका मूल के तीसरे चतुर्थ चरण मे जन्म हो वह स्थिर भोगी मानी धनवान् तथा सुखी होवे, परन्तु उक्त नक्षत्र के प्रथम या दूसरे चरण मे उत्पन्न हुए बालक का त्याग कर देना चाहिये ।। ३८३ ।।

आद्ये पादे पितुः पीडा मूले मातुर्द्वितीयके ।
तृतीये धनहानिश्च चतुर्थे सुखसंपदः ।।३८४

मूल नक्षत्र के प्रथम पाद मे होवे तो पिता को पीडा द्वितीय चरण मे जन्म हो तो माता को कष्ट, तृतीय चरण में जन्म हो तो धन का नाश, और चतुर्थ पाद मे हो तो सुख और सम्पति होवे ।। ३८४ ।।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः ।
पूर्वाषाढे नरो जातः सकलार्थविचक्षणः ।।३८५

पूर्वाषाढानक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह केवल देखने से ही उपकार करने वाला, बड़ा भाग्यशाली तथा लोगो का प्रिय, एवम् समस्त कार्यो मे चतुर होता है ।। ३८५ ।।

बहुमित्रो महाकार्यो धार्मिको विनयी सुखी ।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी रणे ३८६

उत्तराषाढा नक्षत्र मे उत्पन्न होने वाला मनुष्य बहुत से मित्रो वाला, वडे वडे कार्य करने वाला, धर्मात्मा, विनयसम्पन्न, सुखी, शूर, एव युद्ध मे विजयशील होता है ।।३८६।।

कृतज्ञः सुभगो दाता सर्वदारोग्यसंयुतः ।
लक्ष्मीवान्बलसंयुक्तः श्रवणे जायते नरः ३८७

श्रवण मे जिसकी उत्पत्ति होवे वह पुरुष कृतज्ञ, तथा सुन्दर, दानी, हमेशा आरोग्यवान्, लक्ष्मीवान्, तथा बलवान् होता है ।।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः ।
जातो नरो धनिष्ठायामेकः शतपतिर्भवेत् ३८८

धनिष्ठा नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह गीत प्रिय, बन्धु-मान्य, सुवर्ण तथा रत्नो से सुसज्जित तथा सैकडो आदमियो का मालिक हो ।।३८८।।

कृपणो धनपूर्णश्च परदारोपसेवकः ।
नरः शतभिषायां च विदेशगमने रतः ।३८९।

जिसका जन्म शतभिषा मे हो वह कृपण, धन से परिपूर्ण पर स्त्री का सेवक तथा विदेश जाने मे तत्पर रहे ।।३८९।।

वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः ।
पूर्वाभाद्रपदाजातो नरो भवति दुःखितः ३९०

जिसका पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र मे जन्म हो वह वक्ता सुखी, सन्तान वाला, बहुत देर तक निद्रा मे सोने वाला, व्यर्थ के

झगडो मे समय बरबाद करने वाला तथा दुखी हो ॥३९०॥

गौरः समस्तधर्मज्ञः शत्रुघाती च पामरः ।
उत्तराभाद्रनक्षत्रे जातः साहसिको भवेत् ३९१

उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह जातक गौरवर्ण वाला, समस्त धर्मों का वेत्ता, शत्रुमर्दक, तुच्छ प्रकृति वाला तथा हिम्मती होवे ॥३९१॥

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः ।
रेवतीसम्भवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ३९२

रेवती नक्षत्र मे जिसका जन्म हो वह पुरुष अविलाग, पवित्रता से युक्त, चतुर, पराये कार्यों को सिद्ध करने वाला, विद्वान् तथा धन धान्यो से परिपूर्ण रहे ॥ ३९२ ॥

निर्वेधे सौम्यसंयुक्ते नक्षत्रे शोभनं फलम् ।
विपरीतफलं तस्मिन् सवेधे क्रूरपीडिते ॥३९३

वेद रहित एव शुभग्रह से विद्ध नक्षत्र मे अगर जन्म हो तो शुभ फल वाला होता है अगर सवेध नक्षत्र मे वा क्रूर ग्रह से विद्ध नक्षत्र मे जन्म हो तो विपरीत अर्थात् अशुभ फल वाला होता है ॥३९३॥ इत्यश्विन्यादिनक्षत्रजन्मफलम् ।

अथ द्वितीयपरिच्छेदः

अथ सूर्यद्वादशभावफलम् ।

लग्ने सूर्येऽतितीव्रश्च चञ्चलात्मा स्मरातुरः ।
नेत्ररोगी पीडितांगो जायते चाऽरुणाकृतिः॥१॥

जिस मनुष्य के जन्माङ्ग में लग्न में सूर्य बैठा हो वह

अत्यन्त तीव्र, चञ्चल स्वभाव वाला, कामदेव से पीडित नेत्रो का रोगी, दु खित शरीर वाला तथा गौरवर्ण का होवे ॥१॥

सूर्ये धने विवादी च वहुशत्रुश्च निर्धनः ।
परापवादो सेर्ष्यश्च कृतघ्नश्च भवेन्नरः ॥२॥

जिस पुरुप के लग्न से धन (द्वितीय स्थान) भाव मे सूर्य-पडा हो वह विवाद करने वाला, वहुत से शत्रु वाला, निर्धन दूसरो की निन्दा करने वाला, ईर्ष्यालु तथा कृतघ्नो होवे ॥२॥

तृतीयस्थे दिवानाथे प्रसिद्धो रोगवर्जितः ।
भूपतिश्च सुशीलश्च दयालुश्च भवेन्नरः ॥३॥

जिसके जन्माङ्ग मे सूर्य तृतीय भवन मे पडा हो वह संसार मे विख्यात, रोग रहित, राजा, सुशील तथा दयालु होवे ।

सूर्ये चतुर्थे दुर्बुद्धिः कृशांगः सुखवर्जितः ।
अप्रभावो निष्ठुरश्च दुष्टसंगो भवेन्नरः ॥४॥

जिस पुरुप के जन्माङ्ग मे चौथे घर मे सूर्य पडा हो वह दुर्बुद्धि वाला, लटे दुवले शरीर वाला, सुख से रहित प्रभाव रहित, निठुर तथा दुष्टो को सगति करने वाला होवे ॥४॥

पञ्चमेऽर्के कोपयुक्तः कुरूपः शीलवर्जितः ।
कुसंगलब्धवृत्तिश्च गतमांसश्च जायते ॥५॥

जिसके जन्माङ्ग मे सूर्य पचम भवन मे पडा हो वह पुरुप गुस्साखोर, कुरूप, शील रहित, दुष्टो के सग से जीविका प्राप्त करने वाला, तथा दुवला पतला होवे ॥५॥

षष्ठे सूर्ये जिताऽरिश्च ख्यातमानः सुखी शुचिः ।

शूरोऽनुरागी भूपालसम्मतश्चः भवेन्नरः ॥६॥

सूर्य जिसके षष्ठ भवन मे बैठा हो वह शत्रू रहित, प्रसिद्ध मानवाला, सुखी, पवित्र, शूरवीर, प्रेमी, तथा राजमान्य होवे ॥

सप्तमेऽर्के कुदारश्च दुष्टप्रीतोऽल्पपुत्रकः ।
गुह्यरोगी सपापश्च जातको हि प्रजायते ।७।

जिसके सूर्य सातवे पडा हो वह दुष्ट स्त्री वाला दुष्टजनों से प्रेम करने वाला, थोडे पुत्रो वाला, गुप्त रोग वाला तथा पापी होता है ॥७॥

अष्टमस्थे दिवानाथे कृतघ्नो हीनमानसः ।
शत्रुदग्धो वृथागामी बन्धुहीनश्च जायते ॥८॥

जिसके कि सूर्य अष्टम भवन मे पडा होवे वह कृतघ्नी, हीन चित्त वाला, शत्रुओ द्वारा सताया हुआ, व्यर्थ घूमने फिरने वाला, एवम् बन्धुजनो से पृथक् रहे ॥८॥

नवमस्थे रवौ जातः कुकर्मी भाग्यवर्जितः ।
विद्याविवेकहीनश्च कुशीलश्च प्रजायते ॥९॥

जिसके कि सूर्य नवम भाव मे पडा हो वह पुरुष कुकर्मी, भाग्य रहित, विद्या तथा ज्ञान से हीन, कुत्सित स्वभाव वाला होवे ॥९॥

दशमेऽर्के बन्धुहीनः कुकर्मा शीलवर्जितः ।
स्त्रीचंचलो हीनतेजा हीनकोशश्च जायते ।१०।

जिसके सूर्य दशम भाव में होवे वह पुरुष बन्धुओं से रहित, कुकर्मी, शील स्वभाव रहित, स्त्रियो मे चञ्चल, तेज से हीन, तथा धन रहित होवे ॥१०॥

लाभे सूर्ये समुत्पन्नो नानालाभसमन्वितः ।
सात्विको धार्मिको ज्ञानी रूपवानपि जायते११

जिस पुरुष के सूर्य ग्यारहवे भाव मे पडा हो वह पुरुष अनेक लाभो से युक्त, सात्विक गुण सम्पन्न, धर्मात्मा, ज्ञानवान् तथा रूपवान् होता है ।।१५।।

व्यये सूर्ये नरो रोगी सत्त्वहीनो वृथाटनः ।
असद्व्ययी पुत्रदारभक्तिहीनश्च जायते ।।१२।।

जिसके सूर्य व्यय (वाहरवे) स्थान मे बैठा होवे वह पुरुष रोगी, सतोगुण से हीन, व्यर्थ घूमने फिरने वाला, वृथा खर्चा करने वाला वेटा और स्त्री की भक्ति से रहित होवे ।।

अथ चन्द्रद्वादशभावफलम् ।

लग्ने चन्द्रे जडः शुद्धः प्रसन्नो धनपूरितः ।
स्त्रीवल्लभो धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत्१३

जिस पुरुष के जन्माङ्ग मे चन्द्रमा लग्न मे पड़ा हो वह जड़ (मूर्ख) पवित्र, प्रसन्न, धनाढ्य, स्त्रियों का प्रिय, धर्मात्मा एवम् कृतघ्नी होता है ।।१३।।

धने चन्द्रे धनैः पूर्णो नृपपूज्यो गुणान्वितः ।
शास्त्रानुरागी सुभगो जनप्रीतिश्च जायते १४

जिससे धन (द्वितीय) भाव मे चन्द्रमा पड़ा हो वह आदमी धनाढ्य, राजमान्य, गुणी शास्त्रो का प्रेमी, सुन्दर तथा लोगो से प्रेम रखने वाला होवे।।१४।।

तृतीये च निशानाथे धनविद्यादिभिर्युतः ।

कफाधिकःकामुकश्च वंशमुख्योऽपि जायते १५

जिसके कि चन्द्रमा तृतीय भवन में पड़ा हो वह पुरुष धन तथा विद्या आदि से युक्त, अधिक कफ प्रकृति वाला, कामी तथा वंश मे श्रेष्ठ होता है ॥१५॥

चतुर्थे च निशानाथे पुत्रदारसमन्वितः ।
धनी सुखी यशस्वी च विद्यावानपि जायते १६

जिस पुरुष के चन्द्रमा चतुर्थ भवन मे पड़ा हो वह पुरुष बेटा और स्त्री से युक्त धनवान्, सुखी, कीर्तिमान् तथा विद्वान् होवे ॥१६॥

सुते चन्द्रे सुताढ्यश्च रोगी कामी भयानकः ।
कृषीमयै रसैर्युक्तो बिनयी च भवेन्नरः ॥१७॥

जिसके कि चन्द्रमा पंचम भवन में पड़ा हो वह जातक पुत्रों से युक्त, रोगी, कामी भयङ्कर रूप वाला, खेती से उत्पन्न होने वाले रसो से युक्त और विनम्र होवे ॥१७॥

षष्टे चन्द्रे वित्तहीनो मृदुकायोऽतिलालसः ।
मन्दाग्निस्तीक्ष्णदृष्टिश्च शूरोऽपि मनुजो भवेत्

जिसके कि चन्द्रमा षष्ठ भवन में स्थित हो वह धन रहित, कोमल शरीर वाला, अत्यन्त आलसी, मन्दाग्नि वाला, पैनी नजर वाला, तथा पराक्रमी होवे ॥१८॥

चन्द्रे तु सप्तमे जाते दुःखी कुष्ठी च वञ्चकः ।
कृपणो बहुवैरी च जायते परदारकः ॥१६॥

जिसके कि सप्तम भवन मे चन्द्रमा बैठा होवे वह मनुष्य

दुखी, कुष्ठ रोग वाला, ठगिया, कजूस, बहुत से शत्रु वाला, तथा पराई स्त्री को घर मे रखने वाला होवे ॥१९॥

अष्टमे तारकानाथे दीनोऽल्पायुः सकष्टकः ।
प्रगल्भश्च कृशाङ्गश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः ॥२०॥

अष्टम भवन मे अगर चन्द्रमा जिसके पडजाय वह पुरुष दीन, थोडी आयु वाला पीडाओ से दवा हुआ, ढीठ, दुवले पतले अङ्गवाला, तथा पापकर्म मे बुद्धि रखने वाला होवे ॥२०॥

धर्मे चन्द्रे चारुकान्तिः स्वधर्मनिरतः सदा ।
वीतरोगःसतां श्लाघ्यः पापहीनश्च जायते २१

जिस मनुष्य के नवम भाव मे चन्द्रमा पडजाय वह जातक सुन्दर कान्ति वाला, अपने धर्म पर आरूढ सदा निरोग, सज्जनो का मान्य, तथा निष्पाप होवे । २१॥

कर्मस्थाने सुधारश्मौ बहुभाग्यो महाधनी ।
मनस्वी च मनोज्ञश्च राजमान्यश्च जायते ।२२।

जिसके कि चन्द्रमा दशम भवन मे होवे वह मनुष्य विशिष्ट भाग्य वाला महाधनाढ्य, उदार चित्त, सुन्दर, तथा राजमान्य हो ॥२२॥

लाभे चन्द्रे लाभयुक्तः प्रगल्भः सुभगो नरः ।
सुमार्गगामी लज्जालुःप्रतापी भाग्यवान् भवेत्

जिसके कि चन्द्रमाग्यारहवें घर मे पड़ा हो वह लाभवान् ढीठ, सुन्दर, श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाला, शर्मिन्दा, प्रतापो तथा भाग्यशाली होवे ॥२३॥

व्यये चन्द्रे पापबुद्धिर्बहुभक्षी पराजितः ।

कुलाधमो मद्यपश्च विकारी जातको भवेत् २४

जिसके कि चन्द्रमा व्यय १२ मे पडा हो वह पाप मे बुद्धि रखने वाला, बहुत भोजन करने वाला दुश्मनो से हारा हुआ कुल मे नीच, शराबी,तथा विकारवान् होवे ॥ इति चन्द्रफलम् ॥

अथ मङ्गलफलम्—

भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः ।
असत्यवादी निर्द्रव्यो जायते परदारकः ॥२५॥

जिसके मङ्गल लग्नस्थान में पड़ा हो वह जातक कुरूप, रोगी, बन्धुओ से रहित, झूठ बोलने वाला, निर्धन तथा पर स्त्री को घर मे रखने वाला होवे ॥२५॥

धने कुजे धनैर्हीनः क्रियाहीनश्च जायते ।
दीर्घसूत्री सत्यवादी पुत्रवानपि मानवः ॥२६॥

जिसके मङ्गल धन (द्वितीय) भाव मे पड़ा हो वह जातक निर्धन, क्रिया कर्म से हीन, बिलम्ब से कार्य करने वाला सत्यवक्ता तथा पुत्र युक्त होवे ॥२६॥

तृतीये भूसुते जातः प्रतापी शीलसंयुतः ।
रणे शूरो राजमान्यो विख्यातश्च प्रजायते ॥

जिसके कि भौमदेव तृतीय भाव मे बैठा हो वह जातक बड़ा प्रतापी सुशील, युद्ध मे शूर, राजमान्य तथा ससार में प्रसिद्ध होता है ॥२७॥

चतुर्थे भूसुते कृष्णःपित्ताधिक्योऽरिनिर्जितः ।
वृथाटनो हीनपुत्रो महाकामी च जायते ।२८।

चौथे भवन में जिसके मंगल पड़ा हो वह कृष्णवर्ण वाला, पित्त की अधिकता से युक्त, वैरियों से सताया हुआ, व्यर्थ के कामों में इधर-उधर घूमने वाला, पुत्रों से रहित तथा महान् कामी होवे ॥ २८ ॥

पञ्चमे च धरापुत्रे कुसन्तानः सदारुजः।
बन्धुवर्गैं विरक्तश्च नरो दीनोऽपि जायते॥२६

मंगल जिसके पंचम भाव में पड़ा हो वह कपूत सन्तान वाला, सदा रोगी, भाई बन्धुओं में प्रेम रखने वाला तथा दीन होता है ॥ २६ ॥

षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः परिपूरितः।
स्त्रीलालसः पुष्टदेहःशुद्धचित्तश्च जायते ॥३०

छठे भौम जिसके हो वह शत्रुओं से रहित, अनेक धर्मों से परिपूर्ण, स्त्री में लालसा रखने वाला, पुष्ट देह वाला, तथा शुद्ध चित्त का हो ॥ ३० ॥

सप्तमे भूमिपुत्रे च रुधिराक्तोऽपि कोपवान्।
नीचसेवी वञ्चकश्च निष्ठुरोऽपि भवेन्नरः ॥३१

जिसके सप्तम में मंगल पड़ा हो वह पुरुष देह में बहुत से रुधिर वाला, गुस्सा शील, नीचों की सेवा करने वाला, ठगिया तथा निठुर होवे ॥ ३१ ॥

अष्टमे मंगले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः।
अल्पद्रव्यःसरोगश्चनिर्गुणोऽपि भवेन्नरः ।३२

जिसके मंगल अष्टम में पड़ा हो वह पुरुष कोढ़ी, थोड़ी आयु वाला, शत्रुओं से पीड़ित, थोड़े धन वाला, रोगी तथा गुणों से रहित होवे ॥ ३२ ॥

धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुधर्मा गतपौरुषः ।
नीचानुरागी क्रूरश्च सकष्टश्च प्रजायते ॥२३

जिसके कि नवम स्थान मे भौम पड़ा हो वह कुत्सित धर्म को ग्रहण करने वाला, पौरुष हीन, नीचों से प्रेम करने वाला क्रूर, तथा कष्ट भोगने वाला होवे ॥ २३ ॥

कर्मस्थाने महीपुत्रे शुभकर्मा शुभान्वितः ।
सुपुत्री स्यात्सुखी शूरो गर्विष्ठोऽपि भवेन्नरः ॥

जिस पुरुष के दशम में मगल पड़ जाय वह शुभ कर्म करने वाला, कल्याणो से युक्त, श्रेष्ठ पुत्रों वाला, सुखी, शूरवीर तथा घमण्डी होता है ॥ २४ ॥

लाभे भौमे भूरिलाभो नानापक्वान्नभक्षकः ।
नीरोगो नृपमान्यश्च देवद्विजरतो भवेत् ॥२५।

जिस पुरुष के एकादश भाव मे मगल पडा हो वह बहुत से लाभ वाला, अनेक पकवानो का खाने वाला, नीरोग राजमान्य तथा देवता और ब्राह्मणो मे श्रद्धा रखने वाला होवे ॥ २५ ॥

असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुरःशठः ।
बहुवादी विदेशे च सदा गच्छति मानवः ।२६

जिसके कि मगल व्यय १२ मे पड जाय वह खोटे कामों में रुपया खर्च करने वाला, नास्तिक, निठुर, शठ, बहुत वकवाद करने वाला तथा सदा विदेश को जाने वाला हो ॥ २६ ॥

अथ बुधफलम् ।

लग्ने बुधे च गीतज्ञो निष्पापो नृपपूजितः ।

रूपाज्ञानयशायुक्तः प्रगल्भो मानवो भवेत् ३७

जिसके बुध लग्न मे पड़जाय वह पुरुष गीत जानने वाला, निष्पाप, राजमान्य, रूप, ज्ञान तथा यश से युक्त, तथा ढीठ होता है।

चन्द्रपुत्रे धनस्थाने धनधान्यादिपूरितः ।
शुभकर्मा सुखी नित्यं राजपूज्यश्च जायते ।३८

द्वितीय भाव मे जिसके बुध बैठ जाय वह धन धान्यों से पूर्ण शुभकर्मकारी, सुखी तथा सदा राजाओ से पूजित होता है ॥ ३८ ॥

तृतीये च बुधे जातः प्रशस्तो बन्धुमानितः ।
धर्मध्वजो यशस्वी च गुरुदेवार्चको भवेत् ॥३९

जिसके तीसरे बुध पड़ा हो वह प्रशसनीय, गुणवाला, बन्धुओ से सम्मानित, धर्म की उन्नति करने वाला, कीर्तिमान्, एव गुरु तथा देवताओ का पूजक होता है ॥ ३९ ॥

चतुर्थे चन्द्रपुत्रे च बहुभृत्ययशोन्वितः ।
बहुवाक्यो भाग्ययुक्तः सत्यवादी च जायते ४०

जिसके चौथे बुध आ पड़े वह बहुत से नौकर तथा कीर्ति से युक्त, बहुत ज्यादा बोलने वाला, भाग्यशाली तथा सत्यवक्ता होवे ॥ ४० ॥

पञ्चमे रोहिणीपुत्रे पुत्रपौत्रसमन्वितः ।
सुबुद्धिः सत्वसम्पन्नः सुखी भवति मानवः ॥४१

जिसके जन्माग मे बुध पाँचवें स्थान में पड़ा हो वह बेटा नातियों से परिपूर्ण सुबुद्धिमान्, सात्त्विकगुणसम्पन्न, तथा सुखी होता है ॥ ४१ ॥

षष्ठे बुधे नृशंसश्च विरोधी सर्वबन्धुषु।
ईर्ष्याधिकः कामपरो विद्वानपि भवेन्नरः ॥४२

जिसके कि बुध षष्ठ स्थान में पडा हो वह क्रूर स्वभाव वाला, सब भाइयो से विरोध करने वाला, अधिक ईर्ष्या वाला, काम मे आसक्त तथा विद्वान् होता है ॥ ४२ ॥

सप्तमे सोमपुत्रे च रूपविद्याधिको नरः।
सुशीलः कामशास्त्रज्ञो नारीमान्यश्च जायते ॥

जिसके बुध सातवे पड़ा हो वह रूप तथा विद्या में अधिक, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, शील स्वभावे सद्वृत्ते इत्यमरः कामशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियो का मान्य हो ॥ ४३ ॥

बुधेऽष्टमे कृतघ्नश्च कुबुद्धिः परदारकः।
कामातुरः सत्यवादी रोगयुक्तो भवेन्नरः ॥४४

अष्टम स्थान मे जिसके बुध पडा हो वह नर कृतघ्न, कुबुद्धि, परस्त्रीगामी, कामातुर, सत्यवक्ता, तथा रोगी होवे ।४४।

धर्मे बुधे धार्मिकश्च कूपारामादिकारकः।
सत्यवादी च दान्तश्च जायते पितृवत्सलः ४५

नवम भाव मे जिसके बुध पड़ा हो वह धर्मात्मा, कूप (कुंवा) आराम (बगीचा) आदि का लगाने वाला, सत्यवक्ता जितेन्द्रिय तथा पिता का प्रिय होवे ॥ ४५ ॥

दशमे च बुधे जातो धनधान्यसमन्वितः।
बहुभाग्यश्च विनयी कांतियुक्तश्च मानवः ।४६

दशम स्थान मे अगर जिसके बुध पड़ा हो वह धन धान्यों

से युक्त, बहुत भाग्यशाली, विनयवान् तथा कांतिमान् होता है ॥

लाभे सौम्ये नित्यलाभो नीरोगश्च सदा सुखी ।
जनानुरागवृत्तिश्च कीर्तिमानपि जायते ॥४७

एकादश स्थान मे बुध पडा हो तो सदा लाभवान्, सदा नीरोग और सुखी, मनुष्यो मे प्रेम व्यवहार करने वाला, एवम् यशस्वी होता है ॥ ४७ ॥

बुधे व्यये व्ययी लोके रोगी बन्धुसमन्वितः ।
पापसक्तः पराधीनः परपक्षी च जायते ॥४८॥

बुध जिसके व्यय (बारहवें) भाव मे पडा हो वह संसार मे द्रव्य खर्च करने वाला रोगी बन्धुओं से युक्त, पाप कर्म मे आसक्त, पराधीन तथा पराये पक्ष का ग्रहण करने वाला होता है ॥ ४८ ॥ ॥ इति बुधफलम् ॥

अथ गुरुफलम् ।

लग्ने गुरौ सुशीलश्च प्रगल्भो रूपवानपि ।
नृपाभीष्टश्च नीरोगी ज्ञानी सौम्यश्च जायते।४९

जिस पुरुष के गुरुदेव लग्न मे बैठ जाय वह सुशील, ढीठ रूपवान्, राजा का प्रिय, नीरोग, ज्ञानी, तथा सीधा, सज्जन होता है ॥ ४९ ॥

धने जीवे धनी लोकः कृतज्ञो बन्धुसंयुतः ।
गजाश्वमहिषीयुक्तः कान्तिमानपि जायते ५०

जिसके बृहस्पति दूसरे स्थान मे पडे तो वह पुरुष धनाढ्य, कृतज्ञ, भाई बन्धुओ से युक्त, हाथी घोड़ा भेंस आदि से युक्त, तथा कान्तिमान् होता है ॥ ५० ॥

जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षो जितेन्द्रियः ।
मित्राप्तसुखसम्पन्नस्तीर्थवार्ताप्रियो भवेत् ॥५१॥

तृतीय भाव मे बृहस्पति जिसके बैठा हो वह पुरुष तेजस्वी, कर्म में चतुर जितेन्द्रिय, मित्र से प्राप्त हुए सुख से युक्त, तीर्थों की बातो मे प्रेम करने वाला होता है ॥ ५१ ॥

सुखे जीवे सुखी लोके सुभगो राजपूजितः ।
विजितारिः कुलाध्यक्षो गुरुभक्तश्च जायते ।५२

चतुर्थ गृह मे बृहस्पति जिसके पड़ा हो वह पुरुष संसार में सुखी, सुन्दर, राज पूजित, शत्रुओं का मर्दन करने वाला, कुटुम्ब मे प्रधान, तथा गुरुभक्त होता है ॥ ५२ ॥

सुते जीवे सुतैर्युक्तो धार्मिकः पण्डितः सुखी ।
शुद्धचेता दयायुक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥५३।

बृहस्पति जिसके पञ्चम घर मे पड़ा हो वह मनुष्य पुत्रों से युक्त, धर्मात्मा, पण्डित, सुबुद्धिमान्, सुखी, शुद्धचित्तवाला, दयालु एवम् विनयवान् होवे ॥ ५३ ॥

षष्ठे गुरौ विघ्नयुक्तो बहुशत्रुश्च निष्ठुरः ।
उद्वेगी मतिहीनश्च कामुका जायते जनः ।५४

जिसके बृहस्पति षष्ठस्थानस्थित हो वह पुरुष विघ्न युक्त, बहुत से शत्रुओ वाला, निठुर, घवड़ाने वाला, बुद्धिहीन, तथा कामी होता है ॥ ५४ ॥

सप्तमस्थे सुराचार्ये कामचित्तो महाबलः ।
धनी दाता प्रगल्भश्च चित्रकर्मा च जायते ५५

जिसके कि वृहस्पति सप्तम स्थान में पड़ा हो वह मनुष्य काम में चित्त लगाने वाला, महाबलवान्, धनी, दानी, ढीठ, चित्र (फोटो) का कार्य करने वाला होता है ॥ ५५ ॥

जीवेऽष्टमे सदा रोगी कृपणः शोकसंयुतः ।
वहुवैरी कुकर्मा च कुरूपश्च भवेन्नरः ॥५६॥

यदि आठवे स्थान मे वृहस्पति हो तो वह जातक सदा रोगी, कृपण, शोक सयुक्त, वहुत से वैरियो वाला, बुरे कर्म करने वाला तथा कुरूपवान् होता है ॥ ५६ ॥

धर्मे जीवे धर्मकर्त्ता साधुसंगी च शास्त्रवित् ।
निरीहस्तीर्थसेवी च ब्रह्मज्ञश्च प्रजायते ॥५७॥

जिसके वृहस्पति नवम स्थान मे स्थित हो वह जातक धार्मिक कार्यों का करने वाला, साधुओ का सग करने वाला, शास्त्रवेत्ता, चेष्टा रहित, तीर्थो का सेवन करने वाला तथा ब्रह्म का वेत्ता हो ॥ ५७ ॥

कर्मस्थिते सुराचार्ये पुण्यकीर्तिसुखान्वितः ।
राजतुल्यः सुरूपश्च दयालुर्जायते नरः ॥५८॥

जिसके वृहस्पति दशम स्थान मे स्थित हो वह जातक पुण्य कीर्ति वाला, सुखी, राजा के समान धनी, श्रेष्ठ सुन्दर-स्वरूप वाला, तथा दयालु होवे ॥ ५८ ॥

लाभे गुरौ विवेकी स्याद्धस्त्यश्वादिधनैर्युतः ।
चंचलोऽपि सुरूपश्च गुणवानपि जायते ॥५९

एकादश स्थान मे अगर जिसके वृहस्पति पड जाय वह मनुष्य ज्ञानी, हाथी घोड़ा आदि धनो से सम्पन्न, चञ्चल, सुन्दर

स्वरूप, एवम् गुणी होवे ॥ ५९ ॥

व्यये बृहस्पतौ रोगी व्यसनी परकर्मकृत् ।
बन्धुवैरी नीचसेवी गुरुद्वेषी च जायते ॥६०॥

जिसके बृहस्पति व्यय बारहवें स्थान मे पड़ा हो वह पुरुष रोगी, शौकीन, पराये कामो को करने वाला, बन्धुओं का वैरी, नीचो की सेवा करने वाला, तथा गुरु का द्वेषी होता है ।

अथ शुक्रफलम् ।

लग्ने शुक्रे सुशीलश्च वित्तवानपि सुन्दरः ।
शुचिर्विद्वान्मनोज्ञश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥६१॥

जिसके शुक्र लग्न में हो वह पुरुष सुशील, धनाढ्य, सुन्दर, पवित्र, विद्वान्, सबको अच्छा लगने वाला, तथा कृतज्ञ होता है ॥ ६१ ॥

धने शुक्रे धनी विद्वान बन्धुमान्यो नृपार्चितः ।
यशस्वी गुरुभक्तश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥६२॥

शुक्र अगर दूसरे स्थान में हो तो वह आदमी धनाढ्य, विद्वान्, बन्धुओं का मान्य, राजपूजित, कीर्तिमान्, गुरुभक्त तथा कृतज्ञ होता है ॥ ६२ ॥

भार्गवे सहजे जातो धनधान्यसुतान्वितः ।
नीरोगो राजमान्यश्च प्रतापी च प्रजायते ।६३

तृतीय स्थान मे अगर शुक्र पड़ा हो तो वह पुरुष धन और धान्य और पुत्रो से युक्त, नीरोग, राजमान्य तथा प्रतापी होवे ॥ ६३ ॥

सुखे शुक्रे सुखी विज्ञो वहुभार्यो धनाधिकः ।
ग्रामाधिपो यशस्वी स्याद्विवेकी च भवेन्नरः ॥

चतुर्थ स्थान मे अगर शुक्र पडा हो तो वह पुरुष सुखी, विद्वान्, वहुत स्त्री वाला, अधिक धनाढ्य, ग्रामाधीश (तगड़ा जमीदार) कीर्तिमान् एवम् ज्ञानी हो ॥६४॥

शुक्रे सुते समृद्धश्च सुरूपश्च सदोन्नतः ।
पुत्रीपुत्रशतैर्युक्तः सुभगोऽपि भवेन्नरः ॥६५॥

शुक्र पाँचवें स्थान मे हो तो वह पुरुष समृद्धि, सुरूपवान्, सदा उन्नति शील सैकड़ो पुत्र और पुत्रियो से युक्त, तथा सुन्दर होता है ॥६५॥

षष्ठे शुक्रे भवेद्दम्भी जाड्यहानिभयान्वितः ।
दुःसंगी कलही तातविद्वेषी च सदा नरः ६६

शुक्र यदि षष्ठ स्थान मे स्थित हो तो वह घमण्डी जडमति, हानि तथा भय से युक्त, नीच मनुष्यो की सगति करने वाला लड़ाई झगडा करने वाला, हमेशा अपने वाप से द्वेष करने वाला होता है ॥६६॥

सप्तमे भृगुपुत्रे च धनी दिव्याङ्गनायुतः ।
नीरोगः सुखसंपन्नो वहुभाग्यः प्रजायते ॥६७॥

जिसके सप्तम में शुक्र हो तो वह धनवान्, दिव्य स्त्री वाला. नीरोग, सुख से सम्पन्न, तथा वहुत भाग्यशाली होवे ॥

अष्टमस्थे दैत्यपूज्ये सरोगः कलहप्रियः ।
वृथाटनो कार्यहीनो जनानां च प्रियो भवेत्६८

आठवें स्थान में यदि शुक्र जिसके पड़ा हो तो वह पुरुष रोगयुक्त कलह प्रिय, व्यर्थ घूमने वाला, कार्य से हीन तथा मनुष्यों का प्यारा होवे ।।६८।।

धर्मे शुक्रे धर्मपूर्णो ज्ञानवृद्धः सुखी धनी ।
नरेन्द्रमान्यो विनयी नराणां च प्रियः सदा ६९

नवम मे यदि शुक्र जिसके पडा हो वह पुरुष धर्म से पूर्ण, ज्ञान से सम्पन्न, सुखी, धनवान्, राजमान्य, विनयवान्, पुरुषों का प्यारा हो ।।६९।।

कर्मस्थिते भृगोःपुत्रे कर्मवान्निधिरत्नवान् ।
राजसेवी धार्मिकश्च जायते दयिताप्रियः ।।७०

दशम मे यदि शुक्र जिसके पडा हो वह मनुष्य कर्म करने वाला, खजाने तथा रत्नो से परिपूर्ण राज सेवक, धार्मिक, एवं स्त्री का प्रिय हो ।।७०।।

लाभे शुक्रे सदालाभी यशस्वी च गुणान्वितः ।
धनी भोगी क्रियाशुद्धो जायते मानवोत्तमः ।।

शुक्र ग्यारहवें स्थान में हो तो वह पुरुष सदा लाभवान्, यशस्वी, गुणी, धनाढय, भोगी, क्रिया और कर्म से शुद्ध एवं मनुष्यो मे श्रेष्ठ होता है ।।७१।।

व्यये शुक्रे व्ययाढ्यश्च गुरुमित्रविरोधवान् ।
मिथ्यावादी बन्धुवर्गे गुणहीनोऽपि जायते ७२

शुक्र अगर जिसके व्यय स्थान में पड़ा हो तो वह पुरुष खर्च करने वाला, गुरु और मित्रों से विरोध करने वाला, झूठा एव बन्धुवर्ग मे गुण से हीन होवे ।।७२।। इति शुक्र फलम् ।।

अथ शनिफलम् ।

लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः ।
कुशीलः पापबुद्धिश्च शठश्च भवति ध्रुवम् ॥

जिसके लग्न मे शनि पडा हो वह पुरुष सदा रोगी ,कुरूप कंजूस, दुष्ट स्वभाव वाला, पाप कर्म मे बुद्धि रखने वाला, तथा निश्चय करके शठ हो ॥७३॥

धनेमन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः ।
देहास्थिपित्तरोगश्च गुणःस्वल्पोऽपि जायते ॥

जिसके कि द्वितीय स्थान मे शनि पडा हो वह पुरुष निर्धन, वात पित्त तथा कफ से युक्त, देह और हड्डी तथा पित्त का रोगी एव अल्पगुण वाला होता है ॥७४॥

छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो गुणवत्सलः ।
शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते ७५

जिसके कि शनि तृतीय भवन मे पडा हो वह पुरुष प्रसन्न चित्त, गुणो का प्यारा, शत्रु मर्दक, मनुष्यो का मान्य धनाढ्य, तथा शूरवीर होवे ॥७५॥

सुखे मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्था वान्धवैर्नरः ।
गुणस्वभावो दुःसंगो कुजनैश्चावृतः शठः ७६

चौथे घर मे यदि शनि जिसके पडा हो वह सुखो से रहित हो, तथा उसका धन भाइयो द्वारा चोर लिया जाय, और गुणी स्वभाव वाला, दुष्टो के सङ्ग वाला, तथा दुर्जनो से घिरा हुआ और शठ हो ॥७६॥

पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्तिविवर्जितः ।

हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम् ७७

पाँचवे घर मे शनि जिसके पडा हो वह जातक पुत्रो से रहित क्रिया और कीर्ति से रहित, निर्धन, तथा कुरूप होता है ॥

शत्रुस्थाने स्थिते मन्दे शत्रुहीनो महाधनः ।
पशुपुत्रयशोयुक्तो नीरोगो जायते नरः ॥७८॥

छठे घर में अगर जिसके शनि पडा हो वह जातक शत्रुओं से हीन, महाधनी, पशु पुत्र तथा कीर्ति से सम्पन्न एवम् नीरोग होता है ॥७८॥

कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः ।
बहुशत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत् ।७९।

जिसके शनि सप्तम स्थान मे स्थित हो वह पुरुष स्त्री वाला, रोगी, बहुत से शत्रु वाला, रूखे रङ्ग वाला, दुबला पतला तथा मलिन होता है ॥७९॥

क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान् ।
मिथ्याविवादकर्ता स्याद्वातरोगी भवेन्नरः ॥८०

अगर जिसके आठवें भवन मे शनि पडा हो वह जातक गुस्साखोर, दरिद्री बहुत से रोग वाला झूठा झगडा करने वाला तथा बात का रोगी होता है ॥८०॥

धर्मे मन्दे धर्महीनो विवेकी च रिपोर्वशः ।
नृशंसो जायते लोकः परदाररतः सदा ॥८१॥

जिसके नवम् स्थान मे शनि पडा हो वह जातक धर्म से हीन, ज्ञानी, रिपु के वश मे रहने वाला, क्रूर, पराई स्त्री तथा

से प्रेम करने वाला होता है ॥८१॥

कर्मस्थाने सूर्यपुत्रे कुकर्मा धनवर्जितः।
दयासत्यगुणैर्हीनश्चंचलोऽपि भवेन्नरः ॥८२॥

दशम भवन मे जिसके शनि पडा हो वह पुरुष कुकर्मी, निर्धन, दया सत्य तथा गुणो से रहित, एव चञ्चल होता है ॥

छायात्मजे च लाभस्थे सर्वविद्याविशारदः।
उष्ट्रगोमहिषैः पूर्णो राजमान्यः शुचिर्भवेत् ८३

ग्यारहवे स्थान मे जिसके शनि वैठा हो वह पुरुष समस्त विद्याओं मे चतुर, ऊँट गाय तथा भैंसो से परिपूर्ण तथा राजमान्य होवे ।८३।

असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः।
वन्धुवैरः कुवेषःस्याच्चंचलोऽपि नरःसदा ८४

जिसके कि शनि व्यय (वारहवे) भवन मे पडा हो वह पुरुष खराव कार्यों मे खर्चा करने वाला, कृतघ्नी, धन रहित वन्धुओ का वैरी, कुत्सित वेष वाला, तथा सर्वदा चञ्चल रहे ॥

अथ स्त्रीजन्मलग्नयोगफलम्—

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः।
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रो षष्ठेऽष्टमे यदा ।८५।

यहाँ से अव स्त्रियो का जन्माङ्ग फल वताया जाता है कि अगर जिस स्त्री के जन्माङ्ग मे जन्म लग्न मे या सप्तम पापग्रह हो तो उस स्त्री का पति सातवें वर्ष मे मरजाता है, और अगर चन्द्रमा छठे या आठवें पड़ा हो तो आठवें वर्ष मे पति की

मृत्यु हो जाती है ॥८५॥

गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मङ्गले ।
अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः ॥

जिस स्त्री के आठवें स्थान मे शुक्र या गुरु आ बैठे तो पुत्र उसका नही जीता है अगर मङ्गल आठवे हो तो गर्भ नष्ट हो जावे, स्त्रियो के वास्तव में आठवे स्थान मे कोई भी ग्रह अच्छा नही होता है ॥८६॥

एकः पुत्रो भवेद्राजा पञ्चमस्थो यदा रविः ।
मङ्गले च त्रयःपुत्रा गुरौ पञ्च प्रकीर्तिताः ।८७

जिस स्त्री के पञ्चम भवन मे सूर्य होवे तो उस स्त्री के एक ही पुत्र होवे और वह राजा हो, और अगर मङ्गल पांचवें हो तो तीन बेटा हों और गुरु पचम भवन मे हो तो पांच लडका होवे ॥८७॥

पञ्चमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत् ।
बुधे कन्याश्चतस्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः ॥

जिस स्त्री के पञ्चम भवन में चन्द्रमा हो तो उस स्त्री के दो बालिका हों, और अगर बुध पांचवे हो तो चार लड़की और यदि शुक्र पञ्चम में हो तो सात कन्या होवे । ८८॥

षडेव कन्या जायन्ते धर्मस्थाने यदा सितः ।
सप्तमे च यदा राहुः स्त्रियाः पुत्रस्तदा भवेत् ॥

जिस स्त्री के जन्माङ्ग मे लग्न से नवम घर में शुक्र हो तो छः कन्या हों और अगर राहु सातवें हो तो एक पुत्र होता है ।

सुरूपा भार्गवे लग्ने साहंकारा धरासुते ।

बुधे वक्रा गुरौ शुद्धा शनौ दारिद्र्यदुर्भगा ६०

जिस स्त्री के लग्न मे शुक्र हो वह स्त्री सुन्दर रूपवती होवे और अगर मङ्गल लग्न मे पड़ा हो तो वह स्त्री बडी अभिमानवती हो, बुध हो तो टेढी, बृहस्पति हो तो शुद्ध प्रकृति वाली होवे, और शनि लग्न मे पड़ा हो तो वह स्त्री दरिद्रा तथा दुर्भाग्यवती होवे ॥६०॥

पापयोरन्तरे लग्नै चन्द्रे वा यदि कन्यका ।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥

जिस स्त्री के लग्न स्थान मे दो पाप ग्रहो के मध्य मे या लग्न मे चन्द्रमा बैठा हो वह स्त्री अपने पिता तथा श्वसुर इन दोनो कुलो का नाश करती है ॥६१॥

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ।
लग्नै च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका६२

जिस स्त्री के द्वादश तथा अष्टम भवन मे मङ्गल पड़ा हो और उक्त स्थानो मे ही कोई अन्य क्रूर ग्रह भी पडा हो तथा राहु लग्न मे स्थित हो तो वह कन्या अवश्य ही रण्डा (विधवा) हो जाती है ॥६२॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत् ।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरंभ्रमति वेश्मसु ।६३।

जिस स्त्री के सप्तम मे शुक्र हो वह स्त्री कुल को बट्टा लगाने वाली होती है, और अगर मङ्गल कर्क राशि का हो तो स्वेच्छानुकूल घर घर घूमती फिरे ॥६३॥

*लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपिवा ।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेकं नास्त्यत्रसंशयः ९४

लग्न से सप्तम पाप ग्रह हो, अथवा चन्द्रमा ही से सातवें कोई पाप ग्रह हो तो स्त्री पुरुष दोनो में से एक की अवश्य ही मृत्यु होती है इसमें सन्देह नही, (उक्तयोग स्त्री के ही केवल हो और मनुष्य के न हो तो मनुष्य मारा जाता है और अगर मनुष्य के ही हो और स्त्री के न हो तो स्त्री मारी जाती है उक्त योग दोनों के हो तो कोई शङ्का नही ॥९४॥

लग्ने वा मेषगः सूर्यश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ।
सद्यो निहंति दम्पत्यौ कन्या तत्र न संशयः ॥

लग्न मे सूर्य होवे या मेष राशि का सूर्य हो, अथवा चन्द्रमा से सातवे सूर्य पड़ा होय तो वह कन्या निश्चय ही अपने पति के साथ साथ मृत्यु को प्राप्त होती है ॥९५॥

लग्ने ऽव्यये चतुर्थे च पञ्चमे सप्तमे ग्रहाः ।
पतिवश्या भवेन्नारी नारीवश्यो भवेत्पतिः॥९६॥

जिस स्त्री के लग्न मे बारहवें, चौथे, पांचवें, सातवें, स्थान मे ग्रह होवे तो वह स्त्री पति के वश मे रहती है तथा उसका पति भी उसके वश मे रहता है ॥९६॥

अथ तृतीयः परिच्छेद

तत्रादौ नरचक्रम् ।

लिखित्वा नरचक्रं च सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।

* यह योग मङ्गली का सा मालूम पड़ता है ।

तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥१॥
वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥२॥
ऋक्षाणि हृदये पंच नाभौ स्यादेकमेव हि ।
ऋक्षं गुह्ये न्यसेदेकमेकैकं जानुनोर्द्वयोः ॥३॥
नक्षत्राणि षडन्यानि दद्यादंघ्रिद्वये बुधः ।
सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधि गण्यते ॥४॥

पुरुप के आकार का सा एक चक्र लिखे फिर जिस नक्षत्र पर सूर्य वैठा हो उस नक्षत्र समेत तीन नक्षत्र इस पुरुषाकार चक्र के मस्तक पर रक्खे, तत. मुख पर ३ तीन नक्षत्र धरे, और एक एक नक्षत्र दोनो कन्धो पर रक्खे, फिर उसी प्रकार एक एक दोनो भुजाओ पर, तथा एक एक नक्षत्र दोनो हाथो पर धरे, पाँच नक्षत्र छाती पर रक्खे, नाभि पर एक नक्षत्र रक्खे, एक नक्षत्र गुदा पर, तथा एक एक दोनों घोटुओ पर, और छ नक्षत्र दोनो चरणो पर रक्खे, इस तरह इस प्रकार सूर्य नक्षत्र से लेकर जन्म नक्षत्र पर्यन्त नराकार चक्र पर नक्षत्र रक्खे, फिर उसका आगे कहा हुआ फल कहे ॥ इति नरचक्रम् ॥

अथ सूर्यचक्रफलम् ।

पादस्थिते च नक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेव च ।
विदेशगमनं जानौ गुह्ये स्यात्पारदारिकः ॥५॥
अल्पतोपी भवेन्नाभौ हृदये चेश्वरस्तथा ।

तस्करः पाणियुग्मे च बाहुस्थाने बली भवेत् ॥
स्कन्धे गजस्कन्धगामी मुखे मिष्टान्नभोजनम् ।
मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबन्धी भवेन्नरः ॥७॥

जिसका जन्म नक्षत्र नराकार चक्र के पैर पर पड़े तो वह मनुष्य निर्धन तथा थोडी आयु वाला होवे, और अगर घोटुओ पर जन्म नक्षत्र पडे तो विदेश यात्रा करे और गुदा पर पडे तो पर स्त्री से गमन करने वाला होवे, नाभि पर पड़े तो थोडी चीज से ही सन्तुष्ट रहे, और हृदय पर अगर पड़े तो ऐश्वर्य शाली होवे और यदि दोनों हाथो पर पड़े तो चोर हो, और भुजाओ मे पड़ जाय तो बडा पराक्रमी हो, कन्धों पर पडे तो हाथी की सवारी प्राप्त करे, मुख पर पड़े तो मिष्टान्न भोजन करने वाला हो, एवं मस्तक पर जन्म नक्षत्र पड़ जाय तो हल्कारे का काम करने वाला होवे ॥५॥६॥७॥

मस्तक	मुख	स्कन्ध	बाहु	हस्त
३	३	२	२	२
हृदि	नाभि	गुह्य	जानु	चरण
५	१	१	२	६

अथ चन्द्रचक्रम् ।

जन्मराशेश्च नक्षत्रान्नक्षत्रं वर्तमानकम् ।

गणयेद्गणकः प्राज्ञश्चन्द्रस्यैव शुभाशुभम् ॥८॥

जन्म राशि के नक्षत्र से लेकर चन्द्रमा के वर्तमान नक्षत्र तक गणितज्ञ विद्वान् ज्योतिषी गिने और उसका शुभाशुभ फल रहे ॥८॥

षडास्ये पृष्ठके षट्कं करे षट्कं त्रयं गुदे ।
त्रयं पादे त्रयं कंठे दातव्यं गणकोत्तमैः ॥९॥

मु०	पृ०	क०	गु०	चं०	कं०	चन्द्र
६	६	६	३	३	३	चक्रम्

इस चन्द्र नराकार चक्र मे इस तरह नक्षत्र स्थापन करे कि छ नक्षत्र मुख पर तथा छ नक्षत्र पीठ पर, और छ हाथ पर, तीन गुदा पर, तीन चरण पर, और तीन नक्षत्र कण्ठ पर विद्वानों को रखने चाहिये ॥९॥

अथ चंद्र चक्रफलम् ।

मुखे हानिश्च विज्ञेया धनलाभो हि पृष्ठके ।
हस्ते राजभयं ज्ञेयं राजमानं च गुह्यके ॥१०॥
स्थानभ्रष्टो भवेत्पादे कण्ठे सर्वसुखं भवेत् ।
जन्मनक्षत्रतो चन्द्रनक्षत्रस्य फलं क्रमात् ११

मुख पर नक्षत्र पडे तो हानि हो, और पीठ पर हो तो धनका लाभ, हाथ पर हो तो राजा से भय, गुदा पर पड़े तो राजा

से मान, पैर पर पड़े तो स्थान से भ्रष्ट हो, कण्ठ पर पडे तो सर्व सुख हो, इस प्रकार जन्म नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र का फल क्रम से कहे ॥१०॥११॥ ॥ इति चन्द्रचक्रम् ॥

अथ भौमचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादि त्रीणि चानने ।
नेत्रे त्रयं त्रयं मौलौ चतुष्कं बाहुयुग्मके ॥१२॥

मु०	ने०	मौ०	बा०	क०	हृ०	गु०	च०	भौम-
३	३	३	४	२	५	३	४	चक्रम्

कण्ठे द्वे हृदये पंच त्रयं गुह्ये श्रुतिः पदोः ।
मुखे रोगं धनं नेत्रे यशो मूर्ध्नि धनं हृदि १३
कण्ठे हिक्का रतिर्गुह्ये पादे देशान्तरं व्रजेत् ।
वामबाहौ भवेद्रोगो दक्षिणे गणको भवेत् ।१५

जिस नक्षत्र पर मङ्गल हो उस नक्षत्र से लेकर ३ नक्षत्र मुख पर रक्खे, ततः तीन नक्षत्र नेत्र पर, तीन मस्तक पर, फिर चार नक्षत्र दोनो बाहुओ पर, तत दो कण्ठ पर, फिर पाँच हृदय पर, फिर तीद गुदा पर, चार दोनो चरणों पर रक्खे ।

मुख पर नक्षत्र पडे तो रोग होवे, नेत्र पर पड़े तो धन, मस्तक पर पड़े तो यश प्राप्त हो, हृदय पर पड़े तो धन मिले, कण्ठ पर पड़े तो हिचकी का रोग, गुदापर पड़े तो रति प्राप्त होवे, पैरों पर पड़े तो देशान्तर को गमन होवे, वाम भुजा पर पड़े तो रोग हो, और अगर दाहिनी भुजा पर पड़े तो ज्योतिषी

होवे ॥१२॥१३॥१४॥ ॥ इति भौम चक्रम् ॥

अथ बुधचक्रम् ।

बुधो यत्र भवेद्दक्षे तदादौ विलिखेत्क्रमात् ।
मुखे ज्ञानाय पञ्च स्युर्नेत्रे राज्याय पंच च ॥
पंच कण्ठे सुखाय स्याद् हृदि ज्ञानाय पंच च ।
जयाय पादयोः पञ्च करे च ज्ञानदं द्वयम् ॥

मु०	ने०	क०	हृ०	च०	ह०	गु०	बुध—
५	५	५	५	५	२	१	चक्रम्

एकं गुह्ये च नक्षत्रं क्षयं च परकीर्तितम् ।
जन्मनक्षत्रपर्यन्तं बुधचक्रे विचारयेत् ॥१७॥

जिस नक्षत्र पर बुध हो उस नक्षत्र से लेकर पाच नक्षत्र मुख पर रक्खे फल उनका ज्ञान प्रद है पाँच नक्षत्र नेत्र पर धरे उनका फल राज्य दायक है, फिर पाच नक्षत्र कण्ठ पर धरे फल सुख होता है, तत पाँच हृदय पर धरे जिनका ज्ञान देना फल है, पैरो पर पाँच रक्खे जो कि नाश कारक होते हैं, हाथ पर दो रक्खे जिनका फल ज्ञान दायक होता है, और एक नक्षत्र गुह्य (गुदा) स्थान पर रक्खे फल उसका विनाश है, इस प्रकार बुध चक्र मे जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनकर शुभाशुभ फल विचारे ॥१५॥१६॥१७॥ ॥ इति बुध चक्रम् ॥

अथ गुरुनराकार चक्रम् ।

*मौलौ चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कन्ध-
युग्मे च लक्ष्मीरेकं कण्ठे विभूतिर्मदनहरि-
मितं वक्षसि प्रीतिलाभः । षड्भिः पीडांघ्रि-
युग्मे जलधिपरमितं वामहस्ते च मृत्युर्दृग्युग्मे
त्रीणि दद्युर्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्च-

---

* पद्यमिदमित एव मानसागरीपद्धतावुद्धत प्रतीयते—
" हिन्दीभाषाप्रधानाचार्यवर्य्यकविकुलरत्नार्णवकवीन्द्रमहाकवि-
श्रीकेशवदासस्य पिताऽयमासील्लग्नचन्द्रिकाशीघ्रबोधादि-
ग्रन्थनिर्माताकाशिनाथभट्टाचार्यः इतिस्पष्टीकृत 'बुन्देल
वैभव' ग्रन्थरत्ननिर्मातृटीकमगढनिवासिबुन्देल भूमि भूषण-
कविरत्नश्रीगौरीशङ्करशर्म्मद्विवेदिभि. । काशिनाथसमयोऽपि
तत्र निर्धारित, तत्समयावलोकनेन ज्ञायते यन्मानसागरीग्रन्थ-
निर्माता काशिनाथादर्वाचीन, मानसागरीग्रन्थस्तु सर्वथा
सगृहीतग्रन्थ एवेति नास्त्यविदित विपश्चिदपश्चिमानां
ज्योतिर्विदाम्, "शीघ्रबोधादिग्रन्थनिर्माता महाकविकेशवदास-
स्यपितैवासीत्" इतितु हिन्दीनवरत्नाद्यनेकसाहित्यिकग्रन्थेषु
स्पष्टमेव प्रतिपादितसाहित्यकलाकोविदैरन्यैरपि विद्वद्भि,
भट्टाचार्य इत्युपाधिस्तु काशिनाथः स्ववैदुष्यप्रकर्षेण बुन्देल-
राजेन्द्रजीतसिंहपितुर्मधुकरशाहाल्लब्धवान् तदाश्रयत्वाच्चानेकान्,
ग्रन्थान्निर्मितवान् पुराणवाचनवृत्तिं च कृतवानिति ।
समुचितपर्यालोचनेन स्पष्ट भवति यत् शीघ्रबोधलग्नचन्द्रिकयो
रचनाशैली सर्वथा एककर्तृकत्वान्मिथः सवदत्येवेति तत्र
कर्त्तृभेद एव मूलम् ।

क्रमेतत् ॥१८॥

जिस नक्षत्र पर बृहस्पति बैठा हो उससे लेकर चार नक्षत्र बृहस्पतिपुरुषाकार के मस्तक पर रक्खे उनमे यदि जन्म नक्षत्र आजाय तो राज्य, फिर चार कन्धो पर धरे लक्ष्मी प्राप्ति फल एक कण्ठ मे रक्खे, फल–विभूति प्राप्ति, ततः पाँच नक्षत्र हृदय मे रक्खे फल-प्रीति-प्राप्ति, छ पैरो मे फल-पीडा प्राप्ति, चार दाँये हाथ पर मृत्यु प्राप्ति, फिर तोन नक्षत्र नेत्रो मे स्थापन करे अगर उनमे जन्म नक्षत्र हो तो उस मनुष्य को राजा के समान सुख मिलता है, इस तरह गुरुनराकार चक्र का फल कहा गया है ॥१८॥

म०	स्क०	क०	हृ०	च०	राहु	ने०	गुरु चक्रम्
४	४	१	५	६	४	३	

अथ भृगुचक्रम् ।

मौलौ पञ्च द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृदये स्वभात् ।
सप्त वाह्वोस्त्रयं गुह्ये जान्वोर्द्वे जलधिःपदे ॥
सुखं हृदि तथा मौलौ गुह्ये च मरणं ध्रुवम् ।
मुखे सुभोजनंवाह्वोर्मृत्युर्जानौ पदे तथा ।२०।

जिस नक्षत्र पर शुक्र हो उस नक्षत्र से लेकर जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिने और शुक्र नक्षत्र से लेकर पाँच नक्षत्र मस्तक पर रक्खे दो मुख पर तत चार नक्षत्र हृदय पर रक्खे, दोनो भुजाओ पर सात, तीन नक्षत्र गुदा पर धरे, घोटुओ पर दो

पैर पर चार नक्षत्र रक्खे । इसका फल यह है कि हृदय तथा मुख पर अगर जन्म नक्षत्र आकर पडे तो सुख हो, मस्तक एवं गुदा पर आकर पडे तो निश्चय करके मरण होवे मुख पर जन्म नक्षत्र आकर पडे तो अच्छा भोजन प्राप्त हो, बाहु तथा घोंटू एव चरण पर जन्म नक्षत्र पडजाय तो मृत्यु प्राप्त होती है ॥

अथ शनि नराकार चक्रम् ।

*यस्मिन् शनिश्चरति तद्भदनै तदग्रा—
च्चावारि दक्षिणकरेंघ्रियुगे च षट्कम् ।
चत्वारि-वामकरगान्युदरे च पञ्च-
मूर्ध्नि त्रयंनयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥२१॥

जिस नक्षत्र पर शनि पडा हो वह नक्षत्र मुख पर रक्खे, तत. चार नक्षत्र दक्षिण हाथ पर धरे, छः नक्षत्र दोनो चरणोपर धरे, चार नक्षत्र वाम हस्त पर रक्खे पाच नक्षत्र पेट पर, तीन मस्तक पर, दो नक्षत्र दोनो नेत्रो पर तथा दो नक्षत्र गुदापर धरे ।

मु०	द० क०	च०	वा० क०	उद०	मौ०	ने०	गुदा	शनि
१	४	६	४	५	३	२	२	चक्रम्

मुखस्थिते भानुसुतेऽतिपीडा ।
लक्ष्मीर्यशो दक्षिणहस्तसंस्थे ॥
पादद्वयोर्निष्फलता च वामे ।
करे च युद्धे तनुसंशयश्च ॥२२॥

*"यास्मिगञ्छनिश्चरति वक्रगत तदृक्षम्" इति क्व पु पाठः

हृद्यर्थो मस्तके राज्यं नेत्रयो परमं सुखम् ।
गुदे च प्राणसन्देहः शनिचक्रे विनिर्दिशेत् ॥
मुखाच्चरति गुह्याच्च गुह्यादायाति मस्तके ।
मस्तकाल्लोचने यातिलोचनाद्हृदयंब्रजेत् ।२४।
हृदयाद्वामहस्तं च वामहस्तात्पदद्वयम् ।
पादाच्च दक्षिणं हस्तं शनिचारोऽयमुच्यते २५

शनि अगर मुख पर स्थित हो अर्थात् जन्म नक्षत्र शनि चक्राकार मे मुख पर आकर पड़े तो विशेष पीडा होवे, दक्षिण हाथ पर पडे तो यश का लाभ तथा लक्ष्मी लाभ हो,पैरो पर पडे तो किया हुआ कार्य निष्फल होवे, वामहस्त पर पडे तो युद्ध मे प्राणों का खतरा, हृदय मे आकर पडे तो धन,मस्तक पर पडे तो राज्यलाभ, नेत्रो पर पडे तो परम सुख, गुदा पर हो तो प्राणो का सन्देह, इस प्रकार शनि चक्रमे फल ज्योतिर्विद् विद्वान् बतावे।

शनि मुख से गुदा पर चलता है, गुदा से मस्तक पर चलता है, मस्तक से नेत्रो पर आता है, और नेत्रो से हृदय पर जाता है, हृदय से वाम हस्त पर आता है, वामहस्त से दोनो चरणो पर, फिर पैरो से दक्षिण हाथ पर, इस तरह शनि की गति कही गई है ॥ ॥ इति शनि चक्रम् ॥

॥ अथ राहुचक्रम् ॥

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहुस्तदादौ सप्त पादयोः ।
दक्षिणे च भुजे पंच शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥
नक्षत्रे द्वे हृदि न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् ।

पंच वामकरे दद्यान्नाभौ चैकं नियोजयेत् ॥२७

च०	द० क०	शि०	हृ०	मु०	वा०क०	ना०	गु०	राहु
७	५	३	२	१	५	१	३	चक्रम्

गुह्यस्थाने त्रयं दद्याद्राहुचक्रमिदं स्मृतम् ।
पादयोर्धनहानिः स्यात्सन्तापो दक्षिणे करे ॥
मस्तके च भयं शत्रोर्हृदये दुर्जनप्रियः ।
मुखे दुर्जनसंहारो मृत्युर्वामकरे भवेत् ॥२८॥
नाभिस्थं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥

जिस नक्षत्र पर राहु हो उससे लेकर सात नक्षत्र पैरो पर धरे, पाँच नक्षत्र दक्षिण भुजा पर तीन शिर पर.हृदय पर दो नक्षत्र, और मुख पर एक नक्षत्र, वाम हाथ पर पाँच नक्षत्र रक्खे नाभि पर एक नक्षत्र रक्खे, तीन गुदा पर रक्खे, इस प्रकार राहु चक्र कहा गया है ।

अगर जन्म नक्षत्र पैरो पर पडे तो धन हानि,दक्षिण हाथ पर पड़े तो सन्ताप, मस्तक पर पडे तो शत्रु से भय, हृदय पर जन्म नक्षत्र आकर पडे तो दुर्जनो की सगति मिले, मुख पर पड़े तो दुष्टो का नाश, वाम हस्त पर आकर पड़े तो मृत्यु हो, नाभि पर पडे तो सर्वनाश हो, गुदा पर पड़े तो प्राण नाश होवे ।

॥ अथ केतु फलम् ॥

यस्मिन्नृक्षे भवेत्केतुस्तदादौ तु फलं वदेत् ।

नेत्रे द्वे रोगशोकाय मुखे लाभाय पञ्च च ३१
राज्यप्रदं त्रयं मौलौ नक्षत्रं परिकीर्तितम्।
चतुष्कं दक्षिणे हस्ते नक्षत्रं च यशःप्रदम्॥
वामहस्ते चतुष्कं च भयरोगकरं सदा।
एकं नाभौ च नाशाय गुह्ये द्वे मृत्युकारके॥
ऋक्षाणि पादयोःषट् च बन्धुनाशकराणि च।
केतुचक्रस्य माहात्म्यं देहस्थं ज्ञायते बुधैः।३४

जिस नक्षत्र पर केतु होवे उससे लेकर दो नक्षत्र नेत्र पर स्थापित करे जो कि रोग तथा शोकफलदायक होते हैं, पांच नक्षत्र मुख पर जो कि लाभदयक होते है, तीन नक्षत्र मस्तक पर रक्खे जो कि राज्यप्रद होते है, चार नक्षत्र दक्षिण हस्त पर यश देने वाले, चार नक्षत्र वाम हस्त पर भय तथा रोग के देने वाले होते है एक नक्षत्र नाभि पर नाश करने वाला, दो नक्षत्र गुदा पर मृत्यु करने वाले, पैरो पर छ बन्धुनाशकारक इस तरह केतु चक्र का माहात्म्य केतु नर देह मे विद्वानो को जानना चाहिये॥३१॥३२॥३३॥३४॥ इति केतु चक्रम्।

ने०	मु०	म०	द०क०	वा०क०	ना०	गु०	चरण	केतु-
२	५	३	४	४	१	२	६	चक्रम्

अथ स्त्रीचक्रम्।

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टभानि च।
हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत्।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र पर्यन्त गिने, उनमे से पहिले तीन नक्षत्र मस्तक पर: सात मुख पर, आठ नक्षत्र दोनों स्तनो पर, तीन हृदय पर, तीन नाभि पर, ततः तीन गुदा पर स्थापन करे ॥३५॥

मस्तक	मु०	स्त०	हृ०	नाभि	गुदा	स्त्री
३	७	८	३	३	३	चक्रम्

मौलौ सन्तापकःसूर्यो मुखे मिष्टान्नदो भवेत् ।
स्तनयोःकामदःप्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियाः ।
नाभौ पतिसुखं मत्ते गुह्ये कामप्रदः सदा ।
सूर्यडिंभाख्यचक्रंतु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः ३७

अगर जन्म नक्षत्र सूर्य पुरुषाकार के माथे पर पड़े तो सूर्य सताप करे, अगर मुख पर पड़े तो मिष्टान्न देने वाला होता है, स्तनो पर पडे तो स्त्रियो को काम देने वाला होता है, हृदय पर पडे तो सुख प्रद होता है, नाभि पर पडे तो पति को सुख देने वाला हो, एव गुदा पर पडे तो सदा काम देने वाला होता है। इस प्रकार यह सूर्यडिम्भाख्य चक्र स्त्रियो के शुभाशुभ फल का देने वाला विशेष कर कहा गया है ॥ ३६-३७ ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

१ऊर्ध्वास्तिस्रस्त्रिशूलाग्रे तिर्यक्तिस्रस्तथा स्थिताः

१ तथाचोक्त ढुण्ढिराजेनापि स्वकीयग्रन्थे चक्रमिदम्—
"सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदित महत् ।

द्वे द्वे रेखे कोणयोश्च शृङ्गयुग्मं तथैकतः ३८
मध्यत्रिशूलं दण्डाधो भानुनक्षत्रतोल्लिखेत् ।
अन्यान्यभिजिता सार्द्धं लिखेदेकं समस्तके ३९

तद हं विशद वक्ष्ये चमत्कृति कर परम्" ॥
त्रिशूलकाग्रा सरलाश्च तिस्र ।
किलोर्ध्व रेखा. परिकल्पनीया. ॥ इत्य.दिना प्रोक्तम्

पहिले त्रिशूलाकार (अग्रभाग के सहित) तीन रेखा सीधी (खडी हुई) करे, तत. मध्य मे तीन रेखा तिर्छी (आडी) करे, फिर दो दो रेखा कोनो मे खीचे, तथा एक एक रेखा दोनों शृंगो मे खेचे, फिर त्रिशूल के नीचे की मध्य की लकीर में सूर्य नक्षत्र से लेकर प्रदक्षिणक्रम से अभिजित् सहित सब नक्षत्र रक्खे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अधःस्थितैस्त्रिनक्षत्रैरुद्वेगभयबन्धनम् ।
रेखाष्टके भवेल्लाभःऋक्षषट्के तथा पुनः ।४०।
शृङ्गद्वये रोगभंगो मृत्युःशूलत्रये स्फुटम् ।
विवादे विग्रहे युद्धे रोगार्ते गमने तथा ॥
सूर्य्यकालानलं चक्रं कथितं गणकोत्तमैः ।४१।

फिर देखे कि जन्म नक्षत्र किस स्थान पर पड़ा है अगर जन्म नक्षत्र त्रिशूल वाली रेखाओ के मूल में पड़े तो क्रमशः उद्वेग, भय तथा बन्धन होवे, और यदि चारो कोनो की आठ रेखाओ मे पडे तो लाभ होता है, तिर्छी रेखाओ के छ. नक्षत्रो में आजाए तो भी लाभ होता है, दोनों शृंगो मे जन्म नक्षत्र आवे तो रोग का नाश होय, और अगर तीनो शूलो में हो तो निःसदेह मृत्यु हो, यह सूर्यकालानल चक्र विवाद (मुकद्दमा) विग्रह (लड़ाई झगडा) युद्ध, रोग पीडा यात्रा मे प्रयत्न पूर्वक विचारना चाहिये यह सूर्य कालानलचक्र उत्तम ज्योतिषियो ने कहा है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अथ जन्मराशिवेधफलम् ।

रवेर्वेधे मनस्तापो * द्रव्यहानिर्धरासुते ।

'* द्रव्यहानिश्च भूसुते' इति क्व० पु० पाठः राहुः

रोगपीडाकरो मन्दो राहुकेतू च मृत्युदौ ।४२।
गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रतिलाभश्च भार्गवे ।
स्त्रीलाभश्चन्द्रवेधे च सुखंस्याद् बुधवेधतः ।४३
जन्मराशेश्च वेधे च फलमेतत्प्रकीर्तितम् ।४४।

सूर्य का वेध हो तो मन मे ताप, भौम का वेध हो तो धन नाश, शनि का वेध रोग की पीडा करने वाला होता है, राहु केतु का वेध मृत्युप्रद होता है, गुरु का वेध लाभप्रद होता है, शुक्र के वेध मे स्त्री संभोग का लाभ होता है, चन्द्रमा के वेध मे स्त्री लाभ होता है, बुध का वेध सुख दायक है, यह जन्म राशि के वेध से फल कहा गया है अर्थात् जन्म राशि पर सूर्यादि ग्रहो का वेध आपडे तो उक्त फल जानना ॥४२॥४३॥४४॥

चन्द्रकालानलचक्रम् ।

चंद्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेद्बुधः ।
चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि १ मध्यभिन्नानि कारयेत्१
पूर्वत्रिशूलमध्यस्थं दिनऋक्षादि लिख्यते ।
त्रिशूले च वहिर्मध्ये मध्ये बहिस्त्रिशूलके ।२।
नामऋक्षं स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ।
त्रिशूले चक्रवाह्ये च चक्रमध्ये तथैव च ।३।

केतुश्च मृत्युद. इति क्व० पु० पाठः । २ न लाभश्च भार्गवे इति क्व० पु० पाठ०. ॥

१ मध्यत्र्यास्राणि कारयेत् इति क्व० पु० पाठः । पूर्वे त्रिशूलमध्यस्य दिवसज्ञ समा लिखेत् इति क्व० पु० पाठ. ।
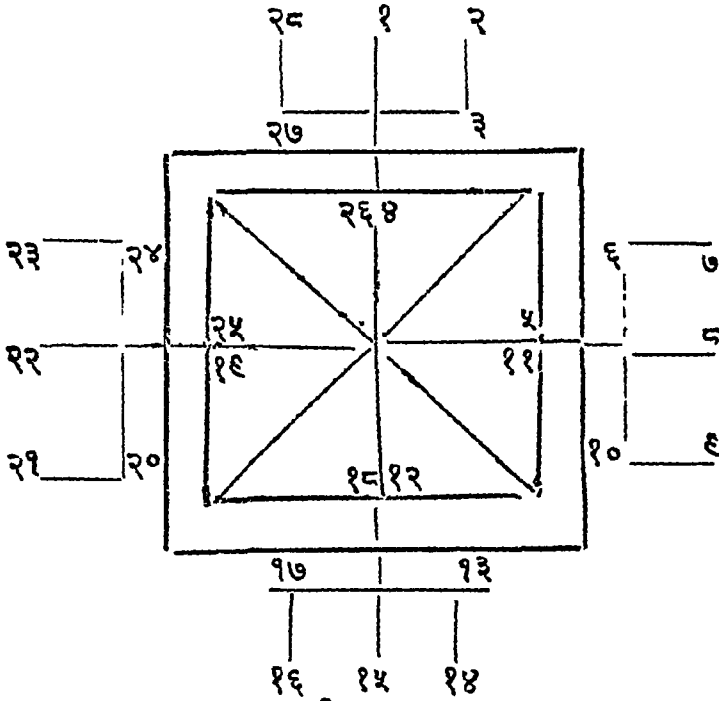
त्रिशूलेषु भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके ।
लाभक्षेमौ जयःप्रज्ञा चन्द्रगर्भे न संशयः ।४।
वर्जनीयं प्रयत्नेन प्रथमाष्टत्रिपंचकम् ।
ऋक्षं द्वाविंशकं चात्र कालरूपं न संशयः ।५।
दिनभाद्द्वे त्रयं शैलात्त्रितयं च चतुर्दशात् ।
चन्द्रकालानले काल एकविंशतितस्त्रये ॥६॥
लाभालाभौ सुखं दुःखं जयश्चैव पराजयः ।
चन्द्रकालानले चक्रे ज्ञानं संशयवर्जितम् ॥७॥

चन्द्राष्टके जयो लाभो मध्यशूलाष्टके मतः।
राह्वष्टके भवेद्व्याधिर्मृत्युःकेतुचतुष्टये ॥८॥

चन्द्रकालानल चक्र को आकाश के आकार का सा लिखे और चारो दिशाओ मे चार त्रिशूल काढे तथा प्रत्येक त्रिशूलों के मध्य मे त्रिकोण वनावे फिर उनमे पूर्व दिशा के त्रिशूल के मध्य मे वर्तमान दिन नक्षत्र लिख कर क्रमश त्रिशूल मे ततः त्रिशूल के वाहर, फिर त्रिशूल के मध्य मे, फिर मध्य मे पुनः वाहर फिर त्रिशूल मे फिर वाहर इसी तरह क्रम से सर्वत्र त्रिशूलो के वाहर भीतर अभिजित् के सहित समस्त २८ नक्षत्र लिखे जिस स्थान मे नाम नक्षत्र पडे उस स्थानानुसार शुभाशुभ फल कहे। अगर नाम नक्षत्र त्रिशूल पर आपड़े तो मृत्यु, और यदि वाहिर के आठो कोष्ठको मे आ जाय तो मध्यम फल जानना और गर्भ (मध्य) मे नाम नक्षत्र आजाय तो नि सन्देह लाभ, कल्याण, जय, तथा बुद्धि की वृद्धि, होवे। विशेषतया पहिला, आठवाँ पन्द्रहवाँ तथा बाईसवाँ नक्षत्र वर्जनीय है ये चार नक्षत्र काल रूप है इसमे सन्देह नही। दिन नक्षत्र से दूसरा, और सप्तम से तीसरा तथा चौदहवें से तीसरा एवम् इक्कीसवे से भी तीसरा नक्षत्र, चन्द्रकालानल चक्र मे काल स्वरूप है। चन्द्रकालानल चक्र मे लाभ, हानि, सुख, दुख, जय, पराजय का वोध निःसन्देह होता है, चन्द्रकालानल चक्र मे वृत्तमध्यस्थ आठ नक्षत्रो मे जय तथा लाभ जानना, राहु के अष्टक मे रोग, केतुचतुष्टय मे सत्य होतो है ॥१॥८॥

दुर्गाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम्।
ईशाने नामनक्षत्रं दत्वा चाभिजिता सह ॥४४

चतुष्कं च चतुष्कं कोणेषु सकलेषु च ।
मध्ये मध्ये संग्रहं च दद्याद्विज्ञस्त्रयं त्रयम् ॥४६
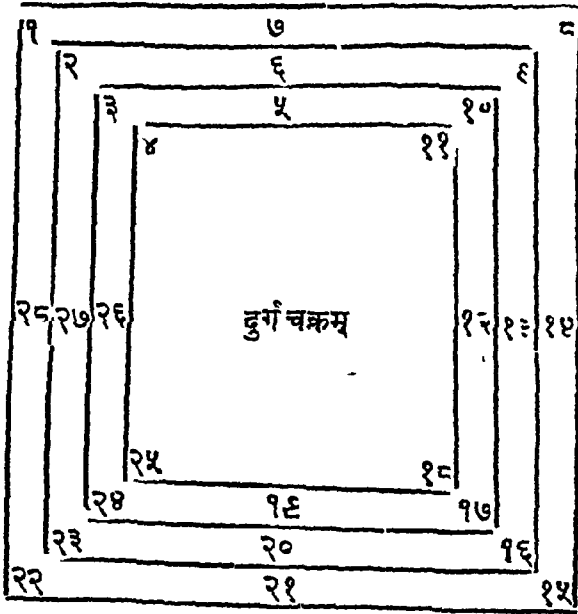
आठ कोने वाला दुर्ग (कोट) के से आकार का एक चक्र बनावे और फिर उसमें ईशान कोण में ग्राम का नक्षत्र लिख कर अभिजित् के सहित चार २ नक्षत्र सब कोनो में तथा बीच बीच में तीन २ नक्षत्र ग्रहो के सहित रक्खे । इस प्रकार इस चक्र मे सब नक्षत्र विद्वान् को रखने चाहिये ॥

दुर्गमध्ये स्थिते सूर्ये जलशोषः प्रजायते ।
चन्द्रे भंगः कुजे दाहो बुधे बुद्धियुतो नृपः ॥
बृहस्पतौ दुर्गमध्ये सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् ।

चलचित्तो नृपश्शुक्रे भेदभंगौ शनैश्चरे ॥४८॥
राहुकेतो दुर्गमध्ये विषदग्धो भवेन्नृपः ।
सूर्यश्च सूर्यपुत्रश्च राहुःकेतुश्च मंगलः ॥४६॥
एते च दुर्गमध्ये स्युर्दुर्गभंगोपि जायते ।
गुरुः शुक्रो बुधश्चन्द्रो दुर्गमध्ये यदा स्थिताः ।
तदा दुर्गो न भज्येत महेन्द्रेणापि भेदितः ॥

दुर्ग के बीच मे यदि सूर्य स्थित होवे तो जल का शेष होवे और अगर चन्द्रमा बैठा हो तो कोट का भग होवे, मङ्गल होवे तो कोट का दाह होवे, बुध हो तो राजा की बुद्धि बढे, और अगर दुर्ग के मध्य मे बृहस्पति आपडे तो खूब सुभिक्ष (सुकाल) हो, शुक्र हो तो राजा का चित्त चलायमान रहे, शनि होवे तो कोट फूट जाय (भग हो जाय) और यदि राहु या केतु होवे तो राजा का विष से जलना होवे । सूर्य, शनि राहु, केतु, तथा मङ्गल, ये पाँच ग्रह अगर दुर्ग मध्य स्थित होवे तो दुर्ग का भङ्ग हो जाय । और दुर्ग मध्य मे गुरु, शुक्र, बुध चन्द्र आकर स्थित हो तो इन्द्र करके तोड़े जाने पर भी दुर्ग न टूटे ॥४७॥४८॥४६॥५०॥

अथ गोचरे रव्यादीनां भोग्यवर्णाणि—

*मासं शुक्रबुधादित्याः सपादद्विदिनं शशी ।

---

* सार्धस्यास्य पद्यस्य शीघ्रबोधेऽप्येवमेवावलोकनादनयोर्ग्रन्थरत्नयोरभिन्नकर्तृकत्वम् सुस्पष्टमेवेति नास्त्यत्र कोऽपि शकापङ्कलकलेशावकाश तत्त्वञ्च हिन्दीभाषाप्रथमाचार्य्यकवीन्द्र महाकविकेशवदासपितृकाशिनाथस्यैव नत्वितरस्य ।

भौमस्त्रिपक्षो जीवोऽब्दं सार्द्धवर्षद्वयं शनिः ॥
राहुः केतुःसदाभुंक्ते सार्द्धमेकं च वत्सरम् ५२

शुक्र, बुध और सूर्य ये तीन ग्रह एक राशि पर एक महीने भर रहते है, और चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन रहता है, मङ्गल डेढ महीना ठहरता है, बृहस्पति एक वर्ष तथा ढाई वर्ष शनि रहता है, राहु और केतु डेढ वर्ष एक राशि को भोगते है ॥५२॥ इति रव्यादीना भोग्यवर्षाणि ।

अथान्यजातज्ञानम् ।

×न पश्यति शशी लग्नं लग्नंस्वामी न पश्यति
न पश्यति यदा सूर्यःसोऽन्यजातस्तदोच्यते ५३

जिसके जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखता हो, तथा लग्न का स्वामी लग्न को न देखता हो, और सूर्य लग्न को न देखे तो वह जातक अपने पिता से भिन्न पर पुरुष से उत्पन्न हुआ जानना ॥५३॥

सुरपतिरस्तगतो वा पापयुतःपापमध्यगो वा स्यात्
सन्ततिबाधां कुरुते केंद्रे वा पापसंयुते चन्द्रे ५४

बृहस्पति अस्त स्थान स्थित हो या पापग्रह के साथ अथवा पापग्रहो के मध्यस्थित हो, या केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान

× तदुक्तम् वराहेण—

'न लग्नमिन्दुं न गुरुर्निरीक्षते, नवा शशाकं रविणा समागतम् ।
सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी, परेण जातप्रवदन्ति निश्चयात् ॥

लग्नम् चन्द्रञ्च गुरुर्ननिरीक्षेत चेज्जातको जारजो बोध्यः । यद्वा एकत्रस्थितौ रविचन्द्रौ गुरुर्न पश्येत्तदापि जारजो ज्ञेयः । अथवा सपापक. शशी रविणा युक्त. स्यात्तदापि जारजातो भवतीति भावार्थः ।

मे स्थित होता हुआ चन्द्रमा ही पापग्रहो से युक्त हो तो वह चन्द्रमा सन्तान की बाधा करता है ॥५४॥

जन्मलग्नज्ञानम् ।

उदयाद्या गता नाड्यस्तासामर्द्धेन संख्यया ।
सूर्यर्क्षाद्यद्भवेद्दर्क्षं तेन लग्नस्य निर्णयः ॥५५॥

सूर्य के उदय से पश्चात् (उत्तर) जितनी घडी पर लग्न निकालनी होवे उसको आधा करे अर्थात् सूर्योदय से लेकर जन्म तक जितनी घडी गत होवें उनको आधा करे और फिर देखे कि सूर्य किस नक्षत्र पर है, सूर्य जिस नक्षत्र पर होवे उस सूर्य नक्षत्र से उस आधी की हुई सख्या तक गिनने पर जो नक्षत्र आवे और उस नक्षत्र की जो राशि हो वही लग्न समझनी चाहिये, यह स्थूल मत है ॥५५॥

उदाहरण—

जैसे किसी का जन्म उत्तराषाढ के सूर्य में १० घडी पर है, इसका आधा किया तो ५ अब उत्तराषाढ से पाँचवां नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद होता है और इस नक्षत्र की राशि कुम्भ होती है तो बस उस समय यह कुम्भ लग्न होगी ।

अब इस जगह यह शका होती है कि-कुछ एक नक्षत्रो मे दो २ राशि भी होती हैं । वहाँ पर लग्न का कैसे निश्चय किया जा सकेगा । इसका निश्चय इस प्रकार करना चाहिये कि सूर्य, नक्षत्र के किस चरण मे है, नक्षत्र के जिस चरण मे सूर्य होवे उसी चरण तक इष्ट सख्या के आधे अङ्क तक गणना करे, फिर स्वयम् ही लग्न ज्ञात हो जायगी—

उदाहरण—

जैसे श्रवण नक्षत्र के सूर्य मे ४ घडी पर किसी का

जन्म हुआ है, चार को आधा किया तो २ हुए, श्रवण से दूसरा नक्षत्र धनिष्ठा है इस धनिष्ठा मे मकर और कुम्भ दो राशि होती है तो ऐसी स्थिति मे देखना चाहिये कि-सूर्य श्रवण के किस चरण में है देखने पर मालुम हुआ कि सूर्य श्रवण के तृतीय चरण में है, श्रवण से दूसरा जो धनिष्ठा है उसका भी तृतीय चरण जानना चाहिये। धनिष्ठा के तीसरे चरण में कुम्भ राशि है अतः निश्चय हुआ कि इस समय कुम्भ लग्न होगी।

लग्न प्रमाणम्—

***तिस्रो मीने च मेषे च चतस्रो वृषकुंभयोः।**
मिथुने मकरे पंच चापे च कर्कटे तथा ॥५६॥
पञ्च सिंहे वृश्चिके च पञ्च कन्यातुलेऽपि च ५७

मीन और मेष तीन तीन घडी रहती है, वृष और कुम्भ चार चार घडी, मिथुन तथा मकर का पांच घड़ी प्रमाण है, उसी प्रकार धन और कर्क का भी प्रमाण पाँच २ घड़ी का है, सिंह वृश्चिक और कन्या तुला लग्न का प्रमाण भी पाँच पाँच घडी का है ॥५६॥५७॥

---

* शीघ्रबोधे त्वनेनैव सफलम् लग्नप्रमाणमुक्तम् तथाहि-
तिस्रो मीने च मेषे च घट्यः पञ्चाब्धय. पलाः।
चतस्रश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडश
मिथुने, मकरे पञ्च घटयः पञ्च पला.स्मृताः।
पञ्च कर्के च चापे च शशिवेदाः पलाः स्मृताः॥
कन्यायाञ्च तुले पञ्च घट्यश्चन्द्राग्नयः पलाः।
घटिका. पञ्च सिंहेऽलौ द्वय वेदा.पला. स्मृता. ॥
एव लग्नप्रमाणम् स्यात्कथितम् पूर्वसूरिभिः।
ग्रन्थद्वयेप्येतल्लग्नप्रमाणविषयकपद्यानां रचना-

१शय्याशिरो लग्नराशेर्द्रव्यगेहं बलाधिकात् ।
चंद्रलग्नांतरालस्थैर्ग्रहैस्तुल्याश्च सूतिकाः ५८

जिस दिशाऽधिपति को जन्म लग्न हो उसी दिशा मे खाट का सिरहाना समझना चाहिये, और ग्रह के बलाधिक्य से अर्थात् जो ग्रह अधिक वली होकर पडा हो उसी के अनुसार घर मे द्रव्य कहे, चन्द्र और लग्न के मध्य मे जितने ग्रह पडे हो उतनी ही उपसूतिका समझनी चाहिये ॥५८॥

लग्ने तदीशपार्श्वे वा यावन्तश्च खयायिनः ।
धनगा व्ययगाश्चैव यावत्यःसूतिकाःस्मृताः ॥

जन्म लग्न मे या जन्म लग्नाधीश के पास जितने ग्रह दूसरे या वारहवे घर मे पडे हो उतनी ही स्त्री सूतिका के पास समझनी ॥५९॥

शैली सर्वथा परस्परम् मिलत्येवेति नाऽनयोरेककर्तृकत्वे कश्चित्सदेहलेश· ।

१ विषयोऽय लघुजातके वृहज्जातके च वराहमिहिरेणापि प्रपञ्चित· ।
गुरुवर्य्यं राजज्योतिपिववलपुरवास्तव्यविद्यावारिधि सनाढ्यवर्यं ज्योतिपाचार्यं स्वर्गीय म० म० श्री गङ्गारामभुख्योपाध्यायैस्तु स्वरचित "दैवज्ञकल्पद्रुम" नामकग्रन्थे—

"मीनेमेपे स्त्रियौ द्वे च चतस्रो वृषकुम्भयो ।
तुलाकन्यकयो. सप्त वाणाख्या धनकर्कयो· ॥
अन्यलग्ने तु तिस्र स्युरेवं ज्ञेयम् विचक्षणै " इति ॥
"यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वागभग्नता ।
रविस्थाने भवेद्दीप शनिस्थाने तु नालकम्"
इति सगृह्योद्धृतम् ।

छागे सिंहवृषे लग्ने जायते नालवेष्टितः ।
वामभागे च नारीणां पुरुषाणां च दक्षिणे ६०

मेष, सिंह और वृष लग्न मे अगर बालक पैदा हो तो वह नाल वेष्टित हुआ समझना चाहिये, और यह नाल स्त्रियों के वाम भाग मे और पुरुषो के दक्षिण भाग मे जानना चाहिये ॥६०॥

चरकेन्द्रस्थितैः खेटैरभावे जन्मलग्नतः ।
केन्द्रस्थानेष्वनेकेषु बलाधिक्याद्वदेद्बुधः ६१

जन्म लग्न को छोड़कर अन्य केन्द्रो मे चार राशि होवें और उन तीन केन्द्रो मे जो ग्रह स्थित हो उनसे विद्वान् को फलादेश कहना चाहिये, और जन्म लग्न के केन्द्र को छोड़कर अन्य तीन केन्द्रो मे यदि अनेक ग्रह हो तो उनमे जो ग्रह अधिक बली होकर बैठा हो उसी से फलादेश कहना चाहिये ॥

*लग्नत्रिभागैर्वर्तिश्च क्रमाद्दशदशांशकैः ।
चन्द्रराशित्रिभागैश्च स्नेहपूर्णः स्थिरो गतः ॥

लग्न के तीन हिस्सों से वत्ती वतावे अर्थात् लग्न १०

---

* तदुक्त बराहाचार्येण—
"द्वार वस्तुनि केन्द्रोपगाद्ग्रहादसति विलग्नर्क्षात् ।
दीपोऽर्कादुदयाद्वर्तिरिन्दुतः स्नेहनिर्देशः" इति ॥

१ लघुजातके बराहः—
"अदृढम् नवमथ दग्ध चित्र सुदृढम् मनोरम जीर्णम् ।
गृहमर्काद्यैर्वीर्यात् प्रतिवेश्म सन्निकृष्टैश्च"

प्रसगवश राहु केतु की राशिस्वामिता तथा उच्च-नीचता भी बताई जाती है—यथा—

अश के भीतर ही हो तो पौन वत्ती वतावे, और जो १० से २० तक लग्न के अश व्यतीत हुए हो तो वत्ती दो हिस्सा की होगी, तथा २० से ३० तक अश व्यतीत हुए हो तो बची पाव हिस्सा की रही समझो। चन्द्र राशि के भाग से तेल की पूर्ण, मध्य, न्यूनता कहे ।।६२।।

१चराद्यर्के भवद्दीपो रव्याद्यैर्बलिभिर्ग्रहैः ।
अदृढं नूतनं दग्धं चित्रं बद्धं शुभं जरत् ।६३।

सूर्य यदि चरादिराशिस्थित होवे तो क्रम से दीपक का विचार वतलावे जैसे कि सूर्य अगर चर राशि मे स्थित हो तो दीपक को चलायमान समझे स्थिर राशिगत सूर्य हो तो दीपक की स्थिरता जाननी चाहिये द्विस्वभाव राशिगत सूर्य हो तो उस (द्विस्वभाव) के पूर्व दल मे स्थिर, उत्तर दल मे चलायमान । सूर्य जन्म लग्न से जिस स्थान मे पडा हो उसी दिशा मे दीपक जानना चाहिये । सूर्यादि ग्रहो की बलवत्ता से प्रसूतिका के घर का विचार किया जाता है अर्थात् सूर्य वली होकर वैठा हो तो प्रसूतिका का घर कच्चा होगा, चन्द्रमा के वली होने पर नूतन, मङ्गल से जला हुआ, बुध से चित्र विचित्र, वृहस्पति से मजवून, शुक्र से सुन्दर, शनि अगर बली हो तो घर को पुराना समझना चाहिये ।।६३।।

***सूर्यशुक्रौ भौमराहू शनिचन्द्रौ बुधो गुरुः ।**
पूर्वादीनां क्रमादेते दिशां नाथाः प्रकीर्तिताः ।।

---

*"कन्या राहुगृह प्रोक्त केतोश्च मिथुन स्मृतम् राहोर्नीच धनुश्चैव केतोस्तस्माच्च सप्तमम् । इति शी० वो० सर्वार्थचिन्तामणौतु--

राहो कन्यागृह प्रोक्तम् राहूच्चमिथुन स्मृतम्

सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु शनि, चन्द्र, बुध और गुरु ये ग्रह क्रम से पूर्वादि दिशाओं के स्वामी हैं, जैसे पूर्व दिशा का स्वामी सूर्य, वन्हिकोण का शुक्र, दक्षिण का भौम, नैर्ऋत्यका बुध इत्यादि क्रम से समझ लेना चाहिये ।।६४।।

अथाष्टोत्तरीदशाचक्रम्—

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत् ।
आर्द्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह ॥६५॥

पाप ग्रहों के नक्षत्र चार, और शुभ ग्रहो के नक्षत्र तीन जानने चाहिये, आर्द्रा से लेकर मृगशिरा पर्यन्त अभिजित् के सहित सब नक्षत्र रक्खे ।।६५।।

षडादित्ये च सर्वाणि चन्द्रे पञ्चदशैव तु ।
मंगले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव तु ॥६६॥
शनौ च दश वर्षाणि जीवे चैकोनविंशतिः ।
राहौ द्वादशवर्षाणि भार्गवे चैकविंशतिः ६७

अष्टोत्तरी दशा मे ६ वर्ष सूर्य की दशा रहती है, चन्द्रमा की १५, मङ्गल की आठ वर्ष, बुध की सत्रह, शनि की दश वर्ष, बृहस्पति की १९ वर्ष, राहु की बारह वर्ष, शुक्र की इक्कीस वर्ष रहती है ।।६६।।६७।।

परमायुः प्रमाणेन गुणयेद्गतनाडिकाः ।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्याप्तं विशोधयेत् ।६८।

एतत्सप्तमराशिस्तु केतोश्चैव तथैव च
राहोर्वृषश्च केतोस्तु वृश्चिक तुङ्गसज्ञितम् ।

गत नाडियो को परमायु के प्रमाण से गुणा कर नक्षत्र का भाग दे शेष को ६० से गुणा करके फिर भाग दे इस तरह भुक्त भोग्य निकालना चाहिये।

आर्द्राचतुष्कमादित्ये चन्द्रे ज्ञेयं मघात्रयम्।
भौमे हस्तचतुष्कं स्यादनुराधात्रिकं बुधे ६९
पूषाचतुष्कं मन्दे च धनिष्ठात्रितयं गुरौ।
राहौ चोत्तरचत्वारि कृत्तिकात्रितयं भृगौ।७०।

आर्द्रा से लेकर चार नक्षत्रो मे जन्म हो तो सूर्य की दशा, मघा से तीन नक्षत्रो मे हो तो चन्द्रमा की दशा समझे हस्त से चार नक्षत्रो मे भौम की दशा, अनुराधा से तीन मे बुध की, पूर्वाषाढ से चार मे शनि की दशा, तथा धनिष्ठा से तीन नक्षत्रो मे गुरु की दशा, उत्तराभाद्रपद से चार नक्षत्रो मे राहु की, और कृत्तिका से तीन नक्षत्रो मे शुक्र की दशा जाननी चाहिये ॥६९। ७०॥

दशा दशाहता कार्या भागो नन्दैर्विधीयते।
अन्तर्दशेयं तस्यैव प्रथमं ज्ञायते दशा।७१।

जब किसी ग्रह की दशा मे अन्तर्दशा निकालनी होवे तो उस ग्रह की जितनी वर्ष होवे उनको उसी ग्रह के वर्ष प्रमाणाक से गुणा कर नो का भाग देवे लब्ध मासादि को अन्तर्दशा समझे जिस ग्रह की दशा होती है उसमे पहले उसी ग्रह की अन्तर्दशा होती है ॥ ७१ ॥

अन्तर्दशाचक्रम्—

दशा सूर्यस्य सूर्यान्ते दशायाः परिगण्यते।

यल्लब्धं नवमिर्भाग तत्तु मासचतुष्टयम् ।७२।

सूर्य के अन्तर मे सूर्य की दशा वर्ष को गुणा कर नौ का भाग देने पर जो लब्ध आया वही ४ मास सूर्य की अन्तर्दशा समझनी चाहिये ॥ ७२ ॥

सूर्यदशाफलम्—

उद्विग्नचित्तः स्वजनस्य पीड़ा,
शरीररोगी स्वजनैर्वियोगी ।
निपीड़ितो राजजनैः प्रवासी,
नरोऽश्वघाती च रवेर्दशायाम् ॥७३॥

सूर्य की दशा जब आती है तब मनुष्य का चित्त उद्विग्न रहे और स्वजनों को पीडा रहे, शरीर में रोग, स्वजनो से विछोह, राज कर्मचारियो से सताया जाय, प्रदेश मे रहना पड़े तथा अश्वो के द्वारा चोट पहुँचे ॥७३॥

सूर्य्यस्यान्तर्गते सूर्ये लाभो राजकुलोद्भवः ।
चित्तपीड़ा व्ययोऽर्थानां विप्रयोगश्च बन्धुभिः ।

अगर सूर्य की दशा मे सूर्य की ही अन्तर्दशा होवे तो राजकुल से लाभ हो, चित्त मे क्लेश, धन का खर्चा हो, बान्धवो से वियोग होवे ॥७४॥

शत्रुनाशोऽर्थलाभश्च चिन्तानाशः सुखागमः ।
सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते ७५

अगर सूर्य की दशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तो शत्रु-

नाश, धन-लाभ, चिन्ता का विनाश, सुख की आमदनी तथा व्याधि-नाश होवे ।।७५।।

मणिमुक्ता कांचनं च जयो युद्धं सुखं तथा ।
प्राप्यते भूपतेर्मानं सूर्यस्यान्तर्गते कुजे ।।७६।।

और अगर सूर्य की दशा मे मङ्गल का अन्तर हो तो मणि सुवर्ण की प्राप्ति, जय, युद्ध, सुख, और राजा से सत्कार प्राप्त होवे ।।७६।।

विलाससुखदारिद्र्यम् जायते रोगसम्भवः ।
पामाविचर्चिकादीनि सूर्यस्यान्तर्गते बुधे ।७७।

सूर्य की दशा मे अगर बुध का अन्तर होवे तो विलास, सुख दारिद्रय, तथा रोगोत्पत्ति, खाज, दाद आदि रोग होवे ।।७७।।

राजभीतिःशत्रुभीतिः कलहो दुःखमेव च ।
जायते धननाशश्च सूर्यस्यान्तर्गते शनौ ।७८।

सूर्य की दशा मे शनि का अन्तर होवे तो राजभय, शत्रुभय, कलह, दुख तथा धन का नाश हो ।।७८।।

निष्पापो व्यसनैर्हीनो नीरोगो धनवानपि ।
प्राप्नोति पदवीं गुर्वीं सूर्यस्यान्तर्गते गुरौ ७९

सूर्य की दशा मे गुरु का अन्तर आवे तो निष्पापता हो, व्यसनो (दुखो) से हीन, नीरोग, धनी, और किसी उच्च पद को प्राप्त करे ।।७९।।

व्यसनं चित्तनाशश्च शंका चाथ पराजयः ।

सूर्यस्यांतर्गते राहौ द्यूतं बन्धुजनैः कलिः ८०

सूर्य की दशा मे राहु की अन्तर्दशा यदि होवे तो व्यसन, धन का नाश, शका, हार, जुआ का खेलना होवे तथा बन्धु जनों से कलह होवे ॥८०॥

ज्वररोगः शिरोरोगो नानापीड़ा कलेवरे ।
क्वापि बन्धुजनैःक्लेशःसूर्यस्यान्तर्गते सिते ८१

यदि सूर्य की महा दशा मे शुक्र का अन्तर आवे तो ज्वर, रोग, शिर का रोग, शरीर मे अनेक पीड़ा होवें कभी कभी बन्धुजनो से लडाई झगडा होता रहे ॥८१॥

अथेन्दुदशाफलम् ।

गजाश्वरत्नानि महाप्रतापो
मिष्टान्नपानं विविधं सुखं च ।
आरोगता सर्वजनानुरागो,
भवेद्दशायां शशिनो नरस्य ८२

चन्द्रमा की दशा जब पुरुष को लगती है तब उस पुरुष को हाथी, घोडा रत्न बड़ा भारी प्रताप मिष्टान्न पान, अनेक तरह के सुख, नीरोगता, तथा सब पुरुषो पर प्रेम होवे ॥

शोभनस्त्रीसमायोगो वस्त्राभरणसंपदः ।
शुभकन्यासमुत्पत्तिश्चन्द्रेचन्द्रान्तरे गते ॥८३॥

चन्द्रमा की दशा मे जब चन्द्रमा का ही अन्तर आता है तब सुन्दर स्त्री से समागम, वस्त्र, अलङ्कार, सम्पत्ति तथा सुन्दर कन्या की उत्पत्ति हो ॥८३॥

असृक्पित्तरुजां पीड़ा वन्हिचौराद्युपद्रवाः ।
कलहः स्त्रीजनैः सार्द्ध चन्द्रस्यान्तर्गते कुजे ॥

चन्द्रमा की दशा मे मङ्गल की अन्तर्दशा होय तो रक्त पित्त के रोग से पीडा, अग्नि तथा चोर आदि के उपद्रव हो तथा स्त्रियो से कलह होवे ॥८४॥

सुखं सर्वत्र लाभश्च गजवाजिधनादिकम् ।
गोमहिष्यादिकं यच्च चंद्रस्यान्तर्गते बुधे ॥८५

चन्द्रमा की दशा मे बुध की अन्तर्दशा हो तो सब स्थान मे सुख तथा लाभ होवे, घोडा, हाथी, धन, गाय, भैंस आदि की प्राप्ति हो ॥८५॥

उद्वेगो वितनाशश्च शोकः शत्रूदयाद्भयम् ।
कलहो बन्धुवर्गेण चन्द्रस्यान्तर्गतेशनौ ।८६।

चन्द्रमा की दशा मे अगर शनि का अन्तर होवे तो उद्वेग, धननाश, शत्रुओ के बढने से भय, बन्धुजनो से कलह होवे ॥८६॥

धनधर्मादिसम्पत्तिः वस्त्रालङ्कारभूषणम् ।
सर्वत्रलभते लाभं चन्द्रस्यांतर्गते गुरौ ॥८७॥

चन्द्रमा की दशा मे अगर बृहस्पति की अन्तर्दशा होवे तो धन, धर्म तथा सम्पत्ति होवे, वस्त्रालकार तथा अच्छे २ भूषण होवे, तथा सर्वत्र लाभ होवे ॥८७॥

रिपुरोगाग्निभीतिश्च बन्धुनाशो धनक्षयः ।
चन्द्रस्यांतर्गते राहौ भवेदुद्वेगचिंतना ॥८८॥

चन्द्रमा की दशा मे राहु का अन्तर होवे तो शत्रु, रोग, तथा अग्नि से भय होवे, बन्धुओ का नाश, धन का क्षय, घबडाहट तथा चिंता होवे ॥८८॥

उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः ।
धर्मयुक्तधनप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥८९॥

चन्द्रमा की दशा मे शुक्र का अन्तर आकर पडे तो सुन्दर स्त्रियो से सयोग, सुन्दर कन्या की उत्पत्ति, तथा धर्म युक्त धन का लाभ होवे ॥८९॥

लाभो राजकुलेभ्यश्च व्याधिनाशो रिपुक्षयः ।
जायते सुखमैश्वर्यं चन्द्रस्यान्तर्गते रवौ ।९०।

चन्द्रमा की दशा मे सूर्य का अगर अन्तर होवे तो राजकुल से लाभ, व्याधिनाश शत्रुक्षय, सुख तथा ऐश्वर्य होवे ।।९०।।

अथ भौमदशाफलम्—

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीड़ा,
चौराग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्य्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं
भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥९१॥

मङ्गल की दशा हो तो शस्त्र से चोट आवे, राजा से तकलीफ होवे. चोर अग्नि तथा रोग से पीड़ा होवे, धन की हानि, कार्य नाश और दीनता होवे ॥९१॥

शत्रुभिः सह संमर्दो बंधुभिः सह विग्रहः ।

स्त्रीसंगो रक्तपित्ताद्भीर्भौमस्यांतर्गतेकुजे ९२

मङ्गल की दशा मे मङ्गल की ही अन्तर्दशा होवे तो शत्रुओ से युद्ध, भाई बन्धुओ से लडाई, स्त्री से सगम तथा रक्त पित्त का भय होवे ॥९२॥

शत्रुचौरनृपादिभ्यो महाभीतिः प्रजायते ।
महाज्वरकृता पीड़ा भौमस्यांतर्गते बुधे ॥९३॥

मङ्गल की दशा मे बुध का अन्तर हो तो शत्रु चोर और राजा आदि से वडा भय होवे, तथा वडे भारी ज्वर से पीडा होवे ॥९३॥

धनक्षयो महादुःखं जायतेऽत्र निरंतरम् ।
भौमस्यांतर्गते मन्दे नरस्य विपदःसदा ।९४।

मङ्गल की दशा मे शनि की अन्तर्दशा होवे तो धन का क्षय, वडा भारी दु ख तथा निरन्तर सदा विपत्ति हो ॥९४॥

धनलाभस्तीर्थलाभो देवब्राह्मणपूजनम् ।
भौमस्यान्तर्गते जीवे नृपात्किंचिद्भयं भवेत् ॥

मगल की दशा मे वृहस्पति का अन्तर हो तो धन लाभ, तीर्थ यात्रा का लाभ, देव ब्राह्मणो का सत्कार होता रहे, कुछ २ राजा से भय भी रहे ॥९५॥

शस्त्रचौराऽग्निभीतिश्च कृषिस्त्रीधान्यपीडनम् ।
भौमस्यान्तर्गते राहौ यत्र तत्र भयं भवेत् ९६

मगल की दशा मे राहु का अन्तर होवे तो शस्त्र, चोर और अग्नि से भय, खेती तथा स्त्री को पीडा होवे, और जहाँ तहाँ भी भय होवे ॥९६॥

व्याधयः शत्रु भीतिश्च धनक्षय उपद्रवः ।
विदेशगमनम् नृणां भौमस्यान्तर्गते सिते ९७

मगल की दशा मे शुक्र की अन्तर्दशा होवे तो व्याधि (रोग) शत्रु से भय, धन का नाश, उपद्रव तथा विदेश यात्रा हो ॥९७॥

आरोग्यं सर्वतोभद्रं राजपक्षे जयोत्सवः ।
जायतेऽत्र धनप्राप्तिर्भौमस्यान्तर्गते रवौ ॥९८॥

मगल की दशा मे अगर सूर्य का अन्तर होवे तो आरोग्य, चारों तरफ से कल्याण हो, राज द्वार मे जीत हो, तथा धन प्राप्ति हो ॥९८॥

नानावृत्तिसमुत्पन्नमणिमुक्तासुखान्वितः ।
जायते मनुजो नित्यं चन्द्रे भौमांतरे गते ९९।

मगल की दशा में चन्द्रमा की अन्तर दशा हो तो अनेक वृत्तियो से प्राप्त हुए मणि मुक्ता तथा सुखों से लाभ हो ॥९९॥

अथ बुधदशाफलम् ।

नानाविधैरर्थशतैः समेतो,
दिव्यांगनाकेलियुतो विलासी ।
सर्वार्थसिद्धिर्बहुमानितोऽत्र,
भवेद्दशायां मनुजो बुधस्य १००

बुध की दशा आवे तो अनेक तरह के सैकड़ों द्रव्यो से युक्त सुन्दर स्त्री से रमण करे, विलासी, सब कार्य सिद्धियों से युक्त, तथा अधिक पूज्य होवे ॥१००॥

बुद्धिधर्मानुरागश्च मित्रबन्धुसमागमः ।
शत्रूद्भवा देहपीड़ा बुधस्यांतर्गते बुधे ॥१०१

बुध की दशा मे बुध का ही अन्तर होवे तो बुद्धिमत्ता होवे, धन मे प्रेम हो, मित्र तथा बन्धुओ से मिलाप रहे, शत्रु कृत देह पीडा होवे ॥१०१॥

अकस्माच्छत्रु संयोगे ह्यकस्मादर्थसंग्रहः ।
संपर्कोऽग्निगरादीनां बुधस्यांतर्गतेशनौ १०२

बुध की दशा मे शनि का अन्तर हो तो अकस्मात् शत्रु से ठोकर लडजाय, तथा अकस्मात् ही धन का आराम हो जाय, और अग्नि तथा जहर आदि का संयोग हो जावे ॥१०२॥

स्वर्णादि धातुलाभश्च शरीरारोग्यमेव च ।
सम्पत्तिर्धर्म्मलाभश्च बुधस्यान्तर्गतेगुरौ ।१०३

बुध की दशा मे बृहस्पति का अन्तर हो तो सुवर्णादि धातु का लाभ, शरीर मे आरोग्य रहे, सम्पत्ति तथा धन का लाभ होवे ॥१०३॥

प्रचण्डोत्साहसत्वं च नानाकार्यरणोद्यमः ।
बुधस्यान्तर्गते राहौ धनधर्मादिभोगयुक् १०४

बुध की दशा मे राहु की अन्तर्दशा हो तो अति पराक्रम का उत्साह होवे, अनेक कार्य तथा रण करने मे उद्यम होवे तथा धन वा धर्म से युक्त रहे ॥१०४॥

गुरुदेवार्चने प्रीतिर्ज्ञानधर्मरतिस्तथा ।
वस्त्रालङ्कारणैर्युक्तो बुधस्यान्तर्गतेसिते ।१०५।

अगर बुध की महादशा मे शुक्र का अन्तर हो तो गुरु तथा देवताओ की पूजा मे प्रेम होवे, ज्ञान तथा धर्म मे श्रद्धा होवे, वस्त्र तथा अलङ्कारों से युक्त होवे ॥१०५॥

व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तः पुत्रधर्मधनागमः ।
जायते राजमान्यश्च बुधस्यान्तर्गते रवौ १०६

बुध की दशा मे सूर्य का अन्तर होवे तो रोग और शत्रुओ के भय से निर्मुक्त होवे, पुत्र, धर्म तथा धन का लाभ होवे एव राजा से मान प्राप्त होवे ॥१०६॥

क्षयरोगोऽत्र कुष्ठं च नानापीड़ा कलेवरे ।
बुधस्यान्तर्गते सोमे गले रोगश्च जायते ॥

बुध की दशा मे चन्द्रमा का अगर अन्तर होवे तो शिर का रोग, कुष्ठ का रोग, शरीर मे अनेक पीड़ा, तथा गले मे रोग होवे ॥ १०७ ॥

शिरोरोगी गण्डरोगी नानाक्लेशैर्निपीड़ितः ।
यमभीतिश्चौरभीतिर्बुधस्यान्तर्गते कुजे १०८

बुध की दशा में मगल का अन्तर होवे तो शिर का रोगी होवे, कपोल का रोग होवे, अनेक क्लेशों से पीड़ित होवे, यमराज से भय तथा चोरों से भय होवे ॥१०८॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यापवादो विमुखोऽत्र बंधो-
र्वधश्च बन्धोश्च निराशता च ।
कार्याणि शून्यानि धनस्य हानिः,

क्लेशा भवन्त्येव शनैर्दशायाम् ॥१०९॥

शनि की दशा मे झूठा दोष लगे, वन्धुओ से विमुखता होवे, वन्धुओ से निराशता, कार्य से शून्य, धन की हानि तथा क्लेश होवे ॥१०९॥

शरीरे जायते पीड़ा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
विदेशगमनं हानिःशनेरन्तर्गते शनौ ११०

शनि की दशा मे शनि का ही अगर अन्तर आवे तो शरीर मे तकलीफ, पुत्र स्त्री से लडाई झगड़ा, विदेश मे गमन तथा सव कार्यों मे हानि हो ॥११०॥

देवगोब्राह्मणाचार्य्यपुत्रमित्रधनागमः ।
प्राप्नोती गुरुसम्मानं शनैरन्तर्गते गुरौ ।१११

शनि की महादशा मे वृहस्पति का अन्तर होवे तो देवता, गो, व्राह्मण, आचार्य, पुत्र मित्र तथा धन की प्राप्ति होवे ॥१११॥

ज्वरातिसारपीड़ा च शत्रुभीतिर्धनक्षयः ।
शनैरन्तर्गते राहौ शस्त्रघातश्च जायते ।११२।

शनि की दशा मे राहु की अन्तर्दशा होवे तो ज्वर तथा अतिसार की पीडा होवे, शत्रू से भय, धन का नाश तथा शस्त्रो से घात होवे ॥११२॥

जायाधनसुतैर्युक्तो जायतेऽत्र जयान्वितः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्य शनेरन्तर्गते सिते ।११३।

शनि की दशा मे शुक्र का अन्तर हो तो जाया धन तथा पुत्रो से युक्त रहे, तथा जीत होती रहे, आयु आरोग्य एवं

ऐश्वर्य की वृद्धि होवे ।। ११३ ।।

पुत्रमित्रकलत्राणां हानिश्चार्थस्य जायते ।
शनैरन्तगते भानौ जीवितस्यापि संशयः ११४

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा होवे तो पुत्र मित्र, स्त्री तथा धन की हानि होवे, एव जीवन मे भी सन्देह रहे ।।

गोमहिष्यादिलाभाःस्युःस्त्रीलाभो विजयःसुखम्
जायते कन्यकापत्यं शनैरंतगते विधौ ।११५।

शनि की दशा मे चन्द्रमा का अन्तर होवे तो गाय, भैंस आदि का लाभ, स्त्री का लाभ, विजय तथा सुख और कन्या सन्तान होवे ।।११५।।

देशत्यागो धनत्यागः शत्रुव्याधिसमागमः ।
शनैरंतगते भौमे जायतेऽत्र महद्भयम् ।।

शनि की दशा मे मगल की अन्तर्दशा हो तो देशत्याग धन का त्याग, शत्रु तथा रोगो का उद्भव, एव महाभय होवे ।। ११६ ।।

धनप्राप्तिश्च बन्धुभ्यः सौभाग्यं विजयं सुखं ।
सभायां मान्यतां विंद्याच्छनैरन्तगते बुधे ।।

शनि की दशा मे बुध का अन्तर होवे तो धन प्राप्ति सौभाग्य, विजय, सुख तथा समाज में सत्कार होवे ।।

अथ बृहस्पतिदशाफलम् ।

धर्मार्थकामैः परिपूरितोऽत्र ।

राजप्रतापैर्विनयैः समेतः ।
धनी जयो दारसुतादियुक्तो
गुरोर्दशायां च नरो निरोगी ॥

वृहस्पति की दशा मे मनुष्य का मन धर्म, अर्थ, काम से परिपूर्ण रहे, राज्य प्रताप तथा विनय से युक्त रहे तथा शरीर स्वस्थ रहे ॥ ११८ ॥

पुत्रोत्पत्तिर्धनोत्पत्तिःसर्वरत्नपरिग्रहः ।
जायते रत्नलाभश्च गुरोरन्तर्गतेगुरौ ।११६।

गुरु की महादशा मे गुरु का ही अन्तर होवे तो पुत्र की उत्पत्ति, धन की उत्पति, सब तरह के धनो का सचय एव रत्नो का लाभ हो ॥ ११६ ॥

विस्फोटकादिमोहश्च शोको रोगो धनक्षयः ।
गुरोरन्तर्गते राहौ रिपूणां च भयं भवेत् ॥

वृहस्पति की दशा मे राहु का अन्तर होवे तो चेचकादि का रोग, और मोह, रोग एव धन का नाश तथा रिपुओ से भय होवे ॥ १२० ॥

कलहो मानसी पीड़ा वित्तनाशो महद्भयम् ।
जायते स्त्रीवियोगश्च गुरोरन्तर्गते सिते ॥

गुरु की दशा मे राहु की अन्तर्दशा होवे तो कलह, मानसिक पीडा, धन नाश, वड़ा भारी भय तथा स्त्री का वियोग होवे ॥ १२१ ॥

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपपूजा महासुखम् ।

प्रचण्डैःसह संगश्च गुरोरन्तर्गते रवौ ।१२२।

गुरु की दशा मे सूर्य का अन्तर होवै तो शत्रु का नाश, नित्य जय, राजाओ से सत्कार, बहुत सुख, तथा दुष्ट मनुष्यों के साथ मेल रहे ॥ १२२ ॥

बहुस्त्रीसंगमः क्षीणः शत्रुपीडाविवर्जितः ।
गुरोरन्तर्गते चन्द्रे कन्याजन्म च जायते ॥

गुरु की दशा मे चन्द्रमा का अन्तर होवे तो बहुत स्त्रियों से सगम रहे, क्षीण, शत्रुओ की पीड़ा से रहित, तथा कन्या का जन्म हो ॥ १२३ ॥

रिपुनाशो धनप्राप्तिः सर्वकार्यसमागमः ।
सुखं सौभाग्यमारोग्यं गुरोरन्तर्गते कुजे १२४

वृहस्पति की दशा में मगल का अन्तर होवे तो शत्रु नाश, धन प्राप्ति, सब कार्यो की सिद्धि, सुख, सौभाग्य, आरोग्य होवे ॥ १२४ ॥

बुद्धिविज्ञानकौशल्यं धनबन्धुसमागमः ।
गुरुदेवाग्निभक्तिश्च गुरोरन्तर्गते बुधे ॥१२५

गुरु की दशा में अगर बुध का अन्तर होवे तो बुद्धि और कारीगरी मे निपुणता, धन और बन्धुओ से समागम, गुरु देवता और अग्नि मे भक्ति होवे ॥ १२५ ॥

वेश्यास्त्रीद्यूतमद्यैश्च धनधान्यदिसंशयः ।
जायते लुप्तधर्मोऽत्र गुरोरन्तर्गतेशनौ ।१२६।

वृहस्पति की दशा मे शनि की अन्तर्दशा होवे तो

वेश्या स्त्री. जुआ, शराब, आदि से धन धान्य और धर्म का नाश होता है ॥ १२६ ॥

अथ राहुदशाफलम् ।

ज्ञानस्य हानिर्गमनं विदेशे,
धर्मस्य हानिर्विविधाश्च रोगाः ।
सर्वत्र शून्यं तनुसंशयश्च,
राहोर्दशायां नियतं नरस्य ॥१२७॥

राहु की दशा मे ज्ञान का नाश, विदेश मे गमन, धर्म की हानि, अनेक प्रकार के रोग, सर्वत्र कार्य की शून्यता तथा जीने मे भी सदेह रहे ॥ १२७ ॥

द्विजेन्द्रैः सह संसर्गः स्त्रीलाभो धनसंचयः ।
राहोरन्तर्गते राहौ कलहो बन्धुभिः सह ।१२८।

राहु की दशा मे राहु का ही अन्तर होवे तो श्रेष्ठ ब्राह्मणो से मुलाकात. स्त्री लाभ, धन का इकठ्टा करना, तथा बन्धुओ के साथ कलह होवे ॥

धर्मिष्ठः सत्यवादी च धनी रोगविवर्जितः ।
जायते राजमान्यश्च राहोरन्तर्गते सिते १२६

राहु की महादशा मे अगर शुक्र का अन्तर होवे त धर्मिष्ठ, सत्यवादी, धनी रोग रहित, तथा राजमान्य होवे ॥

पुत्रदुःखं महाभीतिधननाशो विचिन्तना ।
अग्निचौरभयं चापि राहोरन्तर्गते रवौ ।१३०

राहु की दशा मे सूर्य का अन्तर होवे, तो पुत्र शोक-

महाभय, धन नाश, अधिक चिन्ता, और कभी कभी अग्नि तथा चोरो का भय होवे ।। १३० ।।

स्त्रीनाशो धननाशश्च कलहो वान्धवैः सह ।
राहोन्तर्गते चन्द्रेजायते च महाभयम् ।१३१

राहु की दशा मे चन्द्रमा का अन्तर होवे तो स्त्री नाश धन नाश भाई बन्धुओ से कलह तथा महाभय होवे ।।१३१।।

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो भयं प्राप्नोति दारुणम् ।
राहोरन्तर्गते भौमेजीवितस्यापि संशयः। १३२

राहु की दशा मे मङ्गल का अन्तर होवे तो विष शस्त्र अग्नि और चोरो से बडा भारी भय प्राप्त हो एवम् जीवन मे सन्देह होवे ।। १३२ ।।

सुहृद्बन्धुजनैर्योगो धनधान्यसमागमः ।
न कश्चिज्जायतेक्लेशो राहोरन्तर्गते बुधे१३३

राहु की दशा मे बुध का अन्तर हो तो मित्र और भाई बन्धुओ से मेल रहे, धनधान्य की आमदनी होवे और कोई भी क्लेश न होवे ।। १३३ ।।

स्वदेशस्य परित्यागः कुटुम्बैस्सह सङ्गमः ।
भृत्यार्थयोस्तथा नाशो राहोरन्तर्गते शनौ१३४

राहु की दशा मे शनि का अन्तर होवे तो स्वदेश का त्याग कुटुम्वियो के साथ मेल मिलाप रहे, नौकर तथा धन का नाश होवे ।। १३४ ।।

रोगहानिः सुखी नित्यं देवब्राह्मणपूजनम् ।
धनधान्यसमृद्धिश्च राहोरन्तर्गते गुरौ ।१३५

राहु की दशा मे बृहस्पति की अन्तर्दशा होवे तो रोग-की हानि, नित्य सुख रहे, देवता और ब्राह्मणो का पूजन होता रहे, तथा धन धान्य की समृद्धि रहे ॥ १३५ ॥

अथ शुक्रदशाफलम् ।

नृपेन्द्रमान्यो धनलाभपूर्णो,
हस्त्यश्वयुक्तः प्रमदानुरक्तः ।
मन्त्रप्रयोगे निपुणश्च शास्त्रे,
कवेर्दशायां कुशली मनुष्यः १३७

शुक्र की दशा हो तो राजा से मान्य, धन के लाभ से परिपूर्णता रहे, हाथी घोडे से युक्त, स्त्री मे प्रेम करने वाला, मन्त्र प्रयोग मे तथा शास्त्र मे दक्ष एवम् कुशल होवे ॥१३६॥

मानवृद्धिः सुतोत्पत्तिर्धनधान्यागमः सुखम् ।
स्वर्णाम्बरादिलाभश्च सितस्यान्तर्गते सिते १३७

शुक्र की दशा मे शुक्र का ही अन्तर हो तो सत्कार की वृद्धि, पुत्रो की उत्पत्ति, धन धान्यो का आगम, सुख, तथा सोना और कपड़ो का लाभ हो ॥ १३७ ॥

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपाल्लाभो महासुखम्
प्रचण्डैः सह संसर्गः शुक्रस्यान्तर्गते रवौ १३८

शुक्र की दशा मे सूर्य का अन्तर होवे तो शत्रु नाश, सर्वदा विजय, राजाओ से लाभ, तथा अत्यन्त सुख एवम् प्रचण्ड जनो के साथ संपर्क हो ॥ १३८ ॥

गुरुदेवाग्निभक्तिश्च दुःखं मध्यं सुखं तथा ।

शुक्रस्यान्तर्गते चन्द्रे शत्रुमित्रसमागमः १३९

शुक्र की दशा मे चन्द्रमा का अन्तर हो तो गुरु, देवता तथा अग्नि मे भक्ति, मध्यम दर्जे का दुःख रहे तथा सुख रहे एवम् शत्रु और मित्रो से भेट होती रहे ॥१३९॥

संग्रामे च रिपुं जित्वा धनं कीर्तिश्च लभ्यते ।
आरोग्यं सुखमैश्वर्यं शुक्रस्यान्तर्गते कुजे १४०

शुक्र की दशा मे मगल का अन्तर हो तो सग्राम मे शत्रु को जीत कर धन तथा कीर्ति का लाभ, आरोग्य तथा सुख और ऐश्वर्य प्राप्त हो ॥ १४० ॥

नखरोगः शिरोरोगो दुःखमामाशयोद्भवम् ।
शरीरे जायते पीड़ा शुक्रस्यान्तर्गते बुधे १४१

शुक्र की दशा मे बुध का अन्तर हो तो नखो में रोग शिर में पीडा, आमाशय मे दुःख उत्पन्न होवे, तथा शरीर में तकलीफ होवे ॥ १४१ ॥

दुष्टस्त्रीभिश्च संसर्गः सुखं चार्थसमागमः ।
शत्रुनाशः सुहृल्लाभः शुक्रस्यान्तर्गते शनौ ॥

शुक्र की दशा मे शनि का अन्तर होवे, तो दुष्ट स्त्रियों के साथ सपर्क होवे सुख तथा धन की प्राप्ति, शत्रुनाश एवं मित्रों का लाभ हो ॥ १४२ ॥

धनधान्यसमृद्धिश्च नानाधर्मसमन्वितः ।
श्रेणीप्रभुत्वमाप्नोति शुक्रस्यान्तर्गते गुरौ ॥

शुक्र की दशा मे यदि गुरु की अन्तर्दशा होवे तो धन धान्य की समृद्धि, अनेक प्रकार के धर्मो से पूर्ण, तथा अनेक

मनुष्यो का स्वामी होवे ॥ १४२ ॥

वैरं विषादो दुःखं च सदोद्वेगो महाभयम् ।
शुक्रस्यान्तर्गते राहौ कदाचित्सुखमाप्नुयात् ॥

शुक्र की दशा मे राहु का अन्तर आवे तो वैर, खेद, दुःख, सदा घबडाहट, महाभय, और कभी २ सुख प्राप्त होवे ॥

अथ विंशोत्तरीदशाफलम्—

***षडादित्ये दशेन्दौ च सप्तवर्षाणि मंगले ।**
अष्टादशसमा राहौ षोडशैव बृहस्पतौ ॥
एकोनविंशति १९ मन्दे बुधे सप्तदशैव च ।
सप्त वर्षाणि केतौ च विंशति२० र्भार्गवे तथा

विंशोत्तरी दशा मे ग्रहो की दशा का प्रमाण इस प्रकार समझना चाहिये जैसे कि—सूर्य की दशा ६ वर्ष रहती है, चन्द्रमा की १० वर्ष, मगल की ७, राहु की १८ वर्ष, बृहस्पति की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७, वर्ष केतु की ७ वर्ष तथा शुक्र की २० वर्ष रहती है ॥१४५ ॥ १४६ ॥

कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरणीं चाधिगण्यते ।
कृत्तिकादेस्त्रिरावृत्या सूर्यादिं गणयेत्क्रमात् ॥

कृत्तिका नक्षत्र से भरणी नक्षत्र पर्यन्त गिनना चाहिये सूर्यादि ग्रहो की दशा क्रम से तीन आवृत्ति कृत्तिका नक्षत्र से करनी चाहिये जैसे कि कृत्तिका मे जिसका जन्म हो उसका

---

* तदुक्तमन्यत्र—

षड् दश सप्ताष्टदश षोडश नन्देन्दवो मुनिशशाक. ।
सप्त नखा वर्षाणि हि रव्यादीना यथाक्रमश. ।

सूर्य की दशा, रोहिणी मे जिसका जन्म हो उसको चन्द्रमा की, मृगशिरा मे जिसका जन्म हुआ हो उसको भौम की दशा, इसी क्रम से सब समझने चाहिये । विशोत्तरी दशा में दशा क्रम इस प्रकार है कि–आ०, च०, भौ०, रा०, जी०,श०, बु०, के०,शु०

सू०	च०	भौ०	रा०	जी०	श०	बु०	के०	शु०	दशा
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष
कृ०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	श्ले०	म०	पू०	नक्षत्र
उ. फा	ह०	चि०	स्वा०	वि०	अ०	ज्ये०	मू०	पू०	
उ. षा	श्र०	ध०	श०	पू०	उ०	रे०	अ०	भ०	

कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरण्यवधि गण्यते ।
विशोत्तरीदशाचक्र षट्त्रिशद्भिश्चकोष्ठकै ॥

अन्तर्दशाचक्रम् ।

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासाः शेषं त्रिगुणवासराः ॥

जब किसी ग्रह की दशा में अन्तर्दशा निकालनी होय तब जिस ग्रह मे अन्तर निकालना होय उसके वर्षो को जिस ग्रह का अन्तर निकालना है उस ग्रह के वर्षों से गुणा करे, फिर उसमे दस का भाग देय जो लब्धाक आवें उसी को महीना जाने,शेष को तीन से गुणा करे यह दिन हो जाते है ।

उदाहरण—

जैसे किसी का जन्म धनिष्ठा नक्षत्र का है तो विशोत्तरी दशा में मगल की दशा हुई इसका वर्ष प्रमाण ७ है, इसमे सूर्य का अन्तर निकालना है तो सूर्य की वर्ष ६

स भौम को दशा वर्ष को गुणा किया ४२ हुए, दस का भाग दिया लब्ध ४, और शेष २ इसको तीन से गुणा किया ६ वस यह अन्तर हुआ भौम की दशा मे सूर्य का अन्तर ४ महीना ६ दिन का है इसमे वर्ष नही आये यदि महीना १२ से अधिक होय तो वारह का भाग देकर वर्ष बना लेना चाहिये, इसी प्रकार शेष दशाओ के अन्तर निकालने चाहिये ।

स्पष्टज्ञानार्थम् चक्रम् ।

सूर्यमध्ये अन्तराणि

सू.	चं.	म.	रा.	गु.	श	वु	के,	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
१८	०	०	२४	१८	१२	६	६	०

चन्द्रमध्ये अन्तराणि

च	म	रा	गु	श	वु	के.	शु.	सू	ग्र०
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वरष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

भौममध्ये अन्तराणि

भौ	रा.	गु.	श.	वु	के-	श.	सू	च.
०	१	०	१	०	०	१	०	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

राहुमध्ये अन्तराणि

रा.	गु.	श.	वु	के.	शु-	सू	च	म	ग्र०
२	२	२	२	१	३	०	१	१	वर्ष
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मास
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दिन

गुरुमध्ये अन्तराणि

वृ०	श	वु.	के.	शु.	सू	च	म	रा
२	२	२	०	२	०	१	०	२
१	६	३	११	८	९	४	११	४
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

शनिमध्ये अन्तराणि

श	वु	के	शु	सू	च	म	रा	वृ	ग्र०
३	२	१	३	०	१	१	२	२	वरष
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मास
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दिन

बुधमध्ये अन्तराणि — केतुमध्ये अन्तराणि

बु.	के.	श	सू.	च	म	रा	बृ	श	के	श.	सू.	च.	मं	रा	गु.	श.	बु.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	१	०	०	०	१	०	१	०	वरष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	४	२	४	७	४	०	११	१	११	मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दिन

शुक्रमध्ये अन्तराणि

शु	सू	च	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	वरष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

अथ केतुदशाफलम्—

लक्ष्मीविनाशो वनिताविपत्तिः
शरीरपीडा नृपमानभंगः ।
प्रियैः कुटुम्बैश्च भवेद्वियोगः
केतोर्दशायां सततं च तापः १४८

केतु की दशा मे लक्ष्मी का क्षय, स्त्री पर विपत्ति, शरीर पीड़ा, राजाओ के द्वारा मान भग, अपने प्यारे जनों से तथा कुटुम्वी लोगों से वियोग, तथा हमेशा ताप रहे ॥ १४८ ॥

पुत्रनाशोऽर्थनाशश्च दुष्टनारीजनैःकलिः ।

केतोरंतर्गते केतौ राजभीः शत्रुविग्रहः ॥

केतु की दशा मे केतु का ही अन्तर हो तो पुत्र नाश, धन नाश, दुष्ट स्त्रियो से कलह, राजभय, शत्रुओ से लडाई झगडा होवे ॥१४६॥

स्त्रियास्त्यागोऽग्निदाहश्च कन्याजन्म तथा ज्वरः
केतोरन्तर्गते शुक्रे मित्रैः सह कलिर्भवेत् ॥

केतु की दशा मे शुक्र का अन्तर होवे तो स्त्री का त्याग अग्नि से जलना, कन्या जन्म, ज्वर, तथा मित्रो के साथ कलह होवे ॥१५०॥

अग्निदाहो ज्वरो रोगो विदेशगमनं तथा।
केतोरन्तर्गते सूर्य्ये क्षयरोगश्च जायते ।१५१।

केतु की दशा मे सूर्य का अन्तर होवे तो अग्नि दाह, ज्वर, रोग, विदेश गमन, तथा क्षय रोग हो ॥१५१॥

अर्थलाभोऽर्थहानिश्च
सुखं दुःखं क्वचित् क्वचित्।
केतोरन्तर्गते चन्द्रे
स्त्रीलाभश्चापि जायते ॥

केतु की दशा मे अगर चन्द्रमा का अन्तर आवे तो धन लाभ और धन का नाश भी होवे, कभी २ सुख तथा कभी कभी दुःख होवे तथा स्त्री का लाभ होवे ॥१५२॥

गोत्रजैः सह संवादो वह्निचौरभयं तथा।
शरीरे जायते पीडा केतोरन्तर्गते कुजे ॥

केतु की दशा में मगल का अन्तर हो तो भाई बन्धुओं के साथ झगड़ा बढे, अग्नि तथा चोरों का भय होवे, तथा शरीर मे तकलीफ रहे ॥१५३॥

चौरभीतिर्देहभङ्गः कुमित्रैः सह संगतिः ।
केतोरन्तर्गते राहौ कलहः शत्रुभिः सह ॥

केतु की दशा में राहु का अन्तर आवे तो चोर-भय, देहभग, कुत्सित मित्रो के साथ सगति होवे, तथा शत्रुओं से झगडा होवे ॥१५४॥

राजमान्यैर्जनैर्योगो द्विजेन्द्रैश्च धनागमः ।
भूमिलाभःपुत्रलाभः केतोरन्तर्गते गुरौ ॥

केतु की दशा में वृहस्पति का अन्तर होवे तो राजमान्य जनों से मेल होवे, ब्राह्मणो से धन लाभ, पृथ्वी का लाभ, तथा पुत्र लाभ होवे ॥१५५॥

बातपित्तकृता पीडा स्वजनैः सह विग्रहः ।
विदेशगमनं चापि केतोरन्तर्गते शनौ ॥

केतु की दशा मे यदि शनि का अन्तर होवे तो बात पित्त से तकलीफ होवे, स्वजनों से लडाई तथा विदेश गमन होवे ।

सुहृद्बन्धुसमायोगो भूनिमित्तं च विग्रहः ।
देहपीडा भवेन्नित्यं केतोरन्तर्गते बुधे ॥१५७

केतु की दशा मे बुध का अन्तर हो तो मित्र तथा भाई बन्धुओ से मेल, जमीन जायदाद के वास्ते झगड़ा करना पडे, और हमेशा शरीर मे पीड़ा रहे ॥१५७॥

अथान्यग्रहमध्ये केतुफलम्—

देशत्यागो बन्धुनाशो धननाशःसुतक्षयः ।
सूर्यस्यान्तर्गते केतौ दुःखमेव हि लभ्यते १५८

सूर्य की दशा मे केतु की, अन्तर्दशा होवे तो देश-त्याग, बन्धुनाश, धन पुत्र नाश, तथा दु:ख प्राप्त होवे ॥१५८॥

देशत्यागो वन्धुनाशो धननाशः सुतक्षयः ।
चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ सर्वत्रैवाशुभं भवेत् १५६

चन्द्रमा की दशा मे केतु का अन्तर हो तो देशत्याग, वन्धु, पुत्र तथा धन का विनाश, एवम् सब जगह अशुभ ही अशुभ होवे ॥१५६॥

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो जायतेऽत्र महाभयम्
भौमस्यान्तर्गते केतौक्लेशभागी सदा नरः१६०

भौम की दशा मे केतु का अन्तर हो तो विष, शस्त्र, अग्नि, चोर से भय, तथा हमेशा क्लेश का भोगने वाला होवे ॥१६०॥

अथ राहुदशामध्ये केत्वन्तर्दशाफलम्—

ज्वराग्निरिपुशस्त्रेभ्यो मृत्युरायाति सर्वदा ।
राहोरन्तर्गते केतौ शुभं क्वापि न लभ्यते ॥

राहु की दशा मे केतु का अन्तर हो तो सदा ज्वर, अग्नि, शत्रु, तथा शस्त्र से मृत्यु भय होता रहे, तथा कभी भी शुभ न होवे ॥१६१॥

पुत्रबन्धुकृतोद्वेगो निजस्थानविवर्जितः ।

गुरोरन्तगते केतौ परिभ्रमति मानवः ।१६२।

बृहस्पति की दशा में केतु का अन्तर हो तो पुत्र तथा भाइयो से घवडाता रहे, एवम् अपने स्थान से भ्रष्ट होकर इधर उधर घूमता रहे ॥१६२॥

रक्तपित्तकृता पीडा कलहः स्वजनैः सह।
शनेरन्तर्गते केतौ घोरदुःस्वप्नदर्शनम् ।१६३।

शनि की दशा मे केतु का अन्तर होवे तो रक्त पित्त से तकलीफ बढे, स्वजनो से लडाई झगडा रहे, भयानक (खोटे खोटे) स्वप्न देखने मे आवे ॥१६३॥

दुःखशोकाकुलो नित्यं शरीरे क्लेशसंयुतः।
बुधस्यान्तगते केतौ भवत्येव न संशयः १६४

बुध की दशा मे केतु का अन्तर आवे तो नित्य दुःख और शोक से व्याकुल रहे, शरीर मे क्लेश रहे, इसमे सन्देह नही ॥१६४॥

जन्मलग्नं समारभ्य गतवर्षाणि योजयेत्।
द्वादशेषु च भागेषु ग्रहैर्वाच्यं शुभाशुभम् १६५

जन्म लग्न को लेकर उसमे गत वर्षों को जोड देवे और फिर उसमे १२ का भाग दे शेष जो आवे उसके अनुसार ग्रहो का शुभाशुभ फल कहे ॥१६५॥ इति वर्ष दशा।

अथ मासदशा—

विंशतिर्वासराःसूर्य्ये पञ्चाशच्च निशाकरे।
सप्तविंशतिरङ्गारे२७सप्तपंचाश५७दिन्दुजे १६६

त्रयस्त्रिंशच्च मन्दे स्युस्त्रिषष्टि६३श्च वृहस्पतौ ।
विंशतिः२० सैंहिकेये च केतावपि च विंशतिः
सप्तति७०भृगुपुत्रे च ज्ञेया मासदशा बुधैः ।
नामराशिं समारभ्य संक्रमावधि गण्यते १६८

अब यहाँ पर मास दशा बतलाई जाती है—

२० दिन सूर्य की दशा मे, ५० दिन चन्द्रमा की दशा में, २७ दिन भौम की दशा मे, ५९ दिन बुध की दशा मे, ३३ दिन शनि की दशा मे, ६३ दिन गुरु दशा मे, राहु तथा केतु दशा मे २० दिन, ७० दिन शुक्र दशा मे पण्डितो को जानने चाहिये, इसमे नाम राशि से लेकर मास सक्रान्त्यन्त गिना जाता है । सू० चं० म० बु० गु० शु० श० रा० के० इस प्रकार क्रमश ग्रह-गणना इसमे की जाती है ॥१६७॥ १६८॥

अथ दिनदशा—

तिथिर्वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषा दिनदशोच्यते १६९

तिथि, वार, नक्षत्र, तथा नाम के अक्षरो की सख्या को जोड कर नौ का भाग दे, शेष अक से विंशोत्तरी क्रमानुसार फलादेश बतावे ॥१६९॥

अन्यच्च—

चैत्रादेर्द्विगुणा मासा गताश्चित्तिथिभियुताः ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनफलं स्मृतम्१७०
सम्पत्तिः कलहो लोकैरानन्दः कालकण्टकः ।

धर्मस्तपश्च विजयो रविवारात्क्रमात्फलम् १७१

चैत्र से आदि लेकर महीनो को दूना करके और उनमें गई हुई तिथियो को जोडदे और फिर नौका भाग दे, शेष जो बचे उससे दिन दशा का फलादेश करे १ शेष बचे तो सूर्यवार फल-सम्पत्ति प्राप्त, २ से चन्द्रवार फल-लोक कलह, ३ से भौमवार फल-आनन्द प्राप्ति, ४ से बुध फल-काल कटक, ५ से गुरुवार फल-धर्म प्राप्ति, ६ से शुक्र फल-तप, ७ से शनि फल-विजय प्राप्ति होय ॥ १७० ॥ १७१ ॥

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यान्तर्दशा यदा
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे च संशयः ।१७२।

क्रूर ग्रहो की दशा में अगर क्रूर ग्रहो का ही अन्तर आ जाय और उसमे भी शत्रु योग हो तो मृत्यु, तथा मित्रयोग हो तो मरण और सन्देह जानना ॥१७२॥

अथ भौमदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम् ।

मंगलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदा ।
म्रियतेऽत्र चिरंजीवी का कथा स्वल्पजीविनाम् ।

मगल के अन्तर्गत शनि आजाय तो दीर्घायुष्य वाला भी मर जाय, इसमें स्वल्पायु वालो का तो कहना ही क्या है ।

अथ क्रूरग्रहमध्ये पापग्रहफलम्—

क्रूरराशौ स्थितःपापःषष्ठे वा निधनेऽपि वा ।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः ॥

क्रूर ग्रह की राशि का होता हुआ पाप ग्रह छठे, आठवें

स्थान मे स्थित होकर शुक्र वा रवि से दृष्ट हो तो वह अपनी दशा मे मृत्यु कारक होता है ।।१७४।।

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशागमः ।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम् १७५

लग्नाधिपति का शत्रु लग्न मे बैठा होवे और उसी की अन्तर्दशा आजाय तो अकस्मात् मृत्यु दायक होता है यह सत्याचार्य जी का वाक्य है ।।१७५।।

अथ दशारिष्टभंगः ।

दशायां बलवान् खेटः शुभैर्वा संनिरीक्षितः ।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगो भवेत्तदा १७६

जो दशा वर्तमान हो और उसमे बलवान् ग्रह होवे और वह शुभग्रहावलोकित हो, अथवा सौम्य ग्रह के अधि मित्र के वर्ग मे होवे तो उसकी दशा मे अरिष्ट का भग कहना ।।१७६।।

मूलं दशाधिनाथस्य वाचस्पतिदशा यदा ।
वली शुभोऽथ विज्ञेयोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत् ।।

मूल दशाधिपति की दशा मे अगर बृहस्पति की दशा हो तो उस शुभ ग्रह की दशा होने के कारण वह दशा बलवती होती है इस कारण उसमे अरिष्ट नाश हो जाता है ।।१७७।।

शुभग्रहो ग्रहैर्योगे विजयी जायते सदा ।
दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थितः ।।

शुभ ग्रह अन्य ग्रहो के योग होने पर भी विजयी माना जाता है, और वही शुभ ग्रह स्वोच्च राशि स्थित हो तो भी

वैसा ही है अत: उसकी दशा मे मनुष्य को कष्ट नही होता ।।१७८।।

अथ चतुर्थः परिच्छेदः ।

अथ द्विग्रहयोगाः—

स्त्रीवशः क्रूरकर्मा च दुर्विनीतः क्रियादृढः ।
विक्रमी लघुचेताश्च चन्द्रसूर्यसमागमे ।।१।।

जन्मांग चक्र मे सूर्य चन्द्र का योग हो तो वह स्त्री के वशीभूत रहे, दुष्टकर्मकारी, नीतिरहित, क्रिया मे दृढ, पराक्रमी, तथा क्षुद्र चित्त वाला होता है ।।१।।

सूर्यमंगलसंयोगे तेजस्वी जातमानसः ।
मिथ्यावादी च मूर्खश्च अघनिष्ठो वली नरः ।२।

जिस जन्मांग में सूर्य भौम का योग हो तो वह जातक तेजस्वी प्रशस्त (उदार) चित्त, झूठ बोलने वाला, मूर्ख, पापा एवम् बली होता है ।।२।।

विद्वानार्यो राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः ।
यशस्वी चास्थिरद्रव्यो बुधसूर्यसमागमे ।।३।।

सूर्य और बुध का अगर योग हो तो विद्वान् श्रेष्ठ, राजमान्य, सेवा मे तत्पर, प्रिय बोलने वाला, यशस्वी, तथा उसके पास धन न डटे ।।३।।

नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि ।
उपाध्यायोऽतिविख्यातो योगे जीवार्कसंगमे ।४

सूर्य और गुरु का संयोग हो तो राजपूज्य, धर्मात्मा, मित्रवान्, धनाढय, पढाने वाला (अध्यापक) तथा अत्यन्त विख्यात होवे ॥४॥

शस्त्रप्रहारी वीरश्च रंगज्ञो नेत्रदुर्बलः ।
स्त्रीसंगलब्धद्रव्यश्च शक्तः शुक्रार्कसंगमे ॥५॥

सूर्य और शुक्र की अगर एक राशि पर स्थिति आपडे तो शस्त्र चलाने मे कुशल, वीर, रङ्ग का वेत्ता, नेत्रो से दुर्बल, स्त्री के सग से द्रव्य प्राप्त करने वाला तथा सामर्थ्यवान् होवे ॥५॥

विद्वानात्मक्रियानिष्ठो धातुज्ञो वृद्धचेष्टितः ।
प्रनष्टसुतदारश्च शनिसूर्यसमागमे ॥६॥

सूर्य शनि का एकत्र योग होवे तो विद्वान् अपनी क्रिया मे तत्पर, धातुवेत्ता, वृद्धो के से कर्म करने वाला तथा सुत और स्त्री के विनाश वाला होवे ॥६॥

मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत् ।
चन्द्रमंगलसंयोगे रक्तपीडातुरो नरः ॥ ७ ॥

चन्द्र और भौम की एकत्र स्थिति होवे तो मट्टी, चाम तथा धातुओ की कारीगरी जानने वाला, धनी, सग्राम मे शूर-वीर, तथा रक्त की पीडा वाला होवे ॥७॥

स्त्रीसम्मतःसुरूपश्च काव्येषु निपुणो भवेत् ।
धनी गुणी हास्यवक्त्रो बुधेन्द्वोर्धार्मिकोऽन्वये ८

चन्द्रमा तथा बुध का संयोग होवे तो स्त्रियो का प्यारा, सुन्दर स्वरूप वाला, काव्यो मे निपुण, धनाढ्य, गुणी हँस-मुख तथा धर्मात्मा होता है ॥८॥

देवद्विजार्चानिरतश्च बन्धुमान्यकरो धनी ।
दृढ़प्रीतिःसुशीलश्च जीवचन्द्रसमागमे ॥९॥

चन्द्रमा और बृहस्पति का सयोग होवे तो देवता तथा ब्राह्मणो की पूजा में निष्ठा करने वाला, बन्धुओ का मान करने वाला धनी, दृढ प्रीति वाला तथा सुशील होवे ॥९॥

कुशली विक्रयादौ च वृद्धिज्ञः कलहप्रियः ।
माल्यवस्त्रादिसंयुक्तः शशिभार्गवसंगमे ॥१०॥

चन्द्रमा और शुक्र का एकत्र योग होवे तो क्रय विक्रय में चतुर, वृद्धि का वेत्ता, कलह प्रिय, एव माला तथा वस्त्रादिकों से युक्त होवे ॥१०॥

गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्रीरमणो नरः ।
वेश्याधनो विपुत्रश्च शनिचन्द्रसमागमे ॥११॥

चन्द्रमा और शनि का समागम हो तो हाथी तथा घोड़ों का पालन करने वाला, दु स्वभाव, वृद्ध स्त्री में रमण करने वाला, वेश्या के धन वाला तथा निपुत्री होवे ॥११॥

भूपुत्रबुधसंयोगे निर्धनो विधवापतिः ।
स्त्रीदुर्भगःक्रयप्रीतिः स्वर्णलोहप्रकारकः ॥१२॥

भौम और बुध का योग होने पर मनुष्य दरिद्री, विधवा स्त्री का पति, कुरूपा स्त्री का पति, क्रय में प्रेम रखने वाला सोने और लोहे का व्यापार करने वाला होवे ॥१२॥

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतिज्ञो वाग्विशारदः ।
अश्वप्रियःप्रधानश्च जीवमंगलसंगमे ॥१३॥

जिसके भौम और गुरु का सयोग होय तो वह मनुष्य

बुद्धिमान्, शिल्प शास्त्र का वेत्ता, वेदो का वेत्ता, बोलने मे चतुर, घोडो का प्यारा, तथा मनुष्यो मे प्रधान (मुखिया) होवे ॥१३॥

गुणप्रधानो गणको द्यूतेऽत्यन्तरतः शठः ।
परदाररतो मान्यः शुक्रमंगलसंगमे ॥ १४ ॥

मङ्गल और शुक्र का सयोग होवे तो गुणो का वेत्ता, ज्योतिषी, जुवा मे अत्यन्त तत्पर, मूर्ख, पराई स्त्रियो मे आसक्त, तथा मनुष्यो में आदरणीय होता है ॥१४॥

वाग्मीन्द्रजालदक्षश्च विधर्मा कलहप्रियः ।
विषमद्यप्रपंचाढ्यो मन्दमंगजसंगमे ॥१५॥

भौम और शनि का एकत्र समावेश हो तो वाणी मे चतुर इन्द्रजाल में चतुर, विधर्मी, कलह प्रिय, विष तथा शराव आदि के प्रपच मे चतुर होवे ॥१५॥

जीवचन्द्रजयोर्योगे नृत्यवाद्यविचक्षणः ।
धर्मयुक्तःपण्डितश्च सुखी भवति मानवः ॥१६॥

गुरु और बुध का योग एकत्र यदि हो तो नाचने बजाने मे चतुर, धैर्ययुक्त, पडित, तथा सुखी होवे ॥१६॥

बुधभार्गवयोर्योगे नयज्ञो बहुशिल्पवान् ।
धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीतज्ञो हास्यलालसः १७

बुध और शुक्र का योग हो तो नीति शास्त्र का वेत्ता, बहुत सी कारीगरियो का जानने वाला धनाढ्य, सुन्दर वाक्य वाला, वेद और गीतो का वेत्ता, तथा हास्य रस मे लालसा रखने वाला होवे ॥१७॥

ऋणी दमनशीलश्च निरुपायो जगत्कलिः ।
शुभवाक्यःकार्यदक्षो बुधमन्दसमागमे ।। १८ ।।

बुध और शनि के समागम होने पर ऋणी, दमन स्वभाव वाला, उपायशून्य, सब से कलह करने वाला, शुभ वाक्य वाला तथा कार्य मे चतुर होवे ।।१८।।

गुरुभार्गवसंयोगे दिव्यदारो महाधनी ।
धर्मस्थितिःप्रमाणज्ञो विद्याजीवी च जायते १९

बृहस्पति और शुक्र का सयोग हो तो दिव्य स्त्री वाला महाधनी, धर्म में स्थिति रखने वाला, प्रमाणों का वेत्ता तथा विद्या से आजीविका करने वाला होता है ।।१९।।

वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः ।
श्रेणीसेनाग्राममुख्यो गुरुमन्दान्वये नरः ।२०।

बृहस्पति और शनि की अगर एकत्र स्थिति हो तो वृत्ति मे सिद्धि रखने वाला शूर, यशस्वी, नगर का मालिक, श्रेणी सेना और गाँव का मुखिया होवे ।।२०।।

शुक्रस्य च शनेर्योगे मल्लः पशुपतिर्नरः ।
दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिकशिल्पवित् ।२१

शुक्र और शनि का एकत्र योग हो तो मल्ल, पशुपालक, काठो के फाडने मे कुशल, तथा क्षार, खट्टी वस्तु और शिल्प विद्या का वेत्ता होवे ।।२१।।

अथ पंचमः परिच्छेदः

अथ त्रिग्रहयोगफलम्—

सूर्यचन्द्रबुधैर्योगे राजमान्यो धनान्वितः ।

चण्डो दुर्वलवृत्तिश्च जायते विद्ययायुतः ॥१॥

जिसकी जन्म कुण्डली मे सूर्य चन्द्र और बुध इन तीन ग्रहो का एक राशि पर योग होवे तो राजमान्य, धनाढ्य, क्रूर, दुर्वल वृत्ति वाला, तथा विद्वान् होता है ॥ १ ॥

भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातः साहसिको नरः ।
निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रपीडितः ॥२॥

सूर्य मगल, बुध का योग होने पर विख्यात, हिम्मती, निठुर, वेशरम, तथा धन स्त्री और पुत्रो से दु खी होता है ॥ २ ॥

सूर्यजीवकुजैर्योगे प्रचण्डः सत्यभाषणः ।
राजमन्त्री च निर्वाक्यो नरश्च निपुणो भवेत् ३

सूर्य, बृहस्पति, और मङ्गल का योग हो तो वडे चढे स्वभाव वाला, सत्य वोलने वाला, राजमन्त्री, दूसरे को निरुत्तर करने वाला, तथा चतुर होता है ॥ ३ ॥

शुक्रभौमार्कसंयोगे भक्तिमान् जायते नरः ।
कुलीनो वत्सलो लोके विषयासक्तमानसः ।४।

शुक्र, भौम और सूर्य का योग हो तो मनुष्य भक्तिमान् कुलीन, लोक मे सवका प्यारा, तथा विषयो मे मनको फंसाने वाला होता है ॥ ४ ॥

शनिसूर्यकुजैर्योगे मूर्खो गोधनवर्जितः ।
रोगार्तःस्वजनैर्हीनो विकलःकलहाकुलः ॥५॥

शनि, सूर्य और भौम का योग हो तो मूर्ख, गो धन से रहित, रोग से पीडित, स्वजनो से रहित, विकल, एवम् कलह मे व्याप्त रहता है ॥ ५ ॥

बुधजीवार्कसंयोगे नेत्ररोगी महाधनी ।
शस्त्रशिल्पकलाभिज्ञो लिपिकर्ता भवेन्नरः ॥६॥

सू० बु० बृ० का योग होवे तो वह मनुष्य नेत्र रोगी महाधनी, शस्त्र और शिल्प कला का वेत्ता, तथा लिपि कर्ता होता है ॥ ६ ॥

शुक्रसूर्यबुधैर्योगे गुरुवर्गैर्निराकृतः ।
अभिशस्तीदिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमानसः ।७।

शु० सू० बु० का एकत्र योग हो तो गुरु वर्गो करके तिरस्कृत, सन्मार्ग पर चलने वाला, स्त्री के कारण दुःखी चित्त वाला होता है ॥ ७ ॥

शनिसूर्य्यबुधैर्योगे दुराचारः पराजितः ।
बन्धुभिश्च परित्यक्तो विद्वेषी जायते नरः ।८।

शु० सू० बु० का योग होने पर मनुष्य, दुराचारी, हारा-हुआ बन्धुओ से त्यागा हुआ, तथा विद्वेषी होता है ॥ ८ ॥

शुक्रजीवार्कसंयोगे राजमन्त्री च निर्धनः ।
दुष्टचक्षुश्च शूरश्च प्राज्ञश्च परकर्मकृत् ॥६॥

शु० बृ० सूर्य का योग हो तो राजमन्त्री, निर्धन, खराब आँखो वाला, शूर, बुद्धिमान् तथा पराये कार्यो का करने वाला होता है ॥ ६ ॥

मन्दजीवार्कसंयोगे पुत्रमित्रकलत्रवान् ।
निर्भयो नृपनिष्ठश्च द्वेष्यो बन्धुजनस्य च १०

शनि, गुरु, चन्द्रमा का योग हो तो पुत्र मित्र स्त्री वाला निडर, राजप्रिय, तथा वन्धुजनों का वैरी होता है ॥१०॥

शनिशुक्रार्क संयोगे कलामानविवर्जितः ।
कुष्ठी शत्रुभयोद्विग्नो दुराचारी नरो भवेत् ११

श० शु० सू० का सयोग हो तो कला और मान से हीन, कोढी, शत्रु के डर से व्याकुल, तथा दुराचारी होता है ।

सूर्यचन्द्रकुजैर्योगे प्रचण्डः सत्यभाषणः ।
राजमन्त्री च निर्वाक्यो नरश्च निपुणो भवेत् १२

सू० च० म० के योग मे प्रचण्ड, सत्यवक्ता राजमन्त्री निर्वाक्य तथा चतुर होता है ॥ १२ ॥

चन्द्रचान्द्रिकुजैर्योगे नीचाचारश्च पापकृत् ।
आजीविकाहता लोके बन्धुहीनश्च जायते १३

चं० बु० म० के योग मे नीचाचारी, पापी, जीविका से रहित, लोक मे बन्धुओ से हीन होवे ॥ १३ ॥

चन्द्रजीवकुजैर्योगे दुःशीलायाःपतिः सुतः ।
सदा भ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते १४

चं० गु० म० का योग हो तो दुष्ट स्त्री का पति, तथा दुष्ट माता का पुत्र होवे, सदा घूमने मे तत्पर, तथा शीत से डरने वाला होता है ॥ १४ ॥

शनिचन्द्रकुजैर्योगे बाल्ये च मृतमातृकः ।
क्षुद्रश्च लोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः १५

श० च० म० का योग होने पर मनुष्य की माता बालक पन मे मर जाती है, नीच प्रकृति वाला, लोक मे विद्वेष करने वाला, तथा कठोर स्वभाव का होता है ॥ १५ ॥

जीवचन्द्रबुधैर्योगे तेजस्वी धनवानपि ।
पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान्

बृ० च० बु० के योग मे तेजस्वी, धनाढ्य, पुत्र- मित्रादिकों से युक्त, वाग्मी, विख्यात तथा कीर्तिमान् होवे ।। १६ ।।

बुधेन्दुभार्गवैर्योगे विद्यया संयुक्तो नरः ।
सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते १७

बु० शु० च० के योग मे मनुष्य विद्वान्, ईर्ष्या करने वाला, धन का अत्यन्त लोभी नीचाचार होता है ।। १७ ।।

बुधेन्दुमन्दसंयोगे प्राज्ञो भूपतिपूजकः ।
अत्युच्चो विपुलांगश्च वाग्मी भवति मानवः ।।

बु० च० श० के योग मे जातक बुद्धिमान् राजाओ का पूजक, अत्यन्त ऊँचा, विशाल देहवान् तथा वाग्मी होता है ।

शुक्रजीवेन्दुसंयोगे नीरोगः स्त्रीरतो नरः ।।
शास्त्रार्थविज्ञो नीतिज्ञो ग्रामपत्तनपालकः ।१६

शु० बृ० च० के योग मे जातक नीरोग, स्त्री मे आसक्त, शास्त्रार्थ मे निपुण, नीतिज्ञ, तथा, नगर का पालक होता है ।१६।

रविशुक्रेंदुसंयोगे लिपिकर्त्ता च वेदवित् ।
पुरोहितकुलोत्पत्तिर्भवेत्पुस्तकवाचकः ।।२०।।

सू० शु० च० के योग मे मनुष्य लेखक, वेदवेत्ता पुरोहित कुल में पैदा होने वाला तथा पुस्तकों का वाचक होता है ।।२०।।

जीवभौमबुधैर्योगे सुकविर्युवतीपतिः ।

परोपकारकृत्तीक्ष्णो गन्धर्वकुशलो भवेत् ।२१।

वृ० म० बु० के योग मे मनुष्य श्रेष्ठ कवि, जवान स्त्री का पति, पर उपकारी, तीक्ष्ण स्वभाव का, गाने मे चतुर होता है ॥२१॥

भृगुभौमबुधैर्योगे विकलाङ्गश्च चंचलः ।
अकुलीनःसदोत्साही तृप्तश्च मुखरो नरः २२

शु० म० बु० के योग मे मनुष्य विकलांग, चचल, दुष्ट कुलोत्पन्न, सदा उत्साही, सन्तोषी, तथा बहुत बोलने वाला होता है ॥२२॥

जीवकाव्यकुजैर्योगे दिव्यनारीयुतः सुखी ।
सर्वानन्दकरो लोके जायते नृपतिप्रियः ।२३।

गु० शु० म० के योग मे मनुष्य दिव्य स्त्री वाला, सुखी, सर्वानन्द भोक्ता, तथा लोक मे राजा का प्यारा होता है ॥२३॥

बुधमन्दकुजैर्योगे प्रवासी नेत्ररोगवान् ।
प्रेष्यो वदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ।२४।

बु० श० म० के योग मे मनुष्य प्रदेश वासी, नेत्र रोग वाला, दूत, मुख का रोगी, तथा हास्य रस का लोभी होता है।

मन्दजीवारसंयोगे कुष्ठांगो राजसम्मतः ।
नीचाचारो निर्घृणश्च भवेन्मित्रैर्विगर्हितः २५

श० गु० म० के योग मे मनुष्य कुष्ठयुक्त अंग वाला, राजा का प्रिय, नीचाचारी, घृणा न करने वाला, तथा मित्रो से निन्दित होता है ॥२५॥

भृगुमन्दकुजैर्योगे दुःशीलायाः पतिर्भवेत् ।
प्रवासशीलो दुःखी च जायते जातकःसदा २६

शु० श० म० के योग होने पर दुस्वभाववती स्त्री का पति, परदेश मे रहने वाला, तथा हमेशा दुखी होता है ।।२६।।

बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः ।
हन्तारिर्दीर्घकीर्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः ।।२७

बु० गु० श० के योग मे जातक श्रेष्ठ शरीर वाला, राजमान्य, शत्रुमर्दक, विख्यात कीर्ति वाला, तथा सत्यवादी होता है ।।२७।।

बुधार्किजीवसंयोगे सुदारो बहुभोगवान् ।
धनैर्युतो महाप्राज्ञःसुखैश्वर्ययुतो भवेत् ।।२८।।

बु० श० गु० के योग मे सुन्दर स्त्री वाला, बहुत से भोगो वाला, धनाढ्य, महापण्डित, और सुख तथा ऐश्वर्य से युक्त होवे ।।२८।।

मन्दशुक्रबुधैर्योगे मुखरः परदारकः ।
कुसंगतिः कलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो भवेत् २६

श० शु० बु० के योग मे जातक बहुत बकवाद करने वाला, पराई स्त्री मे आसक्त, कुसङ्गति, कलावेत्ता, तथा अपने देश में प्रेम रखने वाला होता है ।।२६।

मन्देज्यभृगुसंयोगे राजा भवति कीर्तिमान् ।
नीचवंशेऽपि संभूतः शीलयुक्तो नृपो भवेत्३०

श० गु० शु० के सयोग मे यशस्वी राजा होय, नीच वश मे उत्पन्न होने पर भी शीलयुत राजा होता है ।।३०।।

प्रायः पापैर्युते चन्द्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः ।
शुभग्रहैःशुभं वाच्यं मिश्रितैर्मिश्रितं फलम् ३१
शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताः कुर्वन्ति सुखिनं नरम् ।
पापास्त्रयो दुःखिनं च दुर्विनीतं विगर्हितम्३२

पाप ग्रहो के सहित चन्द्रमा होवे तो प्राय माता का नाश करता है, और अगर पापग्रह युक्त सूर्य हो तो प्राय पिता का नाश करता है, शुभग्रह युत होने पर फल भी शुभ होता है और पापग्रह युत होने से अशुभ फल, इसी तरह मिश्रित ग्रहो से युत हो तो फल भी मिश्रित होता है तीन सौम्य ग्रह अगर एकत्र पड जाय तो आदमी सुखी रहता है, और अगर तीन पापग्रह एकत्र स्थित हो तो जातक दु खी उद्दण्ड, एवम् निन्दित होता है । ३१ ॥ ३२ ॥

अथ षष्ठः परिच्छेदः ।

अथचतुर्ग्रहयोगफलम् ।

चन्द्रचान्द्रिकुजार्काणां योगे लिपिकरो भवेत् ।
तस्करो मुखरो वाग्मी मायायां कुशलोभिषक् १

चन्द्र श० म सू० के योग मे लेखक, चोर, वक्रवादी, बोलने मे निपुण, तथा माया मे कुशल होता है ॥१॥

भौमभास्करचन्द्रेज्यप्रसंगे निपुणो धनी ।
तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः ।२॥

म० सू० च० गु० के योग मे जातक निपुण, धनाढ्य, तेजस्वी, नि शोक तथा नीतिज्ञ होता है ॥२॥

सूर्येन्दुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही ।
पुत्री तथा कलत्री च वाग्वृत्तिर्मनुजो भवेत् ३

सू० च० म० शु० के योग मे जातक विद्या और धन का सग्रह करने वाला, पुत्रवान्, स्त्री वाला, व्याख्यान से आजीविका करने वाला होता है ॥३॥

अर्कार्किशशिभौमानां योगे मूर्खश्च निर्धनः ।
ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥ ४ ॥

सू० श० च० म० के योग मे जातक निर्धन, मूर्ख, छोटे कद वाला, विषम शरीर वाला, भिक्षावृत्ति वाला होता है ॥४॥

शशिसौम्यार्कजीवानां योगे शिल्पकरो धनी ।
सौवर्णिकः प्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते ५

च० बु० सू० गु० के योग मे कारीगरी करने वाला, धनवान् सुवर्ण का व्यापार करने वाला, भीतर को घुसी हुई आँखो वाला, तथा रोग से हीन होवे ॥५॥

चन्द्रार्कबुधशुक्राणां योगे च सुभगो नरः ।
ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो भवत्६

च० सू० बु० शु० के योग में सुन्दर, छोटे कद वाला, राजमान्य, वाग्मी तथा विकल होता है ॥६॥

अर्कार्किचन्द्रचान्द्रीणां योगे भिक्षाशनोनरः ।
वियुक्तः पितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ७

सू० श० च० बु० के योग मे भिक्षा के अन्न को खाने वाला, माता पिता से वियुक्त, विकल नेत्र वाला, तथा निर्धन होता है ॥७॥

सूर्यचन्द्रेज्यशुक्राणां संयोगे राजपूजितः।
जलारण्यमृगस्वामी नरः स्यान्निपुणः सुखी ८

सू० च० गु० शु० के योग मे मनुष्य राजपूजित, जल, जगल तथा वन जन्तुओं का मालिक, निपुण एवम् सुखी होता है ॥८॥

सूर्यचन्द्रार्किजीवानां मान्यश्च वनिताप्रियः।
बहुवित्तसुतस्तीक्ष्णः समाक्षश्च प्रजायते ॥६॥

सू० च० श० गु० के योग मे मान्या स्त्री का प्रिय बहुत से धर्न तथा पुत्र वाला, एवम् समान नेत्र वाला होता है ॥६॥

सितार्कजरवीन्दूनां योगे चात्यन्तदुर्बलः।
वनितासदृशाचारो भीरुरग्रेसरो नरः ॥१०॥

शु० सू० रा० च० के योग मे जातक अत्यन्त दुर्बल स्त्री के समान आचार वाला, डरपोक, तथा आगे गमन करने वाला होता है ॥१०॥

बुधार्ककुजजीवानां योगे सूत्रकरो नरः।
परदाररतःशूरो दुःखी चक्रधरो भवेत् ॥११॥

बु० सू० म० वृ० के योग मे सूत बुनने वाला, पर स्त्री मे रत, शूर, दु:खी तथा चक्र धारी होता है ॥११॥

सूर्यशुक्रकुजज्ञानां योगे वै पारदारिकः।
निर्लज्जो दुर्जनश्चौरो विषमांगो नरो भवेत् ।१२

सू० शु० म० बु० के योग मे पर स्त्री मे फँसने वाला वेशरम, दुर्जन, चोर, विषम अग वाला होता है ॥१२॥

अर्कार्किबुधभौमानां योगे योद्धा कविर्जनः ।
मन्त्री च भूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारश्च जायते१

सू० श० बु० म० के योग मे जातक योद्धा, कवि मन्त्री राजा, तीक्ष्ण स्वभाव का तथा नीचाचार होता है ॥१३॥

भौमार्कजीवशुक्राणां योगे पूज्यो धनी जनः ।
सुभगो नृपमान्यश्च ख्यातो भवति नीतिमान् ॥

म० सू० गु० शु० के योग मे पूज्य, धनवान्, सुन्दर, राजमान्य, विख्यात, तथा नीतिज्ञ होता है ॥१४॥

भानुभानुजजीवारैरेकस्थैर्गणनायकः ।
सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो जायते नरः१५

सू० श० गु० म० के एकत्र स्थित होने पर समूह का नेता, उन्मादवान्, राजमान्य, समस्त कार्यो को सिद्धि करने वाला होवे ॥१५॥

मन्दमार्तण्डशुक्रारैः संयुक्तैर्जायते जनः ।
लोकद्वेष्टासमाक्षश्च नीचाचारो जड़ाकृतिः १६

श० सू० शु० म० के एकत्र स्थित होने पर मनुष्यो से द्वेष करने वाला, समान नेत्र वाला, नीचाचार, जड़ों की सी आकृति वाला होता है ॥१६॥

जीवशुक्रबुधार्काणां योगे बहुमतिर्जनः ।
धनी सुखी च सिद्धार्थः प्रकृष्टश्च प्रजायते १७

गु० शु० बु० सू० के योग होने पर जातक अत्यन्त बुद्धिमान्, धनी, सुखी, सिद्धकार्य वाला तथा विजय-शील होवे ।

अर्कार्किबुधदेवेज्यैरेकराशिस्थितैर्नरः ।
भ्रातृमान् कलही मानी क्लीवाचारी निरुद्यमः ।

सू० श० बु० गु० के एक राशि स्थित होने पर भाई बन्धु वाला, कलह करने वाला, मानी, नपुंसकों के से आचार वाला, तथा निरुद्यमी होता है ॥१८॥

शुक्रसौरिबुधार्काणां योगे मित्रयुतः शुचिः ।
मुखरः सुभगः प्राज्ञो राजप्रीतो भवेन्नरः ।१९।

शु० श० बु० सू० के एक राशिस्थ होने पर मित्र युक्त, शुद्ध, वाचाल, सुन्दर, पण्डित, राजप्रिय होता है ॥१९॥

सूर्यसौरिसितेज्यानां संबन्धे भोगमानवान् ।
कविःकारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ।२०।

सू० श० शु० बृ० के योग होने पर भोग तथा मानधारी, कविता करने वाला, कारीगरो का उस्ताद, तथा राजप्रिय, होता है ॥२०॥

चन्द्रचान्द्रिकुजेज्यानां योगे शास्त्रविचक्षणः ।
नरेन्द्रस्य महामन्त्री महाबुद्धिर्नरो भवेत् ।२१।

च० बु० म० गु० के एकत्र सम्बद्ध होने पर शास्त्र का विद्वान् राजा का प्रधान मन्त्री महा बुद्धिमान् होता है ॥२१॥

भौमेन्दुबुधशुक्राणामन्वये बन्धकीपतिः ।
निद्रालुः कलही नीचो बन्धुद्वेषी जनो भवेत्२२

म० च० बु० शु० के योग होने पर जातक बाँझ स्त्री का पति, निद्रालु, कलही, नीच तथा बन्धुओ से द्वेष करने वाला होता है ॥२२॥

भौमेन्दुबुधसौरीणां योगे शूरकुलोद्भवः ।
पुत्रमित्रकलत्री च विमातृसहितो जनः ॥२३॥

म च बु श के योग होने पर शूरवीर खानदान मे उत्पन्न होने वाला, पुत्र, मित्र तथा स्त्री युक्त, तथा सौतेली माता वाला होता है ॥२३॥

चन्द्रारबुधशुक्राणां योगे साहसिको नरः ।
विकलांगो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपि जायते २४

च म बु शु. के योग में जातक हिम्मती, विकलांग, धनाढ्य, पुत्रवान्, मानी, एवम् प्राज्ञ होता है ॥२४॥

भौमेन्दुजीवमन्दानामन्वये बधिरो धनी ।
सोन्मादः स्थिरवाक्यश्च शूरो विज्ञो भवेन्नरः २५

म च. गु. श के योग मे. पुरुष बहिरा, धनाढ्य, उन्मादी, सत्यवक्ता, शूर तथा विद्वान् होता है ॥२५॥

चन्द्रारशुक्रमन्दानां मेलने वृषलीपतिः ।
सोद्वेगःसर्पतुल्याक्षःप्रगल्भो जातको भवेत् २६

च म शु श. के योग होने पर जातक शूद्रा का पति, उद्वेगवान साप की सी आँख वाला, ढीठ होता है ॥२६॥

जीवशुक्रबुधेन्दूनामन्वये सुभगो धनी ।
विमातृपितृकः प्राज्ञो गतारिर्जायते नरः ॥२७॥

गु. शु, बु. चं के योग मे जातक, सुन्दर, धनी, सौतेली माता तथा पिता वाला, बुद्धिमान् एवम् शत्रुरहित होता है ॥२७॥

बुधन्दुगुरुमन्दानां याग मात्रा विवर्जितः ।
त्वग्दोषी सुभगो दुःखी वहुभार्यो भवेन्नरः ॥२८

बु. च० गु० श० के योग मे जातक, मैया से रहित, चर्म रोगी, सुन्दर, दुखी, बहुत सी स्त्री वाला होना है ॥२८॥

भौमार्कगुरुचान्द्रीणां योगे वन्धुप्रियः कविः ।
तेजस्वी राजमन्त्री च यशोधर्म्मयुतो नरः २९

म० सू० गु० बु० के योग मे पुरुष वन्धुग्रो का प्रिय, कवि, तेजस्वी राजमन्त्री एवम् यश और धर्म से युक्त रहता है ।

चन्द्रेज्यमितसौरीणामन्वये पारदारिकः ।
प्राज्ञो निर्द्रव्यबन्धुश्च स्थूलभार्यो नरःस्मृतः ३०

च० बृ० शु० श० के योग मे पर स्त्री मे आसक्त, बुद्धिमान् धन और भाइयो से रहित, मोटी स्त्री वाला होता है ॥ ३० ॥

बुधारगुरुशुक्राणां योगे स्त्रीकलहप्रियः ।
धनी सुशीलो नीरोगी लोकपूज्यो नरो भवेत् ३१

बु० म० गु० शु० के योग मे जातक स्त्रियो से कलह करने मे प्रेम रखने वाला, धनी, सुशील, नीरोग, लोकपूज्य होता है ॥ ३१ ॥

भौमेज्यबुधसौरीणां योगे शूरश्च निर्धनः ।
सत्यसौख्ययुतो विद्वान् वादी वाग्मी नरो भवेत्

म० गु० बु० श० के योग मे जातक वीर, निर्धन, सत्य तथा सुख से युक्त, विद्वान्, वाद विवाद करने वाला तथा वाग्मी होता है ॥ ३२ ॥

मल्लोऽन्यपुष्टो योद्धा च बुधारयमभार्गवैः ।
ख्यातो लोके दृढाङ्गश्च कुकर्मणि रुचिर्भवेत् ३३

बु० म० श० शु० के योग में मनुष्य पहलवान्, दूसरे से पालित, लडाकू, लोक मे प्रसिद्ध, परिपुष्ट देह वाला, तथा कुकर्म में रुचि रखने वाला होता है ॥ ३३ ॥

भौमजीवार्कशुक्राणां मीलने साहसप्रियः ।
धनी सतेजाःस्त्रीलोलः कितवो जायते नरः ३४

म० गु० सू० शु० के योग मे मनुष्य साहस मे प्रेम करने वाला, धनी तेजस्वी, स्त्री मे चचल, तथा धूर्त होवे ॥ ३४ ॥

बुधेज्यभृगुमंदानां योगे कामातुरो नरः ।
विधेयभृत्यो मेधावी तीव्रःशास्त्ररतो भवेत् ३५

बु० गु० शु० श० के योग में आदमी कामातुर, नौकरो से चाकरी कराने में तत्पर, बुद्धिमान्, तीव्र तथा शास्त्र में चतुर होता है ॥ ३५ ॥

अथ सप्तमः परिच्छेदः

बहुप्रपंचो दुःखी च जायाविरहतापितः ।
सूर्याद्यैर्जीवपर्यन्तैर्नरः स्यात्पंचभिर्ग्रहैः ॥१॥

सू० च० म० बु० गु० के योग में जातक बहुत प्रपच वाला, दु खी, स्त्री के वियोग से दु खी होता है ॥ १ ॥

गतसत्यो बन्धुहीनः परकर्मकरो नरः ।
क्लीवस्य च सखा सूर्यभौमेन्दुगुरुभार्गवैः ॥२॥

सू० म० च० गु० शु० के योग मे जातक सत्य न बोलने वाला, बन्धु रहित, दूसरो का कार्य करने वाला, नपुसक का मित्र होता है ॥ २ ॥

अल्पायुर्विकलत्रश्च दुःखी सुतविवर्जितः ।
अर्कार्किबुधचन्द्रारैर्योगे बन्धनभागपि ॥ ३ ॥

सू० श० बु० च० मगल के योग होने पर मनुष्य दु खी पुत्र, रहित, थोडी आयु वाला, स्त्री रहित, तथा जेल भोगने वाला होता है ॥ ३ ॥

जातान्धो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः ।
गीतप्रीतो नरो भौमभानुचन्द्रेज्यभार्गवैः ॥४॥

सू० च० म० गु० शु० के योग मे मनुष्य जन्मान्ध, बहुत दुखी, पिता माता से रहित, गीत का प्यारा होता है ॥ ४ ॥

परद्रव्यहरो योद्धा परतापकरः खलः ।
समर्थो जायते मन्दचन्द्रजीवार्कभूसुतैः॥ ५ ॥

सू० च० म० गु० श० के योग मे जातक परधन हर्ता योद्धा, दूसरो को ताप करने वाला, दुष्ट, तथा समर्थ होता है ॥५॥

मानाचारधनैर्हीनः परदाररतो नरः ।
एकस्थैर्जायते भानुभौमेन्दुशनिभार्गवैः॥ ६ ॥

सू० म० च० श० शु० के योग मे पुरुष सत्कार, आचार तथा धन से हीन, तथा पर स्त्री मे फसा हुआ रहता है ॥ ६ ॥

राजमन्त्री भूरिवित्तो यन्त्रज्ञो दण्डनायकः ।
ख्यातो जनो यशस्वी च जीवार्कज्ञेन्दुभार्गवैः ७

गु० सू० बु० च० शु० के योग में पुरुष राजमन्त्री, बहुत सा धनी, यन्त्रवेत्ता, किसी स्थान का अधिकारी, विख्यात तथा यशस्वी होता है॥ ७॥

परान्नभोजी सान्माद: प्रियतप्तश्च वञ्चक:।
उग्रो भीरुर्नर: सूर्यशनिचन्द्रेज्यचन्द्रजै: ॥८॥

सू० श० च० गु० बु० के योग मे जातक परान्नभोजी उन्मादी, अपने प्रिय जनो को ताप देने वाला, गठिया, उग्र तथा डरपोक होता है॥ ८॥

धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्यूत्साही च लोमश:।
दीर्घो भवति चन्द्रार्कबुधशुक्रशनैश्चरै: ॥९॥

च० सू० बु० शु० श० के योग मे जातक धन तथा सुखो से हीन मरणोत्साही, बहुत बालो वाला तथा लम्बे कद का होता है॥ ९॥

इन्द्रजालरतो वाग्मी चलचित्तो जनप्रिय:।
प्राज्ञ:स्वशत्रुभिर्भीत: शुक्रेज्यार्केन्दुसूर्यजै: । १०

शु० गु० सू० च श० के योग मे इन्द्रजाल में तत्पर, वाग्मी, चलक्षित, लोगो को प्यारा, बुद्धिमान्, एव शत्रुओ से डरने वाला होता है॥ १०॥

स्फीतोवहुहय: कामी नरोऽशोकश्चभूपति:
बुधार्ककुजशुक्रेज्यै: सुभगो भूपतिप्रिय: ११

बु० सू० म० शु० गु० के योग मे जातक सम्पत्तिवान् बहुत से घोडों वाला, कामी, शोक रहित, सेनापति, सुन्दर, राजप्रिय होता है॥ ११॥

भिक्षाभोगी च रोगी च नित्योद्विग्नो मलीमसः।
जीर्णो नरो भानुभौमशनिजीवबुधैर्भवेत् ।१२।

सू० म० श० गु० बु० के योग मे जातक भिक्षान्न भोगी रोगी, नित्य उद्विग्न मैला, कुचैला तथा जीर्ण शरीर वाला होता है ।' १२ ॥

व्याधिभिःशत्रुभिर्ग्रस्तःस्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः ।
नरःस्याद्विकलः शुक्रबुधमन्दार्कभूसुतैः ।१३।

शु० श० बु० सू० म० के योग मे जातक व्याधि तथा शत्रुओ से ग्रस्त, स्थान भ्रष्ट, भूखा एवम् विकल होता है ॥ १३ ॥

विज्ञो विकारकार्यैश्च धातुयन्त्ररसायनै ।
नरः प्रसिद्धो भूपुत्ररविजीवसितार्कजैः ॥१४॥

म० सू० गु० शु० श० के योग मे विद्वान्, विचार पूर्वक कार्य करने वाला. तथा धातु, यन्त्र, रसायनो के कारण लोक मे विख्यात होवे ॥ १४ ॥

मित्रप्रीतिः शास्त्रवेत्ता धार्मिको गुरुसम्मतः ।
दयालुः शुक्रसूर्यार्किबुधजीवैर्जनो भवेत् ।१५।

शु० सू० श० बु० गु० के योग मे जातक मित्रो से प्रीति रखने वाला, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, गुरुओ का प्रिय तथा दयालु होता है ॥ १५ ॥

साधुः कल्मषहीनश्च धनविद्यासमन्वितः ।
बहुमित्रो नरो जीवभौमेन्दुबुधभार्गवै :१६।

गु० म० च० बु० शु० के योग मे साधु पाप रहित, धन विद्या से युक्त, बहुत मित्रों वाला होता है ॥ १६ ॥

बहुमित्रोऽरिपक्षश्च दुश्शीलः परपीडकः ।
मानी नरः सोमसौम्यशुक्रमन्दधरासुतैः ।१७।

च० बु० शु० श० म० के योग मे बहुल मित्रो वाला, शत्रु-पक्ष समर्थक, दु स्वभाव शत्रु पीडक, मानी होता है ॥ १७ ॥

परान्नयाचको नित्यं दरिद्रो मलिनस्तथा ।
नरो भवति चन्द्रारजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥१८॥

च० म० गु० शु० श० के योग मे जातक परान्न माँगने वाला, सदा कगाल, तथा मलिन होता है ॥ १८ ॥

राजमन्त्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गणाधिपः ।
चन्द्रज्ञगुरुशुक्रार्कियोगे जातो भवेन्नरः ॥१९॥

च० बु० गु० शु० श० के योग मे जातक राजमन्त्री, राज-तुल्य, लोकपूज्य, तथा बहुत से लोगो का मुखिया होता है ।

अशोकस्तामसो निःस्वःसोन्मादो राजवल्लभः ।
निद्रातुरो भौमबुधजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥२०॥

म० बु० गु० शु० श० के योग मे नि.शोक, तामसी, निर्धन उन्मादी, राजप्रिय, तथा निद्रालु होता है ॥ २० ॥

अथ अष्टमः परिच्छेदः

अथ षड्ग्रहयोगाः—

विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभाषी च भाग्यवान् ।
सूर्याद्यैः शुक्रपर्यन्तैर्लाभो भवति षड्ग्रहैः ।१।

सूर्य से लेकर शुक्रः पर्यन्त छः ग्रहो के एकत्र स्थित, होने

पर जातक विद्या, धर्म धन से युक्त, बहुत बोलने वाला, भाग्य शाली तथा लाभवान् होता है ॥ १ ॥

परकार्यरतो दाता शुद्धात्मा चंचलाकृतिः ।
षड्भिर्ग्रहैर्विना शुक्रे रमते विजने जनः ॥२॥

शुक्र को छोड कर अन्य छः ग्रहो का योग हो तो पुरुष परकार्य मे सलग्न, दाता, शुद्धात्मा, चचलाकृति, तथा विजन प्रदेश मे रहे ॥ २ ॥

संशयी सुभगो मानी ख्यातो युद्धेऽरिमर्दकः ।
विना जीवं ग्रहैःषड्भिर्वनादौ रमते जनः ।३।

वृहस्पति को छोडकर अन्य छ ग्रहो का योग हो तो पुरुष सशयी, सुन्दर मानी, विख्यात, शत्रु मर्दक, तथा जङ्गल आदि मे घूमता रहे ॥ ३ ॥

अर्थप्रिया रणोत्साही पिशुनःस्क्रोधलोभवान् ।
१अर्केन्दुभौमजीवाफुजिन्मन्दैः सुभगो नरः४

सू० च० म० गु० शु० श० का योग होने पर जातक धनप्रिय रणोत्साही, चुगल, क्रोधी, लोभी, तथा सुन्दर, होता है ॥ ४ ॥

कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमन्त्री क्षमायुतः ।
रवीन्दुबुधजीवाऽऽस्फुजिन्मन्दैः सुभगो नरः ५

सू० च० बु० गु० शु० श० के योग मे मनुष्य राजमन्त्री, क्षमाशील, स्त्री रहित एवम् निर्धन होता है ।।५ ॥

(१) "शुक्रोभृगु र्भृगुसुत सित आस्फुजिच्च"
इति वृहज्जातके ग्रहभेदाऽध्याये वराहमिहिरः ।

धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी बनाश्रितः ।
सूर्य्यारज्ञेज्यशुक्रार्कपुत्रैर्योगे भवेन्नरः ॥ ६ ॥

सू० म० बु० गु० शु० श० के योग होने पर जातक धन, दारा, तथा पुत्रो से हीन, तीर्थ यात्रा करने वाला, तथा जङ्गल का वासी होता है ॥ ६ ॥

धनी पुत्री शुचिर्मन्त्री बहुभार्यो नृपप्रियः ।
विना सूर्यग्रहैः षड्भिः प्रतापी जायते नरः ७

सूर्य के बिना अन्य चन्द्रादि छः ग्रहों का योग होवे तो जातक धनी, पुत्रवान्, शुद्धान्तःकरण, मन्त्री, बहुत स्त्री वाला, राजप्रिय, तथा प्रतापी होता है ॥ ७ ॥

प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पंचभिर्ग्रहैः ।
अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥८॥

जिसके प्रायः छः या पाँच ग्रह पड़ें तो वह मनुष्य दरिद्री तथा मूर्ख होता है यह सब फल अन्योन्य ग्रहों के देखने से कहा गया है ॥ ८ ॥

अथ नवमः परिच्छेदः

अथ नौकादियोगतत्फलानि—

लग्नात्सप्तमपर्यन्तं ग्रहैः सर्वैः शुभाशुभैः ।
क्रमेण संस्थितैःप्रोक्तो योगोनौकाभिधो बुधैः १

लग्न से सप्तम भवन पर्यन्त सूर्य से लेकर शन्यन्त सब ग्रह क्रम से होवें तो उसको विद्वानों ने नौका. योग कहा है ॥

[१]नौयोगे हि समुत्पन्नो बह्वायुःख्यातकीर्तिमान्
[२]कृपणो मलिनो लुब्धःकार्यज्ञश्चंचलो नरः।

नौका योगोत्पन्न जातक धनी, दीर्घायुष्यवान्, विख्यात कीर्ति वाला, कृपण, मलिन, लोभी, कार्यवेत्ता तथा चचल होता है।

चतुर्थात्कर्मपर्यन्तैः क्रमेण पतितैर्ग्रहैः।
विख्यातःकूटनामासौ योगःप्रोक्तो मनीषिभिः ३

चतुर्थ भवन से कर्म भवन पर्यन्त ही सब ग्रह क्रम से आपडें तो उसको विद्वानो ने 'कूट' नामक योग बताया है ॥३॥

मिथ्यावादी शठःक्रूरः कितवो बन्धुपालकः।
निष्किञ्चनःशैलवासी कूटयोगे नरो भवेत् ।४।

कूट नामक योगोत्पन्न मनुष्य मिथ्यावादी, शठ, क्रूर, कपटी, बन्धुओ का पालक, दरिद्री, तथा पर्वत पर निवास करने वाला होता है ॥४॥

सप्तमाल्लग्नपर्यन्तैः खेटैः सर्वैः शुभाशुभैः।
छत्रयोगः समाख्यातो ब्रह्मरुद्रादिभिः सुरैः ।५।

सप्तम भवन से लग्न पर्यन्त ही शुभाशुभ सब ग्रह आ बैठें तो ब्रह्म रुद्रादि देवताओं ने इसको छत्रयोग कहा है ॥५॥

प्रकृष्टधीर्दयालुश्च दीर्घायुः स्वजनाश्रयः।
वयसि प्रथमेऽन्त्ये च सुखी छत्रप्रियो नरः ।६।

छत्र योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य सुबुद्धिवान्, दयालु

१ अन्योपजीविविभवः इति क्व० पु० पाठः।
२ "लुब्धौ नौयोगे इति क्व० पु० पाठः।

दोर्घायु वाला, अपने जनों का आश्रय देने वाला और पहिली तथा पीछे की उम्र में सुख प्राप्त करने वाला होता है ॥६॥

दशमाच्च चतुर्थान्तैर्गगनेन्द्रैः शुभाशुभैः ।
कार्मुकाख्यः समाख्यातो योगोऽसौ पंडितोत्तमैः ७

दशम से चतुर्थ भवनान्त ही शुभाऽशुभ सब ग्रह आ बैठे तो विद्वानो ने इसे 'कार्मुक" योग कहा है ॥७॥

वयोमध्ये भाग्यहीनो गुप्तिपालो वने रतः ।
मिथ्यावादी च चौरश्च कार्मुके जायते नरः ८

'कार्मुक' योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य मध्यमावस्था में भाग्य हीन, जेलर, तथा जगल में रहने वाला, मिथ्यावादा एवम् चोर होता है ॥८॥

लग्नास्तयोर्ग्रहैः सौम्यैः पापैश्च सुखकर्मगैः ।
वज्रः स्याद्विपरीतैश्च यवः पद्मं च मिश्रितैः ।६।

लग्न और सप्तम भवन मे शुभ ग्रह होवे, और चतुर्थ दशम स्थान मे पाप ग्रह होवे तो 'वज्र' योग होता है और अगर इससे विपरीत अर्थात् लग्न तथा सप्तम मे क्रूर ग्रह हो, चतुर्थ दशम में शुभग्रह होवे, तो 'यव' योग जानना चाहिये,अ रौ यदि केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में शुभ पाप दोनों ग्रह हों तो ,पद्म' योग कहलाता है ॥६॥

सुखी च सुभगः शूरो मध्ये भाग्येन वर्जितः ।
निःस्नेहश्च विरुद्धश्च वज्रयोगे खलो नरः १०

वज्र योगोत्पन्न जातक सुखी, सुन्दर, शूरवीर, मध्य में भाग्यहीन, प्रेमहीन, विरुद्ध व्यवहारी तथा दुःस्वभाव होता है ॥

दाता च स्थिरचित्तश्च प्रतापी नियमैर्युतः ।
मध्ये सुखार्थपुत्राढ्यो यवयोगे जनो भवेत् ११

'यव'-योगोत्पन्न जातक,दाता, स्थिरचित्त, प्रतापी नियमवान् मध्यावस्था मे सुख, धन तथा पुत्रो से युक्त होता है ॥११॥

स्थिरायुर्दीर्घकीर्तिश्च कान्तः सुखसुतैर्युतः ।
भूयो गुणमयैर्युक्तः पद्मयोगे जनो भवेत् ।१२

पद्म योगोत्पन्न जातक दीर्घायु वाला, विशाल कीर्ति वाला मनोहर, सुखी पुत्रो से एवम् गुणी पुत्रो से युक्त होता है ॥१२॥

१लग्नाद् द्वितीयगैःसर्वैर्ग्रहैस्तुशकटः स्मृतः ।
२विहंगो वास्तुलग्नस्थैर्ग्रहैश्च सुखकर्मगैः १३

लग्न से द्वितीय भाव मे ही सब ग्रह बैठे हो तो, ''शकट' नामक योग होता है, और यदि सप्तम, लग्न चतुर्थ ,दशम अर्थात् केन्द्रस्थित ही सब ग्रह हो तो 'विहग'–नामक याग होता है ॥

निपुणो निधिकार्येषु स्थिरद्रव्यः सुखैर्युतः ।
प्रहृष्टमुखनेत्रश्च तृप्तो वापि नरः सदा ॥१४॥
मूर्खः कुकार्यो रोगार्त्तः संकटप्राप्तजीविकः ।
निःस्वो बन्धुविहीनश्च शकटे जायते नरः १५

"शकट'' योग मे जन्मा हुआ जातक निधिकार्य मे चतुर, स्थिरधनी, सुखी,. सुन्दर मुख नेत्र वाला, तथा सर्वदा प्रसन्न रहे, मूर्ख, कुकर्मी, रोग पीडित, दु.ख से जीविका प्राप्त करने

१ ग्रहैर्वा परिकीर्त्तितः ।
२ शकटोवास्तुलग्नस्थैर्विहंग, इति क्व० पु० पाठः ।

वाला, निर्धन, तथा बन्धुहीन होता है ॥ १४ ॥ १५ ॥

भ्रमणेऽतिरुचिर्हृष्टः सुरतप्राप्तजीविकः ।
निकृष्टकलहप्रीतो विहंगे मानवो भवेत् ॥१६॥

विहंग योग में जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष भ्रमण करने में अत्यन्त इच्छा रखने वाला प्रसन्न चित्त- वाला, मैथुन से जीविका पाने वाला, तथा नीचों के कलह में प्रेम करने वाला होता है ।।१६॥

केन्द्रस्थानाद्‌द्वितीयस्थैर्ग्रहैर्जलधिरुच्यते ।
कण्टकेभ्यस्तृतीयस्थैश्चक्रं सर्वैर्ग्रहैःस्मृतम् १७

केन्द्र स्थान १।४।७।१० से दूसरे २।५।८।११ स्थानों में ही सब ग्रह स्थित होवें तो "जलधि" नामक योग कहलाता है, और अगर केन्द्र से तीसरे आपोक्लिम अर्थात् ३।६।९। १२ स्थान में ही स्थित होवे तो चक्र नामक योग कहलाता है ।

बह्वर्थो रत्नसम्पन्नः पुत्री भोगी जनप्रियः ।
स्थिरचित्तश्च जलधौ जायते च नरः सुखी१८

जलधि नामक योग में उत्पन्न हुआ जातक बहुत धनाढ्य तथा रत्नों से सम्पन्न, पुत्रवान्, भोगों का भोगने वाला, लोगों का प्रिय, स्थिर चित्त एवम् सुखी होता है ॥१८॥

प्रणताशेषभूपालैः संसेवितपदाम्बुजः ।
चक्रयोगे समुत्पन्नो महाराजो नरो भवेत् ।१९।

'चक्र' योग में जिसका जन्म हो वह प्रणाम के लिए झुकाये हुए मस्तक वाले समस्त नृपालों द्वारा पूजित चरण होकर महाराज होता है ॥१९॥

धनस्थाने त्रिकोणे च ग्रहैस्सर्वैर्हलं स्मृतम् ।

लग्नत्रिकोणगैः खेटैःशृङ्गाटकमुदाहृतम् ॥२०॥

लग्न से द्वितीय भवन मे तथा त्रिकोण (नवम, पंचम) में समस्त ग्रह स्थित होवे तो "हल योग" और लग्नत्रिकोण में हो तो 'शृ गाटक नामक गोग जानना ॥२०॥

बह्वाशी च दरिद्रश्च कृषिकर्मसमन्वितः।
सोद्वेगो दुखितःप्रेष्यो हलयोगे जनो भवेत् २१

जिसका कि जन्म 'हल' योग मे हो वह मनुष्य बहुत खाने वाला, दरिद्री, खेती का काम करने वाला, सोद्वेग, दुःखी तथा हल्कारे का काम करने वाला होता है ॥२१॥

हास्ये सुखी सुभार्यश्च नृपभीतः कलिप्रियः।
धनाढ्यो युवतिप्रेष्यो योगे शृंगाटके नरः २२

शृ गाटक योग में जिस मनुष्य का जन्म होवे वह हास्य में सुखी रहने वाला, श्रेष्ठ भार्या वाला, राजा से डरपोक, कलह प्रिय, धनाढ्य, स्त्रियो के दौत्य कार्य का करने वाला होता है।

लग्नमारभ्य केन्द्रेभ्यो द्वितीयस्थैश्चतुर्ग्रहैः।
यूपवाणौ शक्तिदण्डौ चत्वारोऽमीस्मृता बुधैः२३

लग्न से लेकर केन्द्रो से पर स्थानो मे चार चार ग्रह अगर होवे तो यूप, वाण, शक्ति और दण्ड नामक चार योग होते हैं, अर्थात् द्वितीय भाव मे चार ग्रह हो तो 'यूप' पाँचवे भवन मे चार ग्रह हों तो वाण' अष्टम में चार हो तो 'शक्ति' द्वादश भवन मे चार हो तो 'दण्ड' योग होता है ॥२३॥

आत्मरक्षारतस्त्यागी सुखसत्यव्रतैर्युतः।
विशिष्टो मन्त्रवादी च यूपयोगे भवेन्नरः॥२४॥

'यूप' योग में जिसकी उत्पत्ति होवे वह आत्मरक्षा में तत्पर, त्यागी, सुख एवम् सत्यव्रत से युक्त विशिष्ट सज्जन एवम् मन्त्रवादी होता है ॥२४॥

शरकर्ता दस्युसेवी मांसादो मृगबन्धनः ।
हिंसकःशिल्पकारी च शरयोगे नरो भवेत् २५

शर योगोत्पन्न जातक बाण चलाने वाला, चोरों का साथी, मांसभक्षक, शिकारी, तथा कारीगरी का जानने वाला होता है ॥२५॥

चिरायुर्युद्धदत्तश्च सुभगो मानवो भवेत् ।
नीचो दुःखी दरिद्रश्च शक्तियोगे भवेन्नरः २६

'शक्ति' योग मे उत्पन्न जातक चिरायु वाला, चतुर, सुन्दर, नीच, कंगाल तथा दुखी होता है ॥२६॥

निःस्वो नष्टसुतस्त्रीको बन्धुबाह्यःसुनिर्घृणः ।
नीचप्रेष्यो दुःखितश्च दण्डयोगे नरो भवेत् २७

दण्ड योगोत्पन्न नर निर्धन, पुत्र और स्त्री से रहित बन्धुओं से वहिष्कृत, घिनिया, नीचजनो की नौकरी करने वाला होता है ।

केन्द्राद्द्वितीयस्थानस्थैः सप्त१ऋत्वगतैर्ग्रहैः ।
अर्धचन्द्रो गदा प्रोक्तः केन्द्रात्पार्श्वद्वयाश्रयैः २८

केन्द्रस्थान (१ । ४ । ७ । १०) से द्वितीय स्थानों मे सप्तम भवन तक ही सब ग्रह स्थित हो जाय तो अर्धचन्द्र, नामक योग

१ 'ऋत्यक.' इति वा प्रकृतिभाव अय । प्रकृतिभावः समासेऽपि भवति । 'न समासे' इति पूर्वसूत्रस्थ निषेधवार्तिकं नात्र सवध्यते इति दिक् ।

होता है। और यदि केन्द्र स्थानों के पास के दोनों बगलो में समस्त ग्रह स्थित हों तो 'गदा' नामक योग हो जाता है ।२८।

बली राजप्रियः कान्तो हेमरत्नैरलंकृतः ।
अर्द्धचन्द्रे चमूनाथः सुभगो जायते जनः ।२९।

'अर्धचन्द्र' नामक योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य बलवान् राजप्रिय, सुन्दर, सुवर्णालिकारो से सुसम्पन्न, सेनानायक, तथा दिव्य भव्य शरीर वाला होता होता है ।।२९।।

शास्त्रे योगे प्रवीणश्च धर्मकार्ये च तत्परः ।
यज्वा धनी सुसम्पन्नो गदायोगोद्भवो नरः ३०

जिसकी कि गदा' नामक योग मे उत्पत्ति हुई हो वह शास्त्र तथा योगाभ्यास मे निपुण, धर्म कार्य मे तत्पर, यज्ञ करने वाला, धनाढय तथा सब बातों मे सम्पन्न होता है ।।३०।।

एकराशिस्थितैर्लग्नाद्ग्रहैर्गोलो युगः क्रमात् ।
शूलकेदारपाशाश्च दामिनी वीणिका तथा ३१

लग्न से लेकर सप्तम भवन तक ही अगर समस्त ग्रह आ पडे तो क्रमश' गोल युग, शूल, केदार, पाश, दामिनी, वीणिका यह सात योग होते है, लग्न में अगर सब ग्रह हो तो गोल १, द्वितीय मे सब ग्रह हो तो युग २, तृतीय मे सब ग्रह हो तो शूल ३ चतुर्थ मे सब ग्रह हो तो केदार ४, पचम मे सब ग्रह होवे तो पाश ५, इसी प्रकार सब जानने चाहिये ।।३१।।

विद्याहीनो धनैर्हीनो मानहीनोऽतिदुखितः ।
गोलयोगे समुत्पन्नो मलिनो जायते नरः ३२

'गोल' योग मे जिसकी उत्पत्ति हुई हो तो वह विद्या धन, एवम् मान से रहित,अत्यन्त दु खी तथा मैला कुचैला रहता है ।

पाखण्ड्यभाग्यो निर्द्रव्यःपितृमातृविवर्जितः ।
युगयोगे समुत्पन्नो मलिनो जायते नरः ॥३३॥

'युग' योग में जिसका जन्म हुआ हो वह पुरुष पाखण्डी अभागा, निर्धन, पिता माता से रहित, तथा मलिन होता है ॥

तीक्ष्णोऽलसो निर्धनश्च हिंस्रःशूरो बहिष्कृतः ।
संग्रामलब्धशब्दश्च शूलयोगे जनो भवेत् ३४

'शूल' योग में जिसका जन्म होवे वह मनुष्य गरम स्वभाव वाला, आलसी, निर्धन, हिंसक, शूरवीर, जाति से छिका हुआ, सग्राम में ललकार लगाने वाला होवे ॥३४॥

कार्ये दक्षः प्रपञ्ची च बहुभाषी च बन्धुभाक् ।
विशीलो बहुभक्षी च पाशे भृत्ययुतो नरः ३५

'पाश' योग मे उत्पन्न जानक कार्य मे चतुर, प्रपञ्ची, बहुत बोलने वाला, बन्धुओ से मेल रखने वाला, विशिष्ट सदाचारी तथा बहुत खाने वाला और भृत्य युक्त होता है ॥३५॥

उपकारी धनी मूढः पशुपुत्रसमृद्धिमान् ।
दामिनीयोगसम्भूतो रत्नैर्भवति पूरितः ॥३६॥

'दामिनी' योग में उत्पन्न मनुष्यजनो का उपकारी, धनी, मूर्ख. पशु तथा पुत्रों से सुसम्पन्न, तथा रत्नो से परिपूर्ण रहताहै ।

नृत्यगीत प्रियो नेता बहुभृत्यो धनी सुखी ।
कार्येषु निपुणो लोके वीणायोगे च जायते ३७

'वीणा' योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य नृत्य तथा गीत का प्यारा, नेता, बहुत से नौकरो वाला, धनी, सुखी तथा लौकिक

कार्यो मे चतुर होता है ।। ३७ ।।

द्विःस्वभावे स्थिरे खेटैश्चरे च सकलैःस्थितैः ।
नलोऽथ मुसलो रज्जुर्योगाःप्रोक्ताःपुरातनैः ३८

जबकि समस्त ग्रह द्वि.स्वभाव राशिस्थित होवें तो 'नल' योग होता है, स्थिर राशिगत हो तो मुसल योग, और अगर चर राशि गत ही समस्त ग्रह हो तो प्राचीन विद्वानो ने 'रज्जु' योग कहा गया है ।। ३८ ।।

न्यूनातिरिक्तदेहश्च निपुणो धनसञ्चयी ।
बन्धुप्रियः सुरूपश्च नलयोगे भवेज्जनः ।।३९।।

नल योग मे उत्पन्न मनुष्य स्थूल शरीर वाला, चतुर, धनको इकट्ठा करने वाला, बन्धुओ का प्यारा, तथा सुरूपवान् होता है

राजमान्यो धनैर्युक्तः ख्यातः पुत्री नृपप्रियः ।
मुशले स्थिरचित्तश्च कर्मोद्युक्तश्च जायते ४०

मुसल योग मे उत्पन्न हुआ जातक राजमान्य, धनी, विख्यात पुत्रवान् राजप्रिय, स्थिर चित्त, तथा कर्म मे उद्योगी रहता है ।।

परदेशे द्रव्यभागी सुरूपो दानतत्परः ।
क्रूरःखलस्वभावश्च रज्जुयोगे जनो भवेत् ४१

'रज्जु' योग मे उत्पन्न जातक परदेश से धन कमाने वाला सुन्दर स्वरूप, दानमे तत्पर, क्रूर तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है ।

केन्द्रस्थानेषु सर्वेषु ग्रहैः सर्वैश्च संस्थितैः ।
मालायोगःसर्वपापैःसर्पयोगः प्रकीर्तितः ।४२।

सब केन्द्रों मे ही अगर समस्त शुभ ग्रह होवे तो 'माला'योग,

और यदि केन्द्रों में पापग्रह ही पा :ग्रह हो तो 'सर्प' योग कहलाता है

वस्त्रवाहन भोगाद्यैर्युक्तः कान्तासुतप्रियः ।
मालायोगे समुत्पन्नःसुखी भवति सर्वदा ।४३।

'माला' योगोत्पन्न जातक वस्त्र सवारी भोग आदि से युक्त स्त्री और पुत्रो का प्यारा, तथा हमेशा सुखी रहता है ॥४३॥

क्रूरो निःस्वो दुःखितश्च परान्ने निरतःसदा ।
दीनश्च विषमो मर्त्यः सर्पयोगे प्रजायते ४४

सर्प योगोद्भव जातक क्रूर, निर्धन, दुखी, सदा परान्न मे तत्पर, दीन तथा क्रूर स्वभाव का होता है ॥४४॥

अथ दशमः परिच्छेदः

अथ वर्षादि—विश्वासाधनम्—

शाकं वन्हिगुणं कृत्वा सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं नेत्रगुणं कृत्वा पञ्च पञ्च नियोजयेत् ॥१॥
लब्धं बन्हिगुणं कृत्वा धान्यादिः सप्तभागतः ।
शून्ये पञ्चैव विज्ञेयास्सर्वमेव निरूपयेत् ॥२॥
वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णो वायुश्च वृद्धयः ।
क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमेवं क्रमेण च ॥ ३ ॥

अब वर्षा आदिको के विश्वा साधनें का प्रकार लिखते है जो कि पण्डितों को परमोपयोगी है शालिवाहन शाक को ३ से गुणा कर ७ का भाग देने से जो शेष बचे उसको २ से गुणा कर उसमें ५ जोड़ देने से वर्षा का विश्वा होता है, लब्ध

को ३ से गुणाकर उसमे ७ का भाग देने पर जो शेष बचे उसे पूर्वोक्त क्रिया करके धान्य का विश्वा निकाले। यदि ७ का भाग देने पर शेष नही बचे तो वहा पर ५ विश्वा ही जानना। इनका क्रम, पहिले वर्षा फिर धान्य, तृण, शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय, विग्रह, इस तरह इनकी गणना है।

उदाहरण-जैसे शाके१८६० इसको तीन से गुणा किया तो ५५८० हुए इसमें ७ का भाग देने से लब्ध ७९७ शेष १, इसको दूना किया तो २, इसमें ५ जोड दिये तो ७ हुये,बस यह वर्षा का विश्वा है। अब लब्ध ७९७ को तीन से गुणा किया तो २३९१ हुए, इसमे ७ का भाग दिया लब्ध ३४१ शेष ४ इसको दूना किया तो ८ हुए इसमे ५ और जोड दिये तो १३ हो गये, बस यह धान्य के विश्वा होगये। अब लब्ध ३४१ को तीन से गुणा कियातो १०२३ हुए,और इसमे७ का भाग दिया तो लब्ध १४६, शेष १ को दूना किया तब२ उसमें ५ और जोड दिये तव७हुए,बस यह तृण का विश्वा होगया। इसी तरह शेष शीत आदिकों के विश्वा जानने चाहिये।

शाकं शक्रगुणं कृत्वा भागो वेदैर्विधीयते।
शेषे मेघान् विजानीयादावर्तादिक्रमेण च ।४।

शाके को १४ से गुणा कर चार का भाग देने पर जो शेष वचे उससे क्रमश आवर्तादि मेघ जानने ॥ ४ ॥

आवर्ते चिन्तिता वृष्टिः समावर्ते सुशोभना।
पुष्करे दुष्करा वृष्टिर्द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥५॥

किसी २ प्राचीनहस्तलिखितपुस्तको मे पाचवें पद्य के अन्तर निम्नलिखितपद्य पाया जाता है किन्तु इसकी अर्थसगति ठीक न वैठने से मूल मे न लिखकर यहाँ दिखाया जाता है।

'दशभि–दिवसैर्मासो–मास चतुष्केण लभ्यते दिवस.।
दिवसद्वयेन घटिका, घटिकायुग्मेन पलमेकम् ॥ इति ॥

आवर्त मेघ में मन चाही वर्षा होती है, समावर्त में शोभन बृष्टि होती है, पुष्करमेघ में वृष्टि दुर्लभ जाननी, तथा द्रोण नामक सवत्सर में खूब होती रहती है ॥ ५ ॥

ध्रुवांका दशधा गुणया भानुना त्रिंशतापि च ।
षष्टिभिश्च हरेद्भागं दशा सूर्यादितो भवेत् ।६।

ध्रुवांक से दशा जानने का प्रकार बताया जाता है कि ध्रुवांक को दश से गुणा कर १२ से गुणे और फिर ३० से गुणा कर ६० का भाग देकर सूर्यादि ग्रहो की दशा जानली जाती है ।

आदित्यात्त्रिगुणो राहुःसूर्यचन्द्रयुतो गुरुः ।
आदित्याद्द्विगुणां भौमे मेलयित्वा शनिर्भवेत् ॥
चन्द्राद्भौमो बुधे ज्ञेयः केतुश्च मंगलो यथा ।
चन्द्रमा द्विगुणः शुक्रो दशाचक्रमुदाहृतम् ।८।

सूर्य से तिगुनी राहु की दशा, सूर्य और चन्द्रमा इन दोनो की दशा मिलाकर बृहस्पति की दशा, सूर्य की दशा को दूना करके उसमें भौम की दशा मिलाने पर शनि की दशा, चन्द्रमा और मगल की दशा मिलाकर बुध की दशा, मगल की दशा समान केतु दशा, चन्द्रमा से दूने वर्ष शुक्र दशा के जानने इस प्रकार यह दशा ज्ञान बताया गया है ॥ ७ ॥ ८ ॥

उदाहरण—

१—सूर्य दशा ६ वर्ष इसको तिगुना किया तो हुआ १८, यह १८ वर्ष हुई राहु दशा की ।
२—सूर्य की ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० इन दोनों को मिलाकर गुरु की दशा १६ वर्ष हुई ।
३—सूर्य दशा वर्ष ६ को दूना १२ करके मङ्गल दशा वर्ष

सात ७ को मिलाया तो १६ वर्ष हुए, यह १६ वर्ष शनि दशा के हुए ।

४—चन्द्र दशा वर्ष १०, मगल दशा वर्ष ७ इन दोनों की दशा १० और ७ को मिलाकर १७ वर्ष बुध की दशा हुई, इसी तरह आगे भी जानना चाहिये ।

अथ परमोच्चफलम्—

पूर्णो धनैः परिजनैः सुतदारकोशै-
श्चण्डप्रतापनिकरैर्विजितारिसंघः ।
कोपाकुलो निजजनैः परिपूर्णमान-
स्तुंगस्थिते दिनकरे भवतीह लोके ॥९॥

सूर्य अगर अपनी उच्च राशि गत हो तो धन भाई बन्धु, पुत्र स्त्री, खजाने से सम्पन्न, प्रचण्ड प्रताप से परिपूर्ण, शत्रुओं को जीतने वाला, क्रोध से व्याकुल, तथा लोक में अपने जनो से मान पाने वाला होता है ॥ ९ ॥

दाता भोक्ता प्रचुरयुवतीनायको विश्ववन्धु-
र्नानाक्रीडापरिणतमतिश्चञ्चलात्मस्वभावः ।
पुत्रैः पौत्रैर्हयगजरथैः पूर्णगेहो विलासी ।
चन्द्रे तुंगे भवति मनुजो लोकमान्यःप्रसन्नः १०

और चन्द्रमा अगर उच्च राशिस्थित होवे तो जातक दानी, भोगो का भोक्ता, वहुत सी युवति स्त्रियों का पति, सब का प्यारा, अनेक प्रकार के खेलो मे बुद्धि को फैलाने वाला, चंचल स्वभाव वाला, बेटा, नाती, घोड़ा, हाथी, रथो से परिपूर्ण घर वाला, विलासी, तथा ससार में मान्य एव प्रसन्न चित्त वाला होता है ।

चण्डप्रतापवशिताखिलभूमिपालः
शस्त्रप्रहारनिपुणो धनधान्यपूर्णः ।
रक्ताधिको रणधरासु पुरः प्रयाता
तुंगस्थिते क्षितिसुते मनुजःप्रतापी ।११।

जिसके उच्च राशिगत यदि मगल आपडे तो वह पुरुष अपने प्रचण्ड प्रताप से सम्पूर्ण राजाओं को वश मे करता रहे, शस्त्रों के प्रहार में चतुर, धन और धान्यों से परिपूर्ण, अधिक रक्त वाला, रणभूमि में आगे चलने वाला तथा प्रतापी होता है ।

अध्यापकः शुभमतिर्नृपतिर्धनाढयो
लोकोत्तरातिविभवो गुणवानुदारः ।
सत्कीर्तिमान् सुतनयो निरुजःसुमित्र-
स्तुंगे बुधे भवति सर्वजनोपकारी ॥१२॥

बुध अगर उच्च राशिगत हो तो वह मनुष्य अध्यापक, शुभ बुद्धि वाला, राजा, धनाढ्य, ससार में सबसे अधिक धनी, उदार, श्रेष्ठ कीर्ति वाला श्रेष्ठ पुत्रों वाला, नीरोग, सन्मित्रों वाला, एवम् सब लोगों का उपकार करने वाला होता है ॥१२॥

भूमण्डलीपतिरुदारमतिश्च दाता
ब्रह्मात्मबोधबिमलो बहुपुत्रपौत्रः ।
तीर्थानुरागहृदयो दृढदेहबन्ध-
स्तुंगे गुरौ नरपतिर्धनवानुदारः ।१३।

उच्चराशिस्थ यदि वृहस्पति होवे तो भूमण्डल का स्वामी, उदार बुद्धि वाला, दाता, ब्रह्म तथा आत्मा के ज्ञान में निर्मल,

मति वाला, बहुत से पुत्र पौत्रो वाला, तीर्थों की यात्रा करने में चित्तको लगाने वाला, मजबूत शरीर वाला, राजा एव धनाढ्य तथा उदार होता है ॥ १३ ॥

देशाधिपो दृढमतिः सुतनुः सुमन्त्री
योद्धा समस्तजनपालनलब्धकीर्तिः ।
चौरादिशासनपरः सुकविः सुबुद्धि-
स्तुंगे कवौ कुलपतिर्मनुजोऽतिहृष्टः १४

उच्चराशि गत यदि शुक्र हो तो वह जातक देश का स्वामी दृढमति वाला श्रेष्ठ शरीर वाला, श्रेष्ठ मन्त्री, योद्धा, समस्तजनों के पालन से कीर्ति प्राप्त करने वाला, चोर आदि दुष्ट जनो का शासन करने वाला, श्रेष्ठ कवि: श्रेष्ठ बुद्धि वाला, वश का स्वामी तथा अत्यन्त प्रसन्न मन वाला होवे ॥१४॥

आसागरं क्षितिपतिर्दृढदेहबन्धो
हिंसारतो रणभुवि प्रथितप्रभावः ।
हस्त्यश्वरत्नमणिभिः परिपूर्णगेहः ।
सूर्यात्मजे भवति तुंगगते मनुष्यः ॥१५॥

नि यदि उच्च राशिगत हो तो समुद्रान्त भूमि का मालिक परिपुष्ट शरीर वाला, बन्धुमान्, हिंसक, रणभूमि प्रसिद्ध प्रतापी हाथी, घोड़ा, रत्न और मणियों से भरे हुए घर वाला होता है ।

भवति धरणिपालो नीचजातिःप्रतापी
हयगजधनयुक्तो ज्ञातिवर्गे विरक्तः ।
कुटिलमतिरनीतिर्भूरिभाण्डारयुक्त-
स्तमसि मिथुनसंस्थे जायते मानवेन्द्रः ।१६।

राहु उच्चराशि मिथुन का हो तो भूमिपालक, नीच जाति प्रतापी, घोड़ा, हाथी तथा धन से परिपूर्ण, जाति वालों से विरक्त, कुटिल बुद्धि, अन्यायी, अनेक भांडारों से युक्त तथा जनसमुदाय का मालिक होता है ।। १६ ।।

अथ परमोच्चम्—

दशांशेऽर्कःशशी त्र्यंशे भौमोऽष्टाविंशके तथा ।
बुधःपंचदशांशे च पंचमांशे बृहस्पतिः ।।१७।।
सप्तविंशांशके शुक्रो विंशत्यंशे शनैश्चरः ।
सैंहिकेयश्च विंशांशे परमोच्चम्प्रकीर्तितम् १८

सूर्य दश अश तक, चन्द्रमा ३ तक, मगल २८ तक बुध १५ तक, गुरु ५ तक, शुक्र २७ तक, और शनि राहु ये दोनों २० अंश तक परमोच्च होते है ।। १७ ।। १८ ।।

ग्रन्थकर्तुः परिचयः—

बुन्देलभूपाधिपलब्धवृत्तिना साम्राढ्यकुम्भावरकाल्लजन्मना
श्रीकाशिनाथेन सुलग्नचन्द्रिकावेदतुं वाणाब्जमितेऽब्दके कृता

टीकाकर्तुर्वंश परिचयः—

भारद्वाजसनाढ्यभूसुरमणिः श्रीयादिरामोऽभव-
त्तत्सूनुर्निरवद्यविद्यविदुषामग्रयश्चिरञ्जीवकः ।
तत्पुत्रस्त्रिगुणायमिश्रपरमानन्दस्सदानन्दिनीं
वाणाङ्काङ्कशशाङ्कविक्रमशकेटीकामकार्षीत्तराम् ।।१।।
श्रीगोवर्द्धनदासश्रीश्रेष्ठिमुद्रणमुद्रिता ।
मिश्राणामियमानन्दं निर्मातु मम निर्मितिः ।।२।।

इति श्रीपरमानन्दशास्त्रित्रिगुणायककृता मिश्रानन्दिनीनाम-भाषाटीकासहिता लग्नचन्द्रिका समाप्ता ।

॥ श्रियैनमः ॥

श्रीगीता (विड़ला) मन्दिराधिष्ठातृ
श्री देवधरशास्त्रिणामादेशादत्र प्रकाश्यते

गुरुवलनिर्णयः

'स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा' इत्यादि—चरणत्रयगतवाक्येन स्वोच्चादि-वर्गोत्तमान्तेषु स्थितस्यैव गुरो रिष्फादिगस्याऽशुभस्य न केवलं शुभत्व प्रतिपाद्यते, अपितु 'स्ववोधकत्वेसति स्वेतरवोधकत्वमुपलक्षणत्वमितिलक्षणलक्षितलक्षणस्योपलणत्वस्य सत्त्वात्—'काकेभ्यो दधि रक्ष्यतामित्यत्र यथा काकपदेन दध्युपघातकानां सर्वेषां कुक्कुरविडालादीनां ग्रहण तथा ऽत्राप्युपर्युक्तन्यायस्य जागरूकत्वात् स्वोच्चादिपदै.स्वोच्चादिनवांशकाना ग्राह्यत्वात् स्वोच्चादिनवांशगतस्याप्यशुभस्य गुरो. शुभत्व वोध्यत एवेति सर्वेषां ज्योतिषसिद्धान्तिनां सिद्धान्तेन सिद्धान्तितत्वान्नात्र विषये कस्याऽपि विद्वद्वर्यस्य काऽपि विप्रतिपत्तिः प्रतीयत इति।

एतच्च सर्वमत्रैव पद्ये मुहूर्तचिन्तामणौ पीयूषधारारव्यव्याख्यायाम्—'उपलक्षणत्वात्स्वोच्चादिनवांशेऽपि वा स्थितः स्यात्तदेष्टफलदाता' इत्यादि विवरणेन विवेचितमिति नाऽविदितं विदितवेदितव्यानां ज्योतिर्विदामिति विस्तरभिया न तत उद्धृत्य प्रतन्यतेऽत्र सर्वम्।

ननु सत्यप्येवं—'नीचारिस्थःशुभोऽप्यसत्' इतिचतुर्थचरणगतवाक्येन नीचारिस्थस्य गुरोः शुभस्याऽप्यशुभत्ववोधनात् पुनः कथं चतुर्थाद्यशुभस्य नीचारिस्थस्य गुरोः शुभत्वं प्रतिपादयितुं शक्यत इति दोषस्य तादवस्थ्यादेतद्वाक्यस्य का गतिरिति चेन्न यन्नीचारिस्थगुरोर्नीचारिनवांशगतस्यैव शुभस्याशुभत्वप्रतिपादनान्नतु नीचारिराशिसर्वांशेषु स्थितस्य गुरोरशुभत्वादिति। अत-एव शुभाशुभप्रकरणे द्वापञ्चाशत्संख्ये पद्ये , ह्यत्काऽभिधायां तट्टीकायाम्—'नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता' इत्यादिप्रमाणकदम्बकैर्नीचांशकगतस्यैवगुरोस्त्याज्यत्वमशुभत्वंच प्रमाणितम्।

एतेन सुस्पष्टीकृतसमस्तविवरणेनाऽयमर्थः स्फुटतया समायात्येव यन्नीचराशिमकरगतस्य गुरोश्चतुर्थाद्यशुभस्याऽपि स्वोच्चादिनवांशकगतत्वान्नाऽशुभत्वम् ।

'सामान्यशास्त्रतो नून विशेषो बलवान् भवेत्, सामान्यवाक्यस्य विशेषवाक्यानुरोधाद् विशेषे पर्यवसान' मिति न्यायद्वयस्य प्रवर्तनान्नीचांशकगतस्त्याज्योयस्मादशेषु नीचतेत्येद्वाक्यव्याख्यातार्थकस्य नीचारिस्थः शुभोऽप्यसदिति' सामान्यवाक्यस्यापेक्षया 'नीचस्थोऽपि गुरुर्यदि स्वोच्चादिनवांशस्थितश्चेत्तर्ह्य शुभोऽपि चतुर्थादिः शुभ एवे' ति विशेषवाक्यस्य प्राबल्यात्तत्रच तस्य पर्यवसानत्वाच्च । बस्तुतस्तु नीचस्थस्याऽपि गुरोर्नीचांशगतत्वाऽभावेन स्वोच्चादिनवांशगतत्वान्नीचारिस्थः शुभोऽप्यसदिति वाक्यस्य प्रवृत्त्यसम्भवादिति दिक् । 'एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थोऽन्यत्राऽपि प्रयुज्यते' इति न्यायात्-शत्रुराशिस्थेऽपिगुरावेवमेव योज्यम् ।

उपरिलिखितशास्त्रप्रमाणितनिर्णय जनता जनार्दन की जानकारी के लिये एव सामान्य विशेष शास्त्रों को ध्यान में न लाने वाले पौरोहित्य कृत्य कराने वाले पंडित वर्ग की उपादेयता के लिये इस सस्करण मे प्रकाशित किया गया है । इस शास्त्रीय निर्णय से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि नीचांशक को छोड़कर उच्चादिनवाँशक मे नीच राशि मकर गत गुरु चौथे आठवें बारहवें तथा पूजा के होते हुए भी सर्वथा वैवाह्य कन्याओं के लिये विवाह मे शुभ माने गये है । इसी प्रकार शत्रु राशि गत गुरु का भी बल समझना चाहिये ।

आचार्य परमानन्द शास्त्री मिश्र त्रिगुणायकः

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें

वृहद् ज्योतिषसार भा० टी०

यह ज्योतिष विद्या की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है भूत, भविष्य और वर्तमान तथा किस ग्रह का किस नक्षत्र पर कब शुभ अशुभ प्रभाव होगा। इस पुस्तक मे भली प्रकार बताया गया है। कीमत ४)

मुहूर्त चिन्तामणि भा० टी०

किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में जैसे गृह प्रवेश यज्ञोपवीत विवाह आदि के अवसर पर बार बार पडितो के पास दौड़ना पडता है यदि यह पुस्तक आपके पास है तो छोटे–मोटे आवश्यकीय काम आप स्वय ही कर सकते है। कीमत ३)

त्रिकाल ज्योतिष

ज्योतिष विद्या की यह अनुपम पुस्तक है भाषा ग्रन्थो मे ज्योतिष का यह अपने ढङ्ग का निराला ग्रन्थ है हमारा ऐसा विश्वास है कि ज्योतिष में ऐसी बहुत कम किताबे छपी है लेखक ने इसमे ज्योतिष के बड़े बड़े ग्रन्थो का सार खींच कर रख दिया है कीमत ६)

वृहद् सामुद्रिक शास्त्र

यह अलभ्य पुस्तक बडे परिश्रम से तैयार की गई है। इसके मनन करने से आप किसी भी स्त्री अथवा पुरुष का हाथ देखकर उसके भूत भविष्य तथा वर्तमान का सारा हाल बता सकते है। हाथ की रेखाओ के चित्र देकर भली भाँति समझाया गया है। कीमत ४)

रमल नवरत्न भा० टी०

रमल शास्त्र के द्वारा भूत, भविष्य वर्तमान, की प्रत्येक बात की जानकारी करने के लिये सर्वोत्तम पुस्तक है। इस पुस्तक का भली प्रकार मनन करने के बाद मनुष्य पक्का ज्योतिषी बन सकता है मू० २)